্ৰশ্বৰ'ৰগ্ৰুমা

## **ळ**८ अगुम्यसम्बद्धसम्बद्धसम्बद्ध



यद्यन्याया अन्यन्यम्भिषाशिः श्रान्या

## न्गरःळग

सर्देव-शुस्राची-ये छ-श्रे-दर-र्ये।	1
रटार्ट्रेन श्री हे शाशु प्रमापिये त्ये तु हो माहे शामा	40
ग्वित् ग्री देव ग्री हे श शु द्या पा प्रते त्ये सु भी शु श प्रा	79
न्मे न्दरन्मे सूर सूर च नह्या प्रदेखे दुः हो निवि मा	136
ग्वित्रःशेयः नह्याः मदेः ये दुः हो खुः म्।	155
स्रमार्केन् नहमारावे त्ये दुः हो नुमारा	191

त्र मृत्याय श्रुत्र स्वत् श्रूत्र स्वत् स

शेर-श्रूद-द्यर-व्रह्य-द्युद्य-वर्शेद-द्ययःग्रीश

## ७७। |र्क्ट्रायानायमान्यात्रायदेः विशेषाया

र्स्न प्रस्त्र स्मार्थ सारा स्

## यर्ने न श्रुया की त्ये तु र हे न र र र

चित्राम् अत्राह्म । श्राह्म । श्राह

यदेर'यर'रवाहानेदायदे'द्रासेर कु'द्रायन्य ग्रुस्त श्रुस र्हेन्य स्था क्षेत्र स्था स्था कुराय हेत्। श्रुस्त स्था स्था स्थ्रेत्। स्थ्य स्था स्थ्रेत्। स्थ्य स्

दे त्या कु ते त्या अध्या प्राप्त कु त्या अध्या के त्या अध्या कि त्या कि त्या

विष्ण्या वि

ने'य'रनःश्चें र'ळ'न'याव्य याथेया । रूट्ट्र श्चें वे'यळंद हेट्'य' द्र द्र स्यानुका प्र'द्र प्र'देया'हेट्ट्र प्रायक्ष प्र'देया'य'र्ये प्रथा प्र'देया'य'र्ये प्रया याद्र देया'ये हेट्ट्र प्र'द्य प्रेय क्षेत्र क्षेत्र हेट्ट्र प्र'देया'य'र्ये प्रया याद्र प्र'दे प्र'द

नेति श्वे राळन् सामावन साधे ने नि श्वे राय स्वि स्व साधे ने स्व साधे ने स्व साधे ने स्व साधे ने साधे

वर्दिन कुण वर्ष श्चा हम्मा श्वा श्वा हिन स्वर्ग श्वा हम्मा हिन स्वर्ग हम्मा ह

यदी त्याम के मान्त में त्यो या मान्न प्रमान प्रमान के माने के माने प्रमान के माने के माने

के मार में श्री र माहि शाया नहे व तथा श्री र पित है स्याप र में शाया निव स्थाप र में स्थाप नहे व र पित स्थाप निव स्थाप से स्थाप

श्चे अकेट्र त्यः श्चे देः श्चें ट्र प्युत्यः ठवः वेशः निर्हेट्र ग्री वः ट्र ट्र प्यायः वः श्चे ट्र र धरः हेंग्रसः प्यसः वेश्यप्येवः वे ।

र्नेत्र प्रेन् क्षेत्र क्षेत्

देन्त्वेद्वन्त् वित्यायभ्रम्भ्यभ्भः भ्रम्भः भ्रम्भः द्वान्तः विवान्त्रः वित्रः वित्यः वित्रः वित्रः वित्रः वित्रः वित्रः वित्रः वित्रः वित्रः वित्रः

याश्चिम्राम् । वित्रमान्ते सर्वे शुक्षासाधिव । यदः श्चिम् वित्रम् वित्

यहायः निरंगुतः हैं नः खेरं ने शंदर्ग हों नः खंदे हों नः अर्दे न्यु स्वारं ने शंदर्ग हों । वित्र निरंगुतः हों नः खंदर्ग हों ने स्वारं हों ने स्वारंग हों हों ने स्वारंग हों ने स्वारंग हों हों ने स्वारंग हों ने स्वारंग हों ने स्वारंग हों ने स्वारंग हों हों ने स्वारंग हों हों ने स्वारंग हों हों स्वारंग हों स्वारंग हों हों स्वारंग हों

यदीराणरा ज्ञान्दान्वस्थान्यः हैं नास्यान्यस्थाः क्षेत्रा । क्षित्राचान्यस्य । ज्ञान्दान्यस्थाः क्षेत्राचान्यस्य । ज्ञान्दान्यस्थाः क्षेत्राचान्यस्थाः क्षेत्राचान्यस्थाः क्षेत्राचान्यस्थाः क्षेत्राचान्यस्थाः क्षेत्राचान्यस्थाः क्षेत्राचान्यस्थाः क्षेत्राचान्यस्थाः क्षेत्राचान्यस्थाः क्षेत्राचान्यस्थाः क्षेत्राचान्यस्य । ज्ञान्यस्य । ज्ञान्यस

रटारेवायापटावर्दरावज्ञशात्वा विशायात्री श्रूटावाविशयात्रा

श्ची अपित्र निर्मा श्वर निर्मा स्थान निर्म स्थान निर्मा स्थान निर्मा स्थान निर्मा स्थान निर्मा स्थान निर्म स्थान निर्मा स्थान निर्मा स्थान निर्मा स्थान निर्मा स्थान निर्म स्थान निर्मा स्थान निर्मा स्थान निर्मा स्थान निर्मा स्थान निर्म स्थान निर्मा स्थान निर्मा स्थान निर्मा स्थान निर्मा स्थान निर्म स्थान निर्मा स्थान निर्मा स्थान निर्मा स्थान निर्मा स्थान निर्म स्थान निर्मा स्थान निर्मा स्थान निर्मा स्थान निर्मा स्थान निर्म स्थान स्थान निर्म स्थान स्था स्थान स्था स्थान स्था स्थान स्

स्वः श्वेरः र्ह्या | देवेः श्वेरः लेकाराका खुंका महिका खेरा के नारा श्वेर के नारा श्व

नेश्वान्ते व्याप्पदान्तेशाव्याव्य स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थ

स्यान्त्र स्थान्त्र विष्ट्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्

देशक् विर्वेश्व प्राप्त क्ष्रियाय क्ष्रिय क्ष्य क्ष्रिय क्ष्रिय क्ष्रिय क्ष्रिय

मञ्जूषायायार्थेषायायात्रेतायात्र्येषायायात्रेत्रत्वहेत्यराज्ञात्रात् वा है ने राम भ्रे निर्म सूर सूर निर्म ति निर्म है न धीव वस्या दे हे जावव दु ह्वर दु विव ग्रार हे ह्वर धेर परि दे हुर प्रमुर नःलेन म्या देख्या हेरादशुराने नाया हे हे स्वान देख्या नेया या यर विशुर है। दे हिद त्य द्रिया श्राया थित प्रवे श्रीर में । श्रें त से त्या श्री वा श्र धरःबूटःवदेःलेशःधःषःदेवःदेःषशः श्लेशःधदेःलेशःधः सर्देवःशुसःदः वशुरार्रे विश्वादर्दे नाया दे प्राप्त के कि वाश्वादा ने निवाद्य विश्वाद्य के विश्वाद्य विश्वाद विश्व नित्रायर वित्रायि ह्या ग्री ह्या पा हित् वित्र हो। ते हित् ह्या वा सेवाया ने के हे सूर वें न स्कूर कुर कुर के ने सूर हरा वार्य के निया निया हेश्यस्थि त्यूरहे ने क्षर्वने न्या सेन्य हे स्थित्ते । विक्षर्व पार ग्राम्याध्यम्बर्भुन्त्, ज्ञानाक्षेत्रे देशे दर्वेन सम्भावक्ष्माने। ने न्वार्के के यानेश्वायाधेन्यायाधेन्त्री। श्रिंशें नाने न्वायन् श्रायाकु धेन प्याने वर्षासराधेर्यायार्थेवायायात्री।वयायात्वरयार्थे।।

र्ने हिन्द्र्य्याया है स्ट्रिस्ट्र्य्या है स्ट्रिस्ट्र्या है स्ट्रिस्ट्र्या है स्ट्रिस्ट्र्या है स्ट्रिस्ट्र्या है स्ट्र्या है स्ट्र्

र्देव में क्षेय में अपने वेद पायदा | निर्हे न मु अपने वेद पायदा । विर्हे न मु अपने वेद मु अपने वेद पायदा । विर्हे न मु अपने वेद पायदा । विर्वे मु अपने वेद पायदा । विर्हे मु अपने वेद मु अपने वेद पायदा । विर्हे मु अपने वेद मु अपने वेद

स्वारित्वे स्वार्थि । श्री स्वार्थि स्

प्रतिः प्रतः से म्रान्यः स्थाने ते । वितः स्वरः प्रते : त्वाः वे : श्रे वा वा स्वरः स्वरः

देवे श्वे राखायहायायवे हिन्यराय स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्य

वस्त्राच्या । विश्वास्त्राध्या । व्याप्त्राध्या । व्याप्

प्रश्नाचे प्रश्निमा स्थान विष्य में के प्रश्निमा स्थान स्था

न्वर्धं म्वत्यं प्रिन्द्वर्धं । प्राप्त स्थित् विक्र प्रिन्द्वर्धं हित्त स्वर्धं क्षेत्र प्रिन्द्वर्धं । दे द्वर्धं प्रिन्द्वर्धं । दे द्वर्धं प्रिन्द्वर्धं । दे द्वर्धं प्रिन्द्वर्धं । दे द्वर्धं । विषय प्राप्त प्रिन्द्वर्धं । विषय प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त

द्वाने शत्वश्वान व्यान व्यान

बिट्याब्रुं विद्याय्य्य अर्गुं प्रत्युं प्रत्याय्य स्वाय्य अर्थः विद्याय्य अर्थः विद्यायः विद्या

तेश्व ते हिन्यम् नु ह्या त्या प्रत्य क्ष्य मान्य क्ष्य क्ष्

ते भ्यात्र त्रे भी श्वात् वित्त त्र क्ष्य ग्यात्र व्याप्त त्र क्ष्य व्याप्त त्र क्ष्य व्याप्त त्र क्ष्य व्याप्त व्यापत व्यापत

त्रे त्र्वास्यक्ष्यःश्री स्वरं त्रे स्वरं त्रियः विषयः विषय

ब्रेश्वास्यक्ष्र्रस्यस्यस्य विद्वान्त्रस्य विद्वान्त्य विद्वान्त्य विद्वान्त्य विद्वान्त्रस्य विद्वान्त्य विद्वान्त्य विद्वान्त्य विद्वान्त्य विद्वान्त्य विद्वान्त्य विद्वान्त्य विद्वान्त्य विद्वान्य विद्वान्त्य विद्वान्त्य विद्वा

म्बद्धाला है ते हिन्द्या के स्थान के स्यान के स्थान के स

याधिवर्ते । विवेश्वेरावेश्व प्रतासेश्व प्रतासेश्व प्रतास्त्र । व्यवस्ति । विविष्ठ । विविष्ति । विषति ।

गयाने ग्राम्यायार्थे ग्रायाये श्राप्त श्राप्त स्वाप्त स्वापत स्व मुः धुवायायदितायायो वर्ते। । ५ वटार्यायविवामुः धुवारे हेर् वे या मुनारा यश्चन्त्रन्त्रिनेवा ग्रुःक्षुन्तुःक्षे देःश्चेवा वीश्वानाद्ववा न ग्रुटा वादाद्वा गयः हे : रेगः प्रदे : इश्राभेगः गेशः प्रदेष दादे : द्वर : रेंग्वद : ग्रीः खुयः प्यरः श्रेगामी रूरमी खुवाधीत विश्वास्थान राष्ट्र सुरुष स्थित स्थान गुरः श्रृंदः सं त्यः श्रें गुश्रः प्राचिदः तुः रेगाः प्रायः श्रें गुश्रः प्रायः प्रायः श्रे गाः गीशः वहें त'सर' त्रव्यं नर' वर्गुर' नवे श्रीर' नर' । व'न्न्' संदेन के ने ने निर्मे ने न स्रभावा बुरानर ग्रानदे कु स्रळ्दा धेदा हे सादा द्वार में जावद ग्री खुरा भेष्ट्रिया ग्राम्परम्बित्राभेष्ट्रम्थापरम्बर्धर्म्या वशुरा ग्राह्म स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य प्राह्म स्थान्य धरादशुरा दे इशाया श्रीवाशाया विवादी । दे भूरावा धरावा त्वाशाया यने न्या वे व्येन्य अप्येव है। या बुवा अप्य अवा अप्य ने न्या व्य स्ट स्ट वी हो ज्ञवा देश या भेंद्र या भेंद्र या दे से दाये हो स्प्रदार से दे हिं से दाये यासीयविकास्याचे विष्या के लाराने रियाची रियास हिराने के ख्रान विया। यारा

श्रेमान्दरनेमान्यन्मानीश्वरेन्द्रमान्द्रितन्यस्थित्वयुस्से । मान्यने ने भ्रात्र ते नार त्याना तुना र हिर प्यें र सारे से ना नी ना तुर हा प्येत हैं। । ने भ्रा नशक्रेन्। शुःषः श्रेन्थायः प्याप्तः दे निष्ठे त्रः देशायः हेर् ग्रीशाह्य प्राप्तः ळॅर्या भीतार्वे । प्रेयिवेदर्णम् स्वास्थार्थस्य स्वास्थार्थर्थे स्वति । इश्यायार्श्वेषाश्यायायादेश्यायासेन्यम्यस्य स्ट्राम्यस्य विष्ठा नेयस्य स्ट्राम्यस्य <u>षदःव्यायःहे। देः सेदः सवेः श्रेक्तः से व्यावायः विस्वायः सेदः या स्वायः से दः या स्वायः से दः या स्वायः से द</u> र्शेग्रायायार्थेन् प्रवेश्चित्रयाये याये वर्षे । नित्रावित्रे म्यायायात्रया वळ्याक्षे। नगरार्थे मावमाग्री सेनाया सेनाया महमाया स्यामा सुरा नर्ने मातुर नाराधीनन्। मातुर नर्श हैंदर माते हैं सूर मातुम् अहेंदर स र्शेम्बरम्बर्भे रानराग्चाके मायाने कु सेरायरायहै कारासेरायरे वे वा श्चेन्द्रभ्यायार्थेन्द्रभ्यायार्थेन्यम् स्थायार्थेन्यम् वहें त'यं शे अर्बेट च दे हैं हैं ले त्रा मलत ही खुया शेम दे रेम यर हा नः न्वात्यश्वात्त्रः स्वेतः स्वात्तः स्वात्तः स्वेतः स्वे

सर्दिन्धुस्य ग्रीस्य विद्या स्थानि स्यानि स्थानि स

श्चित्रः वित्रः प्रदान स्थाः प्रस्ताः स्थाः स्य

यात्राने ने त्थू र न्यत् र्यो सान्त न्या स्थान स्थान

पतिः श्वीतः स्वातं स्व

न्वर्धे प्यर्चन्त्र्र्त्त् प्यर्चन्त्र्र्त्त् प्यर्चन्त्र्र्त्त्र् प्यर्चन्त्र्र्त्त् प्रम्यदेश्वे प्रम्यदेशे प्रम्

देश श्री मा श्री विश्व मा स्वार्थ स्व

स्त्री । दे द्वानी भूरत्य प्यत्त्वर स्त्री व्याप्य स्त्री स्त्री व्याप्य स्त्री स्त्री व्याप्य स्त्री स

यर्वः न्वर्वारेषाः वशुरा हे से नेर व्यवः नवः वशुरा श्रीः न् मश्रामेग्राश्राम्हेगाहिताधेवावादीने भूमावाद्वामा प्रमानिकाने मा रायार्श्वेष्वश्चायदायहेव्यस्य वयायदाय्यू रावदे श्रे राद्यदार्भे व्याष्ठियाः हेर्र्र्यूरहे। वस्र उर्र्यू मिन्न मास्य विकास कर् व्यव मन्त्र मार्थ सार्ट स्वयः यदः स्वयः रेगा सार्व व्यवः सार्थ सार्व स्वा विदः सार्थ क्षेत्रपुरुष्यपेते नेपाञ्च या सेपास्य स्थाय स्थित है। प्राप्त के स्थित য়ৢ৾৾ঢ়য়৽য়৽য়৾ঀয়৽য়৾ঀ৽ঢ়৾৾ঀয়য়৽য়ৢয়৽য়ঢ়য়৽য়ৢঢ়য়৽ঢ়৽য়ৢ৽য়৽য়৽ र्शेग्रामान्याचान्द्रामा है स्ट्रिम् सेद्रा क्षेत्रे मेग्रामान्ये प्रमासामान्ये । यदे न्त्रीत्र शी मात्र भूत्र भीत्र भ इस्रायश्वाचार्त्रायः है। देवाश्वास्र व्यवेषा बुद्य नर्गु नवेष्णुयाया ह नःवह्यायःधेवर्ते । नेःनवेवर्तःनेयायःयःश्यायःयःयःयःयः धेरहे भूरर्न्य वहें रायवे भूवर् प्रवायन प्रवार में वे वा दे ख़्व पर रेगा ग्रु हो यो गी अ शुक्र परि । धुय पुर हो या प्र शुर प्र श्री न या श्री र प्र श्री न या श्री र प्र श्री र या श्री र प्र श्री र या श्री र प्र श्री र या श्र गिरुशःग्रीःगात्रुदःग्रुदःदेःर्वे त्यःश्रेग्राश्चःदवे द्वीत्रशःयःश्रेगःददःदेगःग्रः <u> न्यायी लेखारा सर्वेट प्रदेश के सम्मार्थ प्राया है। विस्तर प्रद्या में लेखारा है।</u> इस्रायराम्यायाने। न्दीनसाग्रीसाग्रसारीरिम्याग्रीनी ज्ञापदेनिसरी गर गी भीर ने नी नी नी नरी ने मारा सामी भी निर्मा नि न-१८-सू-१८-१रो इस्थरा ग्रीया ग्रीट-१ न्या स्था अर्घेट-१ विद यदे श्वाप्तर है प्तर में इसका समें दि सुसास पी दार प्रमुन में प्राप्त । प्राप्त ग्रेग'य'न्त्रिन्रास्टार्से वर्षेन'सर'यट व्युर्नेन न्नट से ग्रेग्नी गडेग'रु'र्ह्चेनशर्'र्'अ'अर्वेद'नर'व्यूर'र्रे । । र्ह्चेनशः इयश'व'छिर्' यर से द : यर : सर्द द स : यदे : द्वी र : या से र : या से या स : यदे : क्वी या स : स स स : द र : कुत्रस्थर्थान्ते । प्रतिन्यान्य स्थित्रायस्य स्थित्रायस्य स्थित्रायस्य स्थित्रायस्य स्थित्रायस्य स्थित्रायस्य ल्रि.सप्त. ब्री.स्याक्षेत्र. या क्षेत्र. या क्ष्याया क्ष्याया क्ष्याया क्ष्याया क्ष्याया क्ष्याया क्ष्याया क्ष धरःवशुरःर्रे।।

दे निविद्य द्वा स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य

स्टानिविद्याः स्वाप्त्राच्याच्यात्राच

मानवः प्याः मानवः देनः सेवायः स्वायः स्वयः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वयः स्वय

र्षेद्रशःशुःचडदःमवेः ध्रेरःर्रे।

श्चायाश्चित्रायायायायाश्चीत्रायम् वहित्रायायम् अर्थेन्दि। । निने न यार्श्वायायदे। प्राया से द्वारा स्वाया द्वारा द्वारा द्वारा स्वया श्री लिक कुर अक्र असर वर्षेत्र है। नियर मु अश्र र में लिक कर पर्ये धरक्षे वशुरक्षे वरे वर्षकार्थे वाषाया धुवावावद व्यारेवाषा श्री हो ज्ञवा पेंद अधीत हे स्टर्स्स मी प्रीनशामी अम्बर्धित है ते के स्व नर्हेर्न्स्वेन नेः भर्त्वे नर्हेर्न्य सेम्बर्म्य स्वे से नर्हेर्ने मर्गे <u> भ्रेर-५, अर-५६, प्रेर-पार्याश्याश्यार्थ, याश्यार्थ, याश्य</u> য়ৢ৽য়ৣ৽ঽ৵৻৴৽য়ৼ৻৽ৼৣ৾৾ঀ৾৽য়ৼ৽য়ৢ৾৴৽৻৻ঢ়ৢঀয়৻য়৾ঀৢয়য়৻য়৾ঀৢয়য়ৢ৽ *ज़ॖॻऻॺॱढ़ॺॱढ़ॾॖऺॱढ़ॱॺॱ*ढ़॓ॱॺॱॺऻॿॕॸॱॸॕॱऻॗॎॸ॓ॸॱॸॖॏॖॸॺॱॻॖऀॱॿॱॸॸॱख़ॺॱॸऀॻऻॺॱ ग्री म'न्न'यर्ने न'वे ने 'हे न'न्नर' में मुना स' से न' सर मया नर 'युगुर'न' धेवर्ते । प्दे वे मुरुष उवर में में अप अप अप अप के प्दे द दें। । क्रें व में अर अर अर रे भूदे अळव हे द ग्रासुस रायस मसे द द रास स धिव हे। देगा स गावत *क्षेत्र*ःयश्वे अःधेवःसश्चेताः चुःयः श्रेत्राश्चः सदे सळ्वः क्षेत्रः ताशुश्चः से प्तारः र्ये मन्द्रामान्त्र श्रीशामा बुदान्य स्वयदाया साधी वार्ते । । देवे श्री सावदे । नावा र्शेग्राशः इस्रायः वः ५५ : वेदः स्रायः ५ वदः से द्वस्रायः ५८ : ५८ वो : धुवः न्नरः होन् प्रमः नाईनि निम्हा । स्मानी खुवावावहुना संदे न्नम् से स्वयाया

धरःवयःवरःवशुरःरेविकःवेरःरे । पायःहेरीयाकःशुःवर्दायकःशुरः इससायसाहित्यरात् होतायाष्ट्रायादे ने नसायरा हे साध्यायरात् वि र्वेशः शुप्तरः वुप्तः हेर् दे। रे रेदेरे रेवेर वस्य अउद्दे। विरे रेवेर ह्या र्यात्रस्थारुद्रान् सेंद्राया विद्यान हेंद्रायम् स्वीते । र्या हुः से म्यादे धरर्मा पुरर्श्वे रावदे हो ज्ञा एकार्मा भी रेग्ना एका सामा प्राप्त का नुदेर्भेर्म्युन्यने न्वर्भे ह्रस्य राग्ने खुवान्य हुर्मे । ह्या ख्र गशुस्र सेंदे रूट नविव र्। । गाउँ गारे दे रे रे रे रे रागट मी सादर्शे । गाय हे श्वर यः अदि विश्वाने नाया श्वाशासान्दान्य नदे ना से न्द्रा में नि नि नि न् स्रदेः स्टान्न बितः वासे 'द्रान्य प्येत स्वरूप स्वीति स्वीत्य क्षेत्र स्वीति स्वीत्य स्वरूप स्वीति स्वीति स्वीति स रेग्रायायी सत्रुत्यया शुराया थी। रता तुः र्से रातरायरें दाया थेता। ग्रायुया र्रे श्रुर्यायश्यावेवा हुःश्रुर्याय वे पेर्याया पेवाहे। यार शास्त्र स्वरा ग्री-देवाश्वाचर्त्र, दशुर्व्याचे स्थित्र हो । श्वाचिवाच हेन् प्रादे । विवास रमायश्वरद्रिशरीं महिमाय है। विर्मेशम्बर्धित विर्मेशम्बर्धित र्राचित्र'र्'वश्रुर'वर्षे श्रुर्रायर वर्षे व

स्रायर्देन् प्रये स्रायं क्षेत्र प्रयो स्वर्धि स्थाय द्वा स्यायं क्षेत्र प्रयो स्थाय क्षेत्र प्रयो क्षेत्र

डेदे भ्रेर ले वा निव भी रूप में प्राप्त के विषय है। ह्यद्रायम् उत्। । श्रुप्य सेवास्य स्टिन्द्र से स्टिन्स नविवागरायार्क्के पहुंगायारे नियरार्विये र्वे वित्ते हो दे हिन्नियर वित्युवा धीव विं । ने प्यट गार्डिया विं व हो। ने या ग्रु या श्रेया श्राय इसशाय प्यट सर्द्धरमायायायीवार्वे। दिवे श्वेरारेगमायायायीवार्वे। दिवे श्वेरारे रेवे र्टूशःस्.जा चिर्शःश्यःसीयोशःतशः विरे.सरः यसयोश । क्रिंयः चीयोशः नदेव'स'र्वि'व'स्रे। देगार्थाग्री'ग्रे'त्रमाम्वेमामी'स्ट'नविव'र्डस'ग्री'कु'यर्थ' वर्ष्य राष्ट्री वर्ष्य राष्ट्री देखे वर्षे स्वाय से सम्बन्धी वर्षे सम्बन्धी स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय शे हिं अ से विश्वास से अ स्वर्ष स्वर्ध र ही। वाश्वास ही र र र विव वाहिवास हे र यशने साधेन हैं। । वायाने परान् सूरानदे सुर सादि न सर होना सदे <u> ५२८:सॅवे:वह्ना:स:सर्देव:सुस:५:वर्दे५:स:५े:क्षु:व:वे:धुव:मडेना:स:धेवा</u> য়ঀড়য়য়ৼয়ৢ৽য়য়য়য়ড়ৼয়ৣৼ৻ৠড়৽য়৽ড়৾৾য়৽ড়৾৾ঢ়৽য়৽ড়৾য়৽য়য়য়৽ नरत्यूरर्से । १८६ मार्याने रहें न्यर नहें न्याय धेतरें। । ननर सेंदे यहनामण्यम्निम्स्यःश्चित्त्वमःश्चित्त्वःश्चित्तःश्चित्तःश्चित्तःश्चित्तःश्चित्तःश्चित्तःश्चित्तःश्चित्तःश्चित्तःश्चित्तःश्चित्तःश्चित्तःश्चित्तःश्चित्तःश्चित्तःश्चित्तःश्चित्तःश्चि

इत्रयर्थे विष्ठ इत्रयेत् १ विष्ठ १ वि

इवर्यानेश्वान्य वे विद्यानियाम के दारी दे विद्यान में विद्यान के व

इव्राचायदी सर्देव शुसायहैं व पये हो ज्ञा में विश्व हा नर यहार हैं। | दे सु वः धरः वरः अः केंद्रः पवे द्वरः सेविः धुवः वहें व व वे द्वरं परः से व्यूरः है। धेर्गी कुस्र श्रास हीं रावि ही रार्ने । सूर धेर ग्री शही रेवा ही रेवा कुस्रक्ष-सुः ह्येद्र-तः दे सेदः दे । इतः मः कुस्रक्षः मदस् इतः मधिवः ददः ग्वित्र अर्वेद व्याप्त । द्वर में दे वह या पार्य अविया श्री द न दे भी र क्षरा शुः सार्श्वेद्रान्त्रम्। इत्राप्तिस्रायाः वेत्रान्त्रान्त्रात्वेत्रान्ते सुन्त्रस्य इस्रायरायह्यायवेर्देवर्ते । देरक्षराष्ट्रस्य स्वायरावयुराने । श्रीरेवरश्चीरेवर यान्वरासेवियद्वापान्दराञ्चन्डेवा हुः क्षेत्रायाधेन ग्रीकाह्मका शुः ह्यें रावा वर्देन्याधेवार्वे विषा गराहे अन् र्नेवायोगायी यान्य रामेश्र नश्चेत्रपदे तुषाय दे नहमायर से तुषार्थे वेशन हैंत्य दे धेर दे दे क्रयमानिक्ति। क्रियामाने प्राप्ति । स्वाप्ति । इत्राप्ति । स्वाप्ति । स्वाप्ति । स्वाप्ति । स्वाप्ति । स्वाप्त हुःवहित्यरानभूवायवे के दादुः भूवा है गार्वि वरा भ्री नामायायायायाया थिवार्वे। ড়ৢয়৾৽ৡয়৽য়য়য়ৢয়৽য়৽ৡ৾৾ঢ়৽য়৽ৡ৽য়ৢ৽য়য়৽ঢ়ৢয়৽য়৽ঢ়য়ঢ়৽য়৽ঢ়য়৽ गैर्भाष्ट्रवार्ष्ठेगारुप्यहेवायराग्चेरात्र्यावेर्भायहेवाख्यारायानम्याने। यारा न्रहें न्राये भी में के ने के ने के ने कि ने के ने इस्राचर्या वायाने द्वाराख्या सरावहें नासरा वायते छेरा छे रेया छे । र्देव या धेन निर्म् इ के वा निर्माया या धेव व वे ने सु व प्यन वान है सून नु वर्रे क्षूर-न्वर-र्रेश्वरण्ड्र-णे । हेश्वर्थिन खेशवहें त्रः सर-हेन हे। हे

देन्य स्ट्रिंग्वर्त्ताव्यक्ष्यः च्यात्रे स्ट्रिंग्वर्त्ताः स्त्रे विद्यत्ताः स्त्रे विद्यत्ताः स्त्रे स्त्

के के लार वर्ते र निर्माण के मिकास निर्माण के मिकास निर्माण र र्श्वेर:बेर:बर:य:वर्हेर:यर:ग्रु:क्षे दे:श्वेदे:श्वय:वर्हेर:य:धेवर्वे:बे:वा दे: यर देवारा या या येव दें। । यें दारा उस दूर स्वदाय दुरा। । सा येव सेव हे यार वी अन्तर्हेत्। भ्रिअन्तः या अवा अन्य श्री र व्येत् या उद्या दर श्रदः या दि । वे स्वान मार्चि व स्री देवे स्री माराया वे से प्रमा स्री माराया स् यः श्रें गुश्रामः व्यें द्रामः व्येवाया स्वर्षेत्रः श्रुमः श्रूमः यादे । द्रमः व्यादः विगाः रु: श्रद्राः प्रस्तुः स्र्री । ध्रुत्या ह्यद्रः प्रसः ठवः ददः है। अदे गार्द्रः याद्दाः प्रसः। वर्द्धराववे हो त्रमा इस्र अवे व्येताया राज्या वि वा हो। वे त्रीमा मी हिं त्रा स्र वर्षान्त्रं सेन्यते स्थित् ग्री मुस्यायम् भी साम् मुस्याया मेस्रा ग्रीसायविता यदे ने राय वर्ष्ट्र हो। देवे हि रादे प्रवादवावा यर व्यद्भार स्वार मः अधिव हैं। वि क्षे धें प्यून क्षानमः वर्देन। । नगरः में अहे अः समः गर्हेनः राखेवा विराधरायदी सूरा वह्या सरा ग्रास्ट्री विराद् दिवर में विरादिया न्यायरामुनायारे के मान्याया थे त्रम्या है। नेया वारे प्राप्ता प्रमा ब्रन्यवम् धरक्षाच्या व्याप्त्रवर्षे स्व कुः सहे स्य प्राप्त ब्रम्य स्व वेत्रा न्यायरामुनान्दायहेयायासे। विमासूनायार्येग्यायावेदायया ग्रम्। । ने मुन रे या ग्राम ने के वा पान मूम नि में नि नि नि

ह्यःश्रेषाश्रामाववःश्रेशःग्राम्यःश्रेष्यः। प्रमःश्रेषः स्वाःश्रेषः स्वाःशेषः स्वाःशेषः स्वाःशेषः स्वाःशेषः स्वाःशेषः स्वाःशेषः स्वः स्वाःशेषः स्वाःशेषः स्वाःशेषः स्वाःशेषः स्वाःशेषः स्वाःशेषः स्वाःशेषः स्वाःशेषः स्वाःशेषः स्वः। स्वाःशेषः स्वाःशेषः स्वःशेषः स्वः। स्वःशेषः स्वःशेषः स्वः। स्वःशेषः स्वः। स्वःशेषः स्वः। स्वःशेषः स्वः। स्वःशेषः स्वः। स्वः।

वश्रूराते। निर्मरावार्षे निर्माययायायायाया अर्कें वार्षे प्रवित्याय विश्वायया विश्वयया विश्वययया विश्वययय विश्वययय विश्वययय विश्वययय विश्वयय विश्वययय विश्वयय विषय विश्वयय विषय विश्वयय विषय विष ग्रु-व-प्रेन्-ग्रुन्-अ-प्रेव-पर्ने-विव-तृ। र्वेद-विवय-प्राप्त-ग्रुव-केन सर्कें दायर हो दारी जावदाय रादी साधिद है। ।दे प्रविद दुर्ग रा पुर सहें रा यायाप्यरावर्हेरायरा वृद्धाले वा वक्ताया वदी वे से ववराया से वावाया यशने सूर नहग्रामा मार्था । भूने निवर में दे खुयाय भेता । दर्भे निदे अन्ते नायर वित्रयाम्याप्य वर्षे नित्र अन्य अर्के ना से नित्र वितर् न्यायान्दार्यातुः अहे यायरा गुः नवे श्वेराधेन्यवे श्वयान्वदार्थे त्या ग्वरायां वे साधिव के । दिवे ही साधित यदे हु त्यरा दे हु साम साधित रैग्रथःयः अधिवः वे । ग्रवः हः रैवः ५८: श्रदः ग्रदः । ग्रा ब्रग्रथः श्रुः नरः ५: क्रेंन्यन्ता । क्रेन्स्वरवहेंन्यर अर्बेट नशन्। । नरन्य केंन्यय गर्वेत्। ।वरे सूर वस्र रहर्त्त्र प्रतर से स देव वे व स्र होत्य व दे रवा वा गरायरे ग्राह्म हा सार्वा वा सार्वा हिता वा सार्वा विकास वा विकास वा विकास वा विकास वा विकास वा विकास वा विकास विरा नगरारेविः कन्यायायायायायायायास्त्रम् । निः स्नरः गिहेशगाराधराधे वशूरावदे श्वेराद्यराधे ते दे वार्शेग्रायाविवादः नर-रु-अ-केर-यन्तर्वेन्यर-वे-अ-अर्वेर-रेन् व्रि-धे-कु-धे-केन्यरा-रु। न्रह्में न्यान्य व्याप्त व्यापत व्याप्त व्याप्त व्यापत व्याप्त व्यापत र्देव गावव प्रच्या सुरा क्षु क्षेत्र क्षेत्र प्रच्या सुरि क्षेत्र में नाया गावव र र यासर्वित्यान्ययार्स्स्रिव्यत्यात्ते स्रिव्यास्य स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्

ते त्यान हे त्याने त्याप्य स्टि त्यान त्याप्य स्टि त्या स्टि त्या स्टि त्या से त्या स

मानविष्णता हैं विद्यान्त्र विष्णे स्क्री में क्षेत्र स्वान्तर स्व

र्रेदि:र्र्ह्रात्यादे रहात्याया नहेत्र त्रात्या निया विकास सेत्र प्राप्त प्रमानित केत्र प्राप्त केत्र प्रमानित केत्र प्राप्त केत्र प्रमानित क र्श्वेर्यनरहे से होराया सर्श्वेरानरानायरायार्थे ग्रामरापर सारायराय रैग्रथःश्री ।देवे:धेराष्ट्रपर्र, ग्रुज्यद्वाष्ट्रपर्र, ग्रेट्याद्वायहेन धराग्चानाद्या हिनाधराग्चेनाधवे द्वाधराहे वाधावि । द्वाध्यया उत् धिन् ग्रीशक्षे न्य त्वेत्राश्चार होन् ग्रीशन्त्र दिते हिंदी साधिव दे। विदे धिरःवेषा रहररहरेगायरः ग्रुप्तदेर्देवा । तसूवः ग्रुः भेवः खुषः द्वारा सेदेः धुया । क्रिंश-र्, संपेर्न-र्, बेद्र-ग्राम्प्रम्यम् सेरे खुयादे नाम् सुद्रास्य धेत्रसदे नित्र केत्र नित्र में त्या सूर नि से तर्वे न सर तु निते खुया धेत्र त्या र्राची सूर प्रदेश के साम से साम देश प्रमा से से संस्था सम हो माने से का यदे रहा मी क नियान विवादी । नि स्वाता यह वा हिन ग्रीया वह नि यह नि यःश्रेष्यश्रायाद्वे प्रसूत्रयम् स्री त्राहे। पर्हेन्यम् ग्रुप्य स्रीष्य श्रायादे श्चितः पुत्रः धेतः स्वः स्वः स्वः स्वः

हे स्ट्रेप्पर हुँ ते स्वापित हुँ या द्वापात है न है न है न है न ले का न न न ले का न न न ले का न ले का न न ले का न ले का न ले का न न ले का न ले

निकास्य प्रवास्य प्राचित्र विकास स्थान स्

प्रवार्त्ता ।

वावारिः तर्ब्रित्रां तर्तुः नात्ते त्यान्य त्याः नात्ते त्याः विद्याः वाव्य त्याः विद्याः विद्

## रटार्ने व की हे श श र र या र य दे खे तु हो या हे श या

हेशन्यग्रह्मान्त्रभाक्षेत्रभाविष्ठभाविष्यभाविष्ठभाविष्ठभाविष्ठभाविष्ठभाविष्ठभाविष्ठभाविष्ठभाविष्ठभाविष्ठभाविष्ठभाविष्ठभाविष्ठभाविष्ठभाविष्ठभाविष्ठभाविष्ठभाविष्ठभाविष्ठभा

गहेशहेर्'यशप्रवश्चरात्रर'वहेर्'य'दे'विवर्'र्'यरे'याथर'गयाहे यिष्ठेशःगाः प्यदः हिंयाः प्रवेश्यळवा हेदा उवा प्येवावा विष्वावा विष्वावा विष् विगार्थेन्छेन्। धुयन्निने में में अद्धन्य सेवने गहिया है। अमें व शुस्तरम् हे साशुर्त्रप्रमायायाष्ट्रियाग्री खुत्यादी चर्तराया हे। देवे हसाया पर त्रे<sup>.</sup>त्रवाचीः क्षें त्रवाकी । स्टाची में में प्याप्त न्न प्याप्त निवास के स्वीत । व्याप्त के स्वीत । धिराहेशाशुर्विमायावित्यावित्रामित्रामित्राम् श्रीति हो वित्रामित्राम् वित्रामि <u> ५भग'भ'५ग'वे 'रूर'गे 'र्रे 'र्र्य वेद'५'ग बुर'नर ग्रु'न' अर'श५५'येद'</u> वै। । पाय हे अर्देव शुअ शु देव त्य म श्रू ५ ५ शे ५ व श्रू ५ पहिल शी श्रे वर्ष हेशाशुर्द्रमण्यम् त्यूमार्से । यायाहे यायम् अर्देवाशुर्या में देवायाहेशा शुः न्यवाः यः वह्वाः यः अर्थेनः स्रे। न्ये नः वः वा त्या श्वायः यथः नेवाः तुः निविवः वे वेता ने भ्रत्वे अर्वे न्यर्ने ने ने प्यायर्वे अया नविव नि हे या शुन्या पा ल्यायायाते साधिवार्ते ।

यार यी भी राजे वा रे प्यश्यावता रे प्यश्यावत वेश ग्राम दी *ॻऻॿॖॻऻॺॱॸ॓ॱढ़ॖॆॸॱॺॸॕढ़ॱॺॖॺॱॼॖऀॱॾॺॱॸॱॸॸॼॺॱढ़ॺॱॻऻॿॖॻऻॺॱॻॖऀॱॾॗऀॱॺॱ* रेगा गुरे श्रुदे हे या शुर्दिया पाणे वार्ते । । अर्देव शुअर्द् गुअपदे रेगा धरा चुरवदे चुर्वा दिरवसूर्व धरा चुरवा साधीर्व धरे खुराळ दासा विश्व खुर र्श्वेर् प्राया विवास र शुराय वे प्येर सामा प्राया के विवास र स्था विव अर्वेदानायार्शेम् शायायायार्थेद्रानायार्शेम् शायिष्वासूद्रानु नेदाये धिरा धेव हो नेर परा अर्घर रेजा शहेर रेज्ञ वश्वर रा । रर जी रेजे न्हें न्याधित्। । अर्थेन्ने । विश्वार्थे। । नेयार्थे । नेयार्थे । नेयार्थे । नेयार्थे । नेयार्थे । नेयार्थे । धेव हो यदे सूर भेग में इस मर लेश मरा सर्वे र नर वशुर नवे देव याधीन ग्री इसायम ने यायया केंत्र में है न्यू यम ने या की विने केंत्र में वे वेशःह्रिप्यरः होदाद्री दिराधरा भेदायशः वेशः हीरः इस्रायावता । नश्रुव र वुः धेर र वे र वा वे श्रा । या र यो र वे र से या यो र स्था पर र ने श र श नेयामार्चियाममानुयार्थी नेयामासून्त् नेत्रामायाधीन् ग्री इसामायादेयार्थी वेशनईन्दै।

रटानी अळट हेट नमून गुः भेना विश्व गुरु प्रश्व हिंग्य पर गुः नवे देव की निर्मा हिन अर्देव शुंश की खुवा धेव विट ही हे श शुं नुममा सवे ध्याकेन्न् अर्देव्यान्य वर्देन्य राज्येव्यान्य वर्देन्ने । वायाके वर्दे स्र हेशन्यम् वस्य उन् हे दे पुरा उत् हें लेश है नहें न स्तर है। हेदे मुर्वेत्र भुःसधित्यवरासर्वेरानवे मुर्वे साधितायवरावेश गुः शु-दर्भग्-धर्मे ।दे-भूद-दु-प्यद-देग्-ग्रु-हे-देग्-ग्रु-अर्थेद-व-इस्रश-ग्री-स धेवर्वे वेश ग्रुप्त वर्षे वाश प्रश्न महिंदि दे वे दे सेव सर्वे द ग्रुष्टे धेव भ्रेम । ह्नुरायार्श्रेम् श्राप्ता हे श्रास्य प्राप्त मार्थ । स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स रेगा ग्राया शॅग्या सदी पॅता प्रता के पारी हित के पारी शिरा सर्वे वा पदी शिरा रमा लट्यं क्रिट्य सेंग्राय राष्ट्र स्टर्य विष्ठित सर् उत्र दें हे सास् द्रम्य मनियाधित ही। यादानी हिराह्या है दार्य सही है दे त्यारेया हात्य सेवासा माम्यया ग्री हेत ह्या हेत् त्या सर्वेत स्या श्री वाषा है। वःश्रवाश्वाद्यः स्टानिवः हेशःशुः द्यवाः यसः ग्रुनः पर्वे ।

दे सूर पर रेग्रायायायी व हो अर्बेर न सुया उव रेग्रायायायाया नरुरान्यस्था धेर्गीर्धेन्तिन्द्रस्थान्यम् धेर्रेर्नेग्न क्रॅग्नायमःग्रुवायायाधेवार्वे। ।ग्रामाग्रीभ्रिमायवेटावाद्वययाययायवेटावदेः मुर्दित्। साम्बूट्रिया सम्मूल्या सम् क्रमार्विवर्वे । दे क्रममार्वे द्रामाधिव मदि द्वी मादि वाद वी प्यव विमाने क्ष्यान् विष्युर्भे । देवे भ्रेराव्यया वर्षा वर्षा हुराहे या शुन्येया मन्त्रे मेया रामा था या वित्र वित्र में मानी स्वार में में मानी स्वार मान ग्रीया । ने यय पावन या प्रमेगया सम् ग्रेना । प्रमेय ग्राम हो ग्राम प्रमे <u>ह्याग्रे भ्रेष्ट्रास्य प्राप्तयात्रयात्रेयाः वित्राप्त</u> म्या ह्या स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य धेर्केश्रामदेक्षिमामी कर्षास्था ह्याम्बद्धायाब्द्राया खेर्पानमामान्या ह्या थॅर्नास्त्रम्यम् होर्नास्य व प्यत्ते हेर्ने होते । देनविव र्नावव क्रस्य ग्री:पर पेतर्ते । दिवे भ्री र ह्यू र त्या श्री ग्राया स्प्रदाय श्राया न स्था द्वी र स्था द्वी र स्था द्वी र स वशुरार्दे गयाने शक्षान्त्र सुना हे वा वर्ते सूराख्र न्तर हे या शुन्य ग यद्याः वीश्वान्नः श्रीः द्रम्युनः धरेः श्रीमः हेशः शुः द्रध्याः यः महः वीः सळ्दः हेदः त्री त्या हिन त्या के त्या त्या के त्

वर्ह्न्-डिश्-वर्ह्न्-प्राणित्ते विकायस्य स्थान्य विकाय स्थान्य स्थान स्थान्य स्थान स्थान स्थान्य स्था

वा ने निर्मास्त्र मार्वि वाया विष्ठ वाया के मार्म मार्च विष्ठ के मार्च मार्च विष्ठ के मार्च के मार्च विष्ठ के मार्च के मार्च विष्ठ के मार्च के मार् यक्षेर्व्याया सेर्व्या वियासया दे सुरायर हे केर्त्या सरा हु नदे रेंद्र ह्रे। बेर्न्सहेर्त्याबेर्म्सहेर्धेर्मीम्वर्मायायायायाया यापारासापीत्रार्ते विसामित्री । न्यूनाममाग्रामित्री मासाम्या यायाधित्रयाद्रस्थेत्रयायायेत्रयाक्षेत्रात्रेत्रते वेशा ग्रुप्यादे प्रवाणी शादी यादा द्धयानाशुरायदे ह्यायाययाह्याया उत्हें वाया से विया यसूत्रायाधीत है। ठे से ने या पर ग्रापा पी दार्दे वे दार्से या पर ग्रापा या पी दा हे गार मी भी रा वरी-मुःलेश्यायदार्चेनायाहेन। यान्हेन्याने हे सूर्वेन छेता लेशा वेरःभ्रम्यश्राभीः नमरः व्यास्थित। । यदितः यात्रम् व्यायाने स्वेयायाने स्वेयायाने स्वयायाने स्वयायाने स्वयायाने यदे न्वर नु जुरु यदे हिर ने प्यर हैं वा य से रूट वी वन्वा हे न य हैं रा वयाहेंग्रयायारा होत्रायारे कुरणेवरही। होत्रायारे प्रविवर्तु रहें यायायायेवर 

द्धयाने से प्रमानिक्षण महिन्न स्वित्त स्वत्त स्वत्त

स्रम्हेश्यास्त्र स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्व स्वाप्त स

यदीःया विक्रिण्यान्त्र क्षेण्यान्त्र क्षेण्यान्त्र क्षेण्यान्त्र क्षेण्यान्त्र विक्राण्यान्त्र क्षेण्यान्त्र कष्ण्यान्त्र कष्ण्यान्त्र कष्ण्यान्त्र कष्णित्र कष्णित्र कष्णित्र कष्णित्र कष्णित्र कष्णित्र कष्णित्र कष्णित्र कष्णित्र कष्णित्य कष्णित्र कष्णित् कष्णित्र कष्णित्र कष्णित्य कष्णित्य कष्णित् कष्णित्य कष्णित्र कष्णित्र कष्णित्य कष्णित्य कष्णित्य कष्णित्य कष्णित्य क

मश्राक्षेत्राहेश्रास्याप्रमात्रा र्देवापारश्राप्तराम्यायाया वर्रेयामाइनम्बर्धिन्दिं विष्ठा देख्याळेषाठनदेखिन्या ।द्यमाद्यर के'धे' द्वेर से पर्देत्। । याय हे से दर प्रदेय परि स द्वेय स्वर्य स्वयं स्वर्य स्वर्य स्वयं स्वर्य स्वयं स्वयं स्वयं स्वर्य स्वयं स् न्भेग्रासाय्यसाहे सासुन्नया सम्। ग्रुन्ताक्ष्यं सो निम्यून संदेशसार्भे ग्रास ने हिन हे अ शुन्नवा प्रमानुके वे अ हिन हिम शे पर्ने न ने म शे पे नियम शे हैंग्रायाय है साधिव हैं। । ग्रायाय वेषायाय प्रायाय स्वार्थ है साबे सावा व्यून्याने व से व्यून्ते व सायने व्यून्य स्थून होन ही से वसान्त प्रते वहोता यायार्सेग्रामार्येदायायायेदार्दे। ।ग्राव्यायदा देपविदानुगायदे सुनु वश्या विशेषायाहेशाशुन्यमायम् श्रान्यम् श्रीन्यवेषाया उत्तीषाया । बेबाबे प्रतिपदीयाया विवाद्यापिये क्षुक्षियायम् प्रयूमकी। परी वारी वेदे वेदि विश्व दे साधिव दे । या दा यो ही साम हो या पा है से प्यर्ट विश्व प्र दि से दि । 新和四美子子

वे नश्रव मरा ग्रामा स्थाप के विष्ट्र के किया में किया में प्राप्त के विष्ट्र के किया में प्राप्त के विष्ट्र के किया में बेननी गरमी भ्रिस्के त्राप्त प्रवासी कार्य माने के निर्मा के निर्म के निर्मा के निर्मा के निर्मा के निर्मा के निर्मा के निर्मा वर्त्वराववे वर्त्रेवाया वसूर्याय राष्ट्राया साधिराष्ट्रा हे सासु प्रवा हिरा होत्रयाते प्रविवर्त्य प्रदेशयायायायाय प्रदेश स्थाप्य विवारे वि श्वरा नः हो हेदे: ध्रेरः ने न हग्रा ग्रीः विद्याया से दारा है। विर्याय सम्बद्धा र्भ्रेन्यर होत्। १रेर सुन दे प्रम्था । के शास्त्र में प्रमास्त्र न धेवा । ग्राम्ये प्रमान्त्र प्राये प्रमान स्थान स्थान स्थान । ग्राया स्थान स्था धरः ग्रुमः दमः धुयः ग्रावदः ५:५५ र । दे । दमदः विगा र मः सर्वे र । धरः ग्राटः दः र्रायाधित्यादेवां के व्याप्तात्री । के प्रायम्भू वायाया के वायाया के वायाया के वायाया के वायाया के वायाया के व वे वग ह न इत पर के व्यार्थे । । गवि वुद के र न है र र न इत पर हे गरकर्त्रभर्षेर्भारेका से व्याप्त के विकास मुद्रभावे हिस्से ।

वःशेष्यः वनसः नः न्दः हैं नः व्यः श्रेषाश्राः नः श्रः व्यन्ति । विः नसः श्रेष्ठो नः ने विश्ववाद्यः श्रेष्ठो सः स्वा

ग्राम्प्रम् राष्ट्रायनेयाम् नेयाम् व्यवस्थितः से स्था *क्षेत्रप्रश*्चेत्रप्रत्रक्षेत्रप्यःश्चेत्रायायात्रे प्रतापीयः ह्यायायेत्रप्यायः श्चेत्रायः यायशार्वेवायाउँ यायवयावेवा वैवायमा हो नामा हो निमान से शासे प्येता यायश्चित्रायदे स्टान्टावर्रेयाया द्यार्षेत्रायस हो नायने विवान् वि षरः से सं पीतः पात्रस्य सं उदाया सामितः विदाया के समितः विदाया विदाया विदाया विदाया विदाया विदाया विदाया विदाय र्वे । धेव ५ व दे ५ ८ दे १ व श्रद श्रेम्या । दे धे हो इया यो दे सम्बर्ध । इस भेवायार्श्वायात्रम्यायहर्वया । श्रिष्ठायार्श्वायारे मे मे मे वाया दे त्यार्थेव हराहेर ग्रेश इसायाधेर पायस वेंगा पार्टा दे हेर ग्रेस सदे इसाया धेवन्यत्यकार्वेवान्यन्ता द्वेन्वस्त्रम् सेन्त्रीकार्देन्यकार्वेवानः ८८। ट्रे.चश्र्रःचदे:व्रे.च्याःचीशःश्रृङ्वःवःश्रःधेवःशःवःश्रॅवाशःशःवशःविताः यसेरेरेक्ष्मिश्यस्ति होत्याधिवर्के । निःश्लासाधिवरवर्के। मायाने सर्वेदाया निवरमान्त्रक्षम्य। अन्यस्तिः अन्तर्मान्द्रम्यः विवर्णानः विवर्णान्द्रम्यायः सर्भी त्यूर रस्य । यदं त्र वस्य उद्दे वाय सर् त्यूर । वाय हे यह <u> न्रोरक्षेक्ष्यन्त्रयासर्वेदायाविवान्येष्ठेश्याः क्षेत्र्याः वह्यायराह्येन्यः </u> वे वसायर हैं गुरुष्य स्थान हो निर्मात से सबद निर्माय साम हिन्य नविवर्त्यो प्रदे प्यर्थे हिंग्राय प्रम्य प्रमुक्ते । गाय हे हे सूर्य अर्थे र न निवर्, दें निया सम् हो दावा वे वायया ना दार हैं ना या से निया से दे हो ज्ञा

नायः हे : हेन नाडेन न बुदः न अः ग्रदः वस्य अः उदः ना बुदः न ध्वेन न हो दि । यदि : श्वेनः ध्वेनः स्वा न स्व न स्व

विष्याधिरारी हिनायाउदाहेयासुवियाववेरिदा हिनायाद्याहनाया उदानी ने निया । साधिदादे या हैया सामित्री । हिया सामा मा दिया सामित्र स्वा मुन् विश्वानुन्वराष्ट्रम्यशाम्येशक्षेष्यशासुन्वरुप्यान्यामे विस्रे वर्त्रेयामाने याराद्यामान्य वर्षेत्रमान वितर्त्या है सामाद्रा पर्वेयामा येता यदे भ्रिम्हिन्य अवस्थी के अन्त्राय अप्यायम् प्रमुम्से लेखा दे दे खें न्या अधीव है। विशेष रामिक अधिक स्वास स उदार्श्वेनशामितामा हितान्तामहेनामामितामी । प्यानमामितामितामितामी यनिवरमधीवा विशेषायमहिषायमविषायस्तिवेदिर्धेन्धीयाग्रह वर्त्रेयामार्थ्याम्रीयाहेवाद्यानहेवायये केंयाशायम् नहेवाया हेत्र उत्र श्री कें अप्तर मुत्र सें दर् प्रशूर न दी माद द प्यर पें द या साथित दी ने निवेद र हिनास हिनास उद र विद्युम निवस साधिद है। निवेद र हिनास <u> ५८:ह्याश्रः उत्रःदशुरः यादे यादः दः धदः धेदः सः स्राधेदः देश । धदः ५ याः सरः</u> वर्डेन्यन हे सूर गरेग न्या वेया न्या वेया निर्मात स्थान विष्य स्थान स्था देवे श्रेर दे दर वर्षे वे अद्धर्य याया धेव वे ।

यदी सुन्ना ह्याश्चाद्दा ह्याश्चा व्यवस्थित स्वी विया विश्व स्वाश्चा स्वाश्च स्वा

धेव प्रदेश हिम्हिना वा का का के दिन हो से कि हो ग्वित : र् दे : रेग्र अ: या अ: ये दा अ: ग्र : र् : त्र : हे र : त्र वे द : र् : त्र दे : श्रु : त्र : या व र्शेग्रायायायाची नर्ते न्या होताया है नाया है नाया है नाया है । या की नाया है । वेशनिर्देनित्री । ने सूरम्यशन्दम्स्याश्चरम्याश्चरम्याश्चरम् न बुद्द न वे खेव के लें न ह नाव राया के के वि । के के प्यद ह नाव राया व ह्याश्चार्यं त्र्युर्यं त्राचे र्वेर्यं त्राच्या श्वार्यं हेर् र्वायं हेर् रह्या स्वार्यं हेर् रह्या त्रा हेर वा ह्यायाग्री। वितासवर वर्दे दासा हो । दे प्यी क वया ह्याया उदापीया । ह्मा हो दार का ने भी हो द्वारा विकासी का स्थान हो । स्थ र्वसाव्याह्मायाह्मायारवाद्याद्याह्मायावे व्याद्याद्याह्माया देशादे त्या नुःठवःहेन्:ग्रेशःनःयन्यः। ह्यनःग्रनःनेशःनःयनःमे ननः होनःयने सःथेवः। श्ची वित्र होत् दे हित्र न व्यत् वी अवीं न्यत्र होत्र मानवित ही । हित्र होत्र वो न र्शे से राजग्रामित से प्रविकाया । यार से रावसे वाया वार्षे साधिता । दे हीराह्मार्था श्री हिमार्था उदाया । विदायानदेव प्यता होता से विद्याया श्रे ह्या साया ह्या हुन हुन बेदा ग्राम्य हिन्य माया दश वे निम्मे होन साने । वशर्यो नरम्बेरम्थिवर्देषि

नेते भ्रेत्रास्यापिते देव त्या ग्रम्था स्वाप्य स्वाप्

यानग्वान्त्राचीं नरामु ना हित्र पुरामु नियान में नियान म यर नहें र्या व्याय हेर के या वहे नाय या वित के या व्या राधियासेत्र ।ह्यापासेटायाद्यियापदेः द्वेत्र । साद्यवापधेः देवादीया र्ह्नेत्र । नुःरुवः हेन् ग्रेयानायमाया । विनायमानुः रुवः सेवायान्त्रेता । समः यानु उत्रामी सामिन प्रति । विष्यानु परित्र मिन् मिन सिन । विष्यानु पर वरःभ्रवशःग्रेःक्षेत्राशःशुःवठदःयःद्याःम् । स्टःग्रेःद्वःग्रेःहेशःशुःद्ययाः मारेशम्य निष्ठ्व हैं। । हैं न्य श्रुवाय व्यावेश के न्य के विद्या निष्ठे निष् अर्वेदः यादे 'देवायाया हेया सुर्वया अर्वेद विया यहें दार्दे। ।दे या सेदाय शेष्युर्वात्र अर्वेदावि । स्टामी इसाय रंग अर्वेदाव । माय हे से द्वा श वर्जुर नवे। । सेर क्रे क्रिय क्रिय ने क्रिय क्रि धिवन्वन्देन्। देवान्डेश्रासीन्द्रन्। डेश्रामुन्नन्देन्त्रमुश्राम्बुवान्यदे। याराया यायाने से दास से प्रमुद्दानिय दिन यात्र दुरास है। वन्ते। यदे सर्वेदाले याहे स्वरान हेंदायरा व्यापार यादायाहें वार्षेत्र वेदा स्वरा विषय वेत्रा हे से प्यट स्वास्त्र ने ते के सम्मान स्वास्त्र ने वर्ष्युर् निष्ठेर देवा पर्वे लेखा वर्षे दाया धेव वर्षे दे त्या के दाव के वर्षे वेशक्षित्रा विदेश्वरस्य से निर्मा से र्धिन्याकेन्ति। सेन्यस्थायमून्याकेन्ति मेन्यस्याने वार्षेत्र न्यान्येत्वी विश्वभावन्त्वे भावान्त्वे स्वान्यान्यात्वे स्वान्यात्वे स्वान्यात्वे

ध्रम्भाश्राश्चित्तान्त्रवित्तः स्वित्राण्यात्त्रव्याः स्वान्याः स्वान्याः स्वान्याः स्वान्याः स्वान्याः स्वान्य स्वान्याः स्वित्त्रवित्तः स्वान्याः स्वायः स्वान्याः स्वान्याः स्वान्याः स्वान्याः स्वायः स्वयः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्

वर्तेषामामान्त्राच्यामामान्यम् स्वाचित्राचित्राच्या देशः सासर्वेटानवे से रान्या सासर्वेटानवे हे सासु नमना माने ना साम हिनाया साम स श्चरानराभे गुर्वे । पहिषानदे भ्रीरामाध्यामाभ्रम । थ्रिमायराग्रीरामाने रैग्रायात्रा । सूरायरी राजेर्पर रें वियाय यथा या सूराया राजेराया वे.लीय.ट्रे.जेश.रा.लट.कॅ.श.टट.कंष.तर.परीय.ता के.ज.परीश.ये.जेश. यर हो न या ने भूर के प्रतिया यह हो र क्षत्र या या धीव के । क्षु प्रें न व न न ने व र् कुना व प्यट नो ना वा की रायदे ही र रहा। कु ना वव सार्के ना वा सारी र ८८.र्बेथ.रा.वु.रुवाश.रा.जा.लुव.वूर्। विवा.र्वेथ.ता.लट.की.येर.रुवा विवा. याः सुन्तुरावेशाः पराणाः ने ने सुन्तुरा हो ना वे सिर्देव सुसा ही सान्दा सुता सर्द्धरमार्यदे नेमारारे प्यरास्त्रमा साम्रात्तु सार्यु राषा रेप्यरायिया यदे भ्रिम्किन्यायाधीत है। या त्रुवायाय स्वर्धन्याय स्वर्धन्या धरादश्रूरावदेरोयायादी वित्यायाधीत है। ।दे सूराव सूना यासू तुर्दे वेशःक्षःत्रवेःक्षरःषरःक्षरःतरःक्षेःत्रवे । वर्तेषःवाववःषशःग्ररःहेवाशःक्षेः वर्चेत्र । क्रिया.स.र्टर.केय.तस्य.वर्चेत्र.सुय। ।यर.क्.क्रिया.स.र्टर.केय.सस्य. ञ्चनाः सार् मा स्वान्यः सा स्वान्यः स्वान्यः स्वान्यः स्वान्यः स्वान्यः स्वान्यः स्वान्यः स्वान्यः स्वान्यः स्व

या ने सूर प्या तत्र्रास्य त्रास्य त्रास्य त्रास्य स्था ने सूर प्रति प्रति त्रास्य त्रास्य त्रास्य त्रास्य त्रा वशक्तः हे शशुः दर्भवा पा से दायर विद्युर व दे । यद सर्वेद व । ये । निवेद ५ मुरुष्य या या से वासाय स्थान से वा प्राप्त से वासाय है सा सु ५ में वा सरायरावगुरार्से । सूराहे सूर्यरावहें दायते हे साद्या हसाराया प्राया प्र वर्तेषामाहिषामामास्याच्यामानिमा विर्वेषामान्यास्यामाहिष्यामान्या वर्गमा विश्वान हिंदार ग्रासे है। ही साया सर्वेदान दे ही में हिंदिया য়৾ঀৗ৵৻য়৾৾ঢ়৻ৼ৾৾য়ড়৻য়৻ঽঽ৾য়ৢ৵৻ৼ৾য়৸৻য়৻য়৻য়য়৻য়৻য়ঽয়৻য়ৢ৾৻ नेशमञ्जे नहेशसुन्येनायम् वयानम् त्यूमर्मे । वर्षेयाया उत्रेति रं अ.मी.स्रे. प्रमायान्यायान्यायाया व्यामी. ज्यायास्रे मान्यायायाया उद्दुःचद्वाक्षेद्रात्रस्थाक्ष्यः उद्दुःश्वर्थाः सुःच्युर्थाः सुःच्युर्याः सुःच्युर्थाः सुःच्युर्थाः सुःच्युर्थाः सुःच्युर्थाः सुःच्युर्थाः सुःच्युर्थाः सुःच्युर्थाः सुःच्युर्थाः सुःच्युर्थाः सुःच्युर्याः स्युर्याः सुःच्युर्यः सुःच्युर्यः सुःच्युर्यः स्युर्यः सुर्यः स्युर्यः स्युर्यः स्युर्य क्षरावार्ष्यायात्रात्रवारात्रात्र्यायात्रात्रात्रेवायायात्रात्रात्रेवायायायात्रात्रेवायाया ध्रेर्या व्याप्त विष्युत्र विषयुत्र विषयुत्य विषयुत्र विषयुत्र विषयुत्र विषयुत्र विषयुत्र विषयुत्र विषयुत्र ध्यायानितानुत्रीया पुर्यूरायायमायह्या यरानहें दायमान्दी।

हेशन्तवाची नेश्वाच्ययय उन् ग्री खन्य विवास मुख्य विवास के स्वास क

ळॅट्र सर प्रश्नुर बिट पावव प्य प्रश्नुर प्रश्नुर पश्चिर प्र स्थित स्थित हैं । बेश सूर प्रहें द बेद हैं।

ह्याया ग्री भेया याळ दाया धेवा यदे खुवा दे । इया यदा द्वी वदर वर्चियःश्रात्रचीत्र विराहेशाश्रात्रवातात्रः वे.क्रांश्रात्रवातात्रः वे <u> थ्रु सर्वे अम्म अस्य अस्य भी निर्वे निर्वादियु निर्वादियु निर्वे स्वाप्त</u> स्वार्थाः त्यायः वित्रः स्वीतः स्वीतः स्वारः स्व यावित्राम्यायासुसार् विद्याराते। त्यायासुसायावहित्रायवे सिरारे तिया यदे देश प्रमान बुदान दे प्यान मेगा शासा सामित है। । हे सान्यमा बससा उद्दर्भाग्रास्त्र्याची ध्रायायायह्या स्री द्रभाग्रास्त्र्याचे देश विभाग्रेद् यदे भ्रिम्भे । दे स्वानुर्दे लेश यदे भ्रेन्य शाय है त्र हे त्य वा सम्बन्ध या से दार से धिरम्बर्धाराम्बर्ध्वार्द्धे स्वाकायायाधिदार्दे। । देखादेखाद्वीर हेकाद्यमा गुर नग्राग्रास धेव दें। वि व्यास इसस व रे वि वे वि वे व्यास तु प्र कु: ५८: वर्त्रेय: य: ५८: ५४ वाडिया: य: वर्त् : वर्षः वर्षः वे अ: ठु: वः रे द्या दे स्वायायया श्रुट पर्टे विया ने स्वाय है या स वर्च अ.चे.चीच.स.सुटी । रुवा अ.स.२४.ची. ई अ.ट्सवा.ट्वावा.सदु. सेच अ.शे. हे अःशु:न्रेंग्।यदेःग्वन्रक्षंग्रअं सेन्नें वियानहें न्रें। विशेषःयं वे द्वा ममिष्ठेशके खूर्यान्द्राचेत् । देष्पराभे न्द्रान्द्रान्द्रान्द्रान्द्रान्द्र क्षुनुर्दे वेशर्भे । ने या रे विन । ध्व प्रदे हें नश्य मानुन या से न । ध्व प्र स्र्यं स्राच्यं स्रे स्राच्यं स्रित्यं स्रित्यं

मे 'दरक्ष्य मदे दु न दी । क दगद विवा प्रमास भी व मम। । दु नदे ममम उदार्गे होदाद्या । से प्याप्त म्यापाय वसार्गे हिमाय हुन। । श्वर प्रदेश दहीयाया क्ष्र-रत्ते। अदेर्देन्द्र-प्राययानायार्थेष्रायानदेरते ज्ञान्स्ययाग्रहार्वेनः धरादशुराहे। वस्रशाउदाशी पद्माहिदाशी शास्त्र साधितासदी से । दे'नविद:र्'षट:र्'नवे'ह्रश्रायाश्चित्राशास्त्रश्रान बुटानवे'नद्गाकेटादे' वयाग्राम् से हिंग्यायम् ने द्रायम् वर्षुम् हे। दे ह्याया से ग्राय दे द्रिया र्रे निर्ध्वारायाधीव रावे याधीव दे। हि सूर सूव राया क्रें व र्षे न या है निवेत्रः नायार्शेष्राश्राम्या देष्यायम् नायम् द्वार्यम् अत्यायम् तःसेरः∃वःवःसँग्रयःपदेःहेःइग्ॱग्रदःह्र<sup>स्</sup>रेृदःवःसँग्रयःपदेःहेुसःर्गेः नरत्यूरर्से । दे क्षर्रेत्यां हेवायावर् नायावर् ना हो त्वर् सर्वेद र्ने । विवाय न प्यार है : श्रेन प्रवे : श्रेन । है : श्रून : श्रेन : यह न प्रवास न है न प्रवास न है क्षे। गर-र्-अर्देव-र्-अ-ग्रुर-धवे-वर्गुर-व-प्यर-ह्वाअ-र्-र-ह्वाअ-उव-र्-नहें नियम् हुर्वे । ने निवेद्यम् अरेद्यम् सुरायाणमा है ज्यान्या है अ यव र्द्धं व ह्या य प्राप्त विया या उव प्राप्त हो प्राप्त विया यो र दें वरायायानते साधेवायरे भ्रम्भा । यदान हिन्या ह्याया भ्री श्री वाववा ह्यायाधेताबेटा । हो ज्ञान्स्यया ग्राटाह्याया उत्राधेता । याव्राही भूराता वस्रभाउन्दर्भ। मिं गुर्ने गुर्ने पुर्ने प्रमान प्रमान में प्रमान के प्रमान प्रम प्रमान प्रम प्रमान प शुःनठन् पर्दा । व्यवःयः हे सः शुःन्येषाः यनः होन् यदे हुः धोवः व दे न्ययाः  याह्रम्थारुवः भीशायिः वुश्वायाः सेन्यायः स्त्रीयः मिन्याविवः न्यायः स्त्रीयाश्वायः स्वायः स्वयः स्वायः स्वायः स्वयः स्

ग्याने वित्र र्त्र राम्या से दे व्यान्य राम्य रा वशुर्विरार्वे भुरार्वे । दे सूर्व से साग्रदात्र प्रवसासे वे हैं नाया से वासा मायाधरानेशानुनाधराभीयनुरारेनिना नेप्श्रम्मनेनिमानस्यानि र्धेग्रथम् विमाम्बरक्षेम्यार्थस्य स्थान्य । देवे स्थितम्बर्धः अन्तरः ह्याश्चाराह्याश्चार्याञ्चरायश्चारी स्वाधी द्वारारासेन्यस्थात्वूरः निर्ने तथ्यार्से । ध्रियन्दर्त्यायार्द्वेयासुरुष् । दिर्ने ध्रियायार्द्वेयाग्रद बेन्द्राक्षेत्रवृद्द्राचित्रकेन् धूर्या श्रुष्य श्रुष्ये सेन्द्रन्य श्रेष् वर्जुर-वर-दक्षेवाश-पवे-धुर-र्से । द्रश्वाय-क्षेत्र-पवे-धुवाश-व्य-प्य-। गद्धनःनिरःगद्धनरुःमद्भग्न्यस्य । हिःश्चेन्त्रःसेन्ग्चेन्सनेः श्रेन्द्र्द्र्या श्रेष्ट्र्य्य विश्वेर्यो । देवे श्रेर्द्र्य श्रेष्ट्र्य श्रेष्ट्र्य विश्वेर क्रुरः थ्रवः यः व्यद्भावः विवर्षे । वर्षः वः व्यदः वो दः व्यदः वो दः व्यदः विवरः यदे कु अ भी व है। अर्दे व शुअ या अ भी व यदे ही मार्से । विशेषा या भी द दि विव ग्रीता कु वि वित्त कुत्र कि त्युत्र । विवेष व सात्रीय साम सम्बर्धन यरम्बर्याययान्य होतायाने स्थापने निर्देश विद्यान स्थापन हिंगाया स्थापन स्यापन स्थापन स्यापन स्थापन स  त्शुम् देवाश्वार्थायायद्र, यावे म्यायाष्ट्रेश्य हो । त्र्यायाय्ये प्राप्त स्थायाय्ये याव्य स्थायाय्ये प्राप्त स्थायाय्ये स्थायय्ये स्थाय्ये स्थाये स्

दॅवान्डिमात्यावर् नामहिषाधेरार्द्र विवासाराहिषायाम् वे सेरावासी वर्जुर-निर्मित्रव्यक्षासर्वेद-निष्पेद्वी विदेर-प्यदावा बुवाका ग्रीकारेवा ग्री नविवा |रेगानुसाग्रदाना तुग्रसाम्राया यहार ने । यहोयाया हिन्यरसेन्यवे द्वेत्र देवाचेवा यावन्तर्ते हिन्य वे हिन्यर वे अधीत्रम्याग्रेगाय्यायव्यायम्यार्म् न्यान्यवित्रः प्रत्रेयायाय्याग्रहः कुःसधिदःसःहेर्-रु:चयःनरःवशुरःनःधिदःदे। ।गरःर्देवःगठेगःयःवरुः नंदी महिशामिं दर्रे विशमहें दारादे था म्वर पर श्रेन श्रेन महिशस लुरी कि.लट.कि.टट.वर्चश्राचे.ज्ञा विर्चश्राचेतु.हूर्याकुर्याकात्वरी.चतु. हैंग्रथार् है अर्वेट न हैन्द्री नियम्ब अ शुराया है या श्री सार्थित यायमानेमानहें न्याक्ष्मानुदें। निवेष्ट्रीमानेमान्यायप्त्रामाने गिहेशहिन्दिं वेशनेशस्य व बुन्य वे ने ग्राया सामित वे विवाय व वे क्यापानिके से यर्व सुयानु सुरापाययाया सुरापरि वे या गुनाने सु नुःषःश्रेम्राश्चर्देःबेश्वारायदेःष्यदःत्रस्रश्चरःदुः गदःवेगःदग्यायःनःदेः ह्वार्याधित्। श्चित्र न्द्र हुर वी श्चित्र न्द्र हुर कर व्यव प्राप्त वि व्यव व्यव स्वार्थ कर व्यव व्यव वि व्यव यायाने ह्या अवि हिंया अप्यार्श्वेत प्राय्ये पाया उत्यापित प्राये श्री मा अर्थेत र्अः शुरुषायाः स्वायायिः हिंग्यायाया गृहतः क्षेत्रायायायी दार्वे विया गर्हेरः ह्वार्था श्री ह्वां त्यां वे ह्वार्था उव प्राय्ये व्यायाया व्ये प्राया व्यवे विष् वयः वरः वशुरः वरा दावेयः प्रवेरे देवः द्रा सर्वे व्यायने विष्वे विष्ये स्थितः र्शे । प्दरे वे हमार हेर र्रे रेमार या सप्तर हैं। । हे वे हि र वे दा हमार यशः वृदः नदेन स्वारिष्टी । द्रामा स्वारिष्टे ने सारा प्यारा स्वारा तुरक्षे त्यूरविरह्ग्रायार्वे द्रायते द्वाया द्यायया यह विद्रुत्यर वयः नरः वशुरः र्रे । देवे धेरः वेशः शुः नः यशः नश्वनः पशः वः द्वाराः यः वेशः यदे ह्याया ग्री ने या या हे दा ग्री ह्याया यया ग्रूट वर्षे वे या धेवा ग्री दे ह्याया वे अप्येव वे । पाय हे कुर ग्रु अवशह पाय शुर में दि रा है। वरे हिर नेवे कुवे हो ज्ञा ल ह्या य छी श्वायर र हुय वयर ने सूर वहें दायर वया र्शे विन्ता ने प्यम् साधित है। याम यी श्रीम प्रमे वस्र साम साधित स्वार स्वार स्वार स्वार स्वार स्वार स्वार स्व न्रहें न्याधित्। विनेत्राचे न्यासे न्यायस्य स्वायस्य स्वायस्य स्वायस्य स्वायस्य स्वायस्य स्वायस्य स्वायस्य स्व ख्नराहेशासुरनमग्नामाने ने नहें नामान्य या ग्रामान होता । ने ख्रासामीन स्वासाम स्वासाम स्वासाम स्वासाम स्वासाम स वर्देरःवद्वाःद्रः श्रदः यः श्रवायः याष्टः वर्हेदः यरः ग्रुः वरः वशुरः रेषि ।

ह्यायाशी नेयाया हे या न्यया मी न्देर्याशी कु ने या धेव हे न्व प्यया नर न् षरःहग्रभःतेः हेंग्रभःमः श्वेंतःतुः पर्वे पाउतः धेतः प्रदेः धेतः वे अःग्रनः यहेतः यने या निर्मे श्री इव या प्रमेषाया उव दि प्रमान । प्रमेषाया उव श्री । हैंग्रयाययात्रे ग्रुवायायाय्येवाते । दे भ्रुद्रात्यायायायायाया । या ग्रुवा यदे ह्वारासाधित दें विरामन्द्रायम् हुर्वे । वाय हे वहेया या विवाहित यशः हेशः द्यापी क्रुरः द्युरः रें वे व दे भूर वे पश्वापि स्वाप न्हें न्यं के न्त्रे व्यक्ष मुख्य के वाक्ष स्ट्रेन्स सके वा वान न्या वस्त्र नर्डेशःशुःकुं हेर्'र्रा वन्नशःतुःहेर्'र्रा क्यायर'वयुर्'नहेर्'ग्रीःश्चेर' वेशनन्ता देनविवन्तर्षेत्रमायाकुः अधिवन्तरे धेरावेशन्तरा से ह्यान दे'द्रवा'क्र्ययाययापाट'यट'रुट'र्य'ठेवा'यत्र्ययातु'य'र्येवाय'र्याश्चेद्र'रा'ठे' अधिवर्ते । हिः क्ष्रराधे श्रेन्ने प्वनिष्वान्य व्यायस्य वरा ग्रुप्य प्रयायस्य वेत्रम्युवासने हेत् कु त्रायव्यय वृते द्रिय से देवे वा वार प्रे स्थर ग्रथयःवरः ब्रेट्यः इं अः क्रुरः वर्देट्यः देवे व्ह्ररः व वि । व अः ग्रथयः ब्रेट्यः भ्रात्युम्। क्रिक्स्यराग्रीः श्रास्थ्रत्यायार्थे वार्यायाराधिताराने वार्याया बेद्रद्भारक्ष्यूराहे। कुल्ययात्राद्यद्भारे ।

ह्याश्राणीः नेश्वारा हुदाबदासादेशासरावश्यूराहे। देवाहे ख्रानावे सा शुअ ग्री श्री रुषायय देया पर्या स्वाप्त व्याप्त विद्या में स्वाप्त स्वाप्त यथा त्रे त्रयामी हैं या या प्रमुद्दे प्रायम् या यह दे दिल्ला स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान व्हर्त्रायर अर्देव शुअराय मुहेमा त्यश्च विश्वास है। देमाश्वास साधिव है। मार उन्देश्यर्देवर्श्ययाधीवरहे। देवर्द्देश्वरायाधीवरपवेर्धेनर्दे। निवेर्धेनर ने हेन हे ज्या हुन हैन प्रमाह है। या विदान प्राप्त है । या विदान प्राप्त है । येद्रमानेयानुमानायार्थेवायाम्हिः सूद्रम्द्रम्याननेव्येष् । वायाहे सर्देवः शुयाची पत्रयान्य या सर्वे शुया वे या में दि पर्वे भूर सर्वे शुयाना याद्यभानु त्यू रामाद्वे रामाद

ध्यानावन या अर्देन शुअ ग्री मा सूर हो राम है से ना साम साधिन है। दे वर्षायदे अद्भाद द्वेयाय उदासदेव सुसाय गृहेगा हेराय द्वायायाद गी क्षेत्र संभित्र विश्व स्ट्रिंट सम् सुदे । याय हे वें म हे द त्य श्री याश सर्वे वे वः अधिवः है। ने हैन वें र उव निर वर्षे वा प्रवेश हो र रें। विं र वे वें र निर्मा <u> ५८.५चेष.स.४२.लूट.सश्राश्ची विस्तिरेट.ल.श्रूयश्चारादे हेश.श्व.५चूट.</u> नवे इत्र भर्दे त से द स्मर विश्व र देश । वाय हे वावत हैं वे वा दे वे स न्रहें नित्री । पाय हे ह्या अप्यहें व स्य स्था स्था व स्था व स्था व हो हे वे वर्त्रेयामारुम् हैन्न् से विदेशमाने से महिषा शुन्नमा सम् सुन्याया व्यूट्रेन्स्य अ.ज.र्ट्रेन्या ज.ज.श्रुच्या अ.च.श्रुट्रेन्य ब्रेट्रेन्य स्था श्रुवा स्था अ.च. र्शेयाश्वासासीन्य से प्रमुद्दान्य हेन्द्र् इत्यास्य होन्द्री। हे स्नून्द्र यहेन्यदे वें र-८८: वें र-७व-वाः श्रीमाश्रासदे विशेषानामित्रमा वश्रीमा स्थानामा सुनामा वी हेशसुर्पन्यापर्देविशप्यकेश्चेत्रेशस्यायात्रे। याद्योधिरवेदा देशस्वेश धरद्वित्र अत्राह्म वित्र प्रत्य वित्र वित्र प्रत्य वित्र प्रत्य वित्र वित्र

त्र्वेयानायहित्यात्रेहेशस्त्रेहेशस्त्रान्धेतायि क्रुप्ताचेत्रेत्रेत्रे विश्वास्य क्रियायात्रे क

वेदुःये सम्मान्यायावे त्यायायायामे द्वी । दे नवेव र् मावव प्यर देया सर्वित् । वाराधराहेशाश्चार्यवासर्वेत्रास्ते कुते त्वेतास्ते ते प्वा क्षेर्-र्रे-वेश-देश-धर-वर्द्ध-वर-हेर्-ध-दे-ख-वर-वी-ळे-ब-द्र-ध-दर-हेश-शुःदर्वे नायार्शेनायायार्हेनायायरा हो नायाने वे के त्रवेतायायायायया थेता कु: ५८: कु: उव वें वे वा ५६५: यर छ: के। वे व क्रेन पर छ: यर छ: यर छ: यर छ यर हो र समाधिव वस्या दिव हो या माया यर हा न पर या माया यर हो र स्थालिव ज्ञारा जाया हे स्था क्ष्रम्य दे पदी क्ष्रम हे या पर्ची स्प्रमाया स्था स्था है। र्रें र्रें र से न्रें न प्राप्त प्राप्त विष्ठ हैं के प्राप्त वे नार्रे ने धेव प्रश्हेश शुप्तों न मन्द्र संयय श्रेंद्र प्रवे नाह्र के नाय केन् ग्रे-कें कें राजा हैन्य राधी ग्रिके

हेश्यः मं ने देशे में हिश्यः श्राः पर्वे ना व्याः में ना

ळव्यायाधेवर्दे । १ १ ५ ५ दे से ५ ५ ५ ५ ४ व्याया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया वर्गुर-र्रे । वार्रें र्वे त्यार्श्ववाश्ची वार्वे वार्श्ववाश्चा । वार्व र इस्र श्ची हे स वर्त्ते हिन् । या स्वासामाना यस व्यवस्था स्था । ने व्यो स्था माना वर्षे वि होत् सेत्। । वार वी हो र व र त्र स्थय ही हे य सु दर्शे न र तें र सें द य र्शेवार्थायश्यार्थे ते दिराञ्चेशातु हैवार्थायर हो दायश्वर दे हिटावार्डवा स्ट्रा ठवःग्रीःदेवःनश्चनशःमशःह। देवेःश्चेरःगर्छः वेःर्धेदःमःहेदःयः वेषाश्चाराः वर्ते निया स्थानि स्थान या । अर्क्षेत्र त्र अपायया हो दार्थ व रहेदा । वर्षेया यायया ग्रादा दे अर्क्षेत्र मुन्। विश्वेषासेन्छिन्न्। प्रदेशाम्बेषाम्बेषायादेषाम्बेषायादे कः वयावःवियाःयशःहयाशः ५८:हयाशः ५४:५:वयुरः ग्रीःयादः वेरः ५८:वेरः ५४: यःश्रें न्यायायावे साधिवाते। यदे सूराह्माया वस्या उद्गार्यं व ग्राबुद्दान्द्राद्द्रित्राच्याद्वयुद्धान्यात्रवे । विद्यात्यार्थेन्यायात्रीः व्यावादानीः क्षें त्राग्यान्याया होत् हेत्या अर्वेट हैं। दिवे हिर वहेवाया वाव्य हेत् यशर्देव नहें दाराधिव दें।

यावन प्याप्त वित्र मित्र के का वित्र प्राप्त के प्राप्

इवार्ग् न्यान्त्रेन्यान्त्रेन्यान्त्रेन्यान्त्रेन्यान्त्रेन्यान्त्रेन्यान्त्रेन्यान्त्रेन्यान्त्रेन्यान्त्रेन्य व्याप्त्रान्त्रयान्त्रेन्यान्त्रेन्यान्त्रेन्यान्त्र्यान्त्रेन्यान्त्रेन्यान्त्रयान्त्रेन्यान्त्यान्त्यान्त्रेन्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्रेन्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्

नेते महिन्द्रमास्य स्त्रीत् स्वास्य स्वास्य स्त्रीत् स्वास्य स्वास्य

श्ची मार्थि मार्थि स्थान्य मिल्या स्थान्य स्यान स्थान्य स्थान

ने अन्त्र । यन् श्रुभामा वर्षेयान नत्त्र न्त्र नश्रुम्य मन्त्र । हि भार्षः न्यमायाम्बेर्याहेन्द्रा । ने क्रिं वर्षे रामने क्रियामा स्था । यहे न्यायादायी विद्रार्श्यायकी विषया है । व्याया है । व्यायादि । व्याय होत्रयंक्षेत्रा होत्र देवे वा देवे या धेव हो। यहे या या व्यव यो दाया या वयःवरःवशुरःवदेःधेरःर्रे । वससःउरःर् लेसःधरःशुःवःदरःलेसःधरः <u> बेद्रायक्षेद्राद्राप्त्रयाचे वास्त्राचेद्रायाधेवावावे ।</u> ध्रैरःर्रे । १२:५म:वे:महिश्रःश्रें:वेश:देश:घर:व बुद:व:दे:५म:देश:घर: ग्राबुद्दान्य क्षेत्र व्यक्षातु क्षेत्र प्रदेशित्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र व्यक्ष प्रदेश क्षेत्र व्यक्ष क्षेत् गहिरार्श्वे अप्रदे के मानी प्रत्य राष्ट्र है विना धेवा नाय है मान्वर पा धर क्रयायाष्ट्रियार्धेन्याने स्थान ने क्रयायाय स्थान में किन्न ने विद्यास्य <u>हे भ्रद्दा स्थाद्दा ध्रदायदे हे या शुद्धाया या दे । यहिया या उदार्दे । वे या</u> न्रहें न्याने व्यवस्थिता स्वाधिता हो। व्रह्मेया स्वाधिता बेद्रमदे भुर्मे । क्रुप्यदे नोग्रवा होद्रम्य विवास सम्पर्दे द्राय वर्चश्राचे से रायर प्यार वर्चेर वर्ष हो राविकार श्राचेश श्री रेसवी रास धीव हीं । पाय हे कु हे द हे या शु द्यापा यर हो द यदे कु धीव यदे हिर हेशःशुःन्यग्रायःहेःनरः नहग्रयात्रयः नहें न्यरः नुदेः लेखा ने व्हरायरः रैग्रायायायीताने। ग्रामी धिराग्याने प्रह्वियाताने। दे ह्यायायीत्। हेरी धिरावेता देत्यश्रावे देव देव ह्याश्रासाधिव हे। बे केंस्य मुद्दे द्वारा के

धेव्यवि: धेर र्रे | दिवे: धेर वदेर हे या शुर्मिया या है। यर या न्याया या यर देग्र मा सा सा से दार्श । कुं त्या त्र व्र सा ते ते सा दो त्र वृह ता के दा सा ह्यायायविकासरार्ट्राचेयासवे हिरार्ट्रा विविकासराय हैरार्ट्राचे दा रेजे अधीव है। देवे के देवे कु अधीव भवे श्वेर में। । वार वी के देर देव है। ख़ॖॱज़ॱख़ॱऄढ़ॱय़ढ़ऀॱढ़ॆॺॱय़ॱढ़ज़ॗॖॖॖड़ॱज़ॱॸॆ॓ढ़ॆॱक़ॆॱॸॆ॓ढ़॓ॱॾॆ॒ॺॱॺॖॖॱॸय़ॹॱय़ॺॱऄढ़ॱ र्द्री विषयः हे स्पर्क्ता स्वर्धः स्वर्धः स्वरं स्व माल्वर प्रमार्थे अप्याधिवा । पे स्थान विभाग स्था से स्थान स्था से बेन्द्रक्षे व्यक्तित्रे ने ने हे अ शुन्यवा यदे कु प्येद की व्यव्या स्ट्रान् वर्त्रेयामन्त्रे साधितर्दे । गायाने क्याममान् र्रेत्याम उत्त्री भूगा साम्मान्य राक्षेरके हे अरु र्यायाया है याव्य र्याप्य के या अर्केर या है अरु र्याया यरकेष्यर्वस्वस्वस्वस्वस्वर्धित्रं वेषा देष्वविद्रं देषेहेस्स्युद्धान्यवायः वस्थारुन्या नुर्देन्द्राचरुशास्यार्द्रन्यरात्वा ।सर्देव्सुसाग्रीया श्चे र्डं अप्त बुर प्यर पदी प्य दें त्र श्चे श्चे श्चे त्र श्चे त्र श्चे त्र श्चे त्र श्चे त्र श्चे त्र श्चे त अन्दरः धूवः भाषिं वः इस्राधरः दुर्धे दः भाष्ट्र । व्यवः । अन्दरः धूवः भाषिं वः इस्राधरः दुर्धे दः भाष्ट्र । व्यवः । यदरः नृश्चित्रः यद्यात्र अश्चित्र । ह्वा अः व्येत्रः यत् व्यात्रे व्यते । यशवयुररम्अदिन्देशेष्ययुर्वेशस्यापरदिन्दिर्धरेर्दे। यदे सूर कु सूर वार वश्व के यह या न के द धे व विर ह्या पर न्धिन्यान्द्राच्यायाधिवाष्यराष्ठ्राचान्द्राचेन्याय्यावे याधिवाने। येन् व्याप्य विद्या क्ष्य क्

म्बित्यान्। माईमासुन् उत्तर्ने स्मित्रे मित्राने स्मित्राने स्वान्य स

दे 'क्ष'व'वे 'क्र्य'यर' क्ष्व'य' क्र्य' क्ष्य' यहें द्र'यर' क्षे अ'तु वे 'क्र्य' यु वे 'क्ष्य' यु 'क्ष्य' यु 'क्ष्य' यु 'क्ष्य' यु 'क्ष्य' यु वे 'क्ष्य' यु वे 'क्ष्य' यु 'क्

हेशासु प्रमापाप प्राम्हेशासु प्रमुद्धार प्रमुद्धार प्रमुद्धार । यात्री त्यी माना माना हें नाम स्थान न्यमात्यः श्रेम्यायायन्। । नगमायायाने नविवाने त्याना । विनेत्रास्यामी वर्देन्'मःहे अःशुःन्ममा'मःवःश्रेम् अःमःश्रुनः वन् ग्रुनः नश्चन्यामः स्रोनः दे । वर्रेषामान्वम्यान्रह्मामदेश्वेरम्या ।वर्षेराद्धाः वर्षेत्रम्ये हिःसन् यदे पर्दे द राष्ट्र के वा प्यक्ष के विकास में विकास के व नगमासररेगासर होरी दिन ही में नगिरेश गास दममासर ने हें र धराश्चे र्रेव में इस्र अवे समय पिष्ठ । दिसाम दर समय पिष्ठ । अरेशर्स्ति |देखान्यारअवयन्तिनाः हुरेशहे। हेशद्यन्यान्यदः रूपव गडेग', हु: देश'य' उद: श्री: में 'न' दे 'न से र द र ने 'दर्कें न' य' खश क्रें न' न र हे द खा र्शियायायाये देव त्यहिव या सुरत्र हो। दे ते तर्से दायवे ह्याया हेद त्याया विदः र् कुर्यर हेर्यं धेर हे अ शुर्यायाय यश्चर प्रायाय अ वि

स्वीत्राम् स्वार्ण स्

## ग्वित में देव में हे या शुर्मिया सदे खे हु से ग्वाश्यामा

क्ष्र-खूट-व-द्या-ग्राट-पेटिश-शु-श्र-श-चर्टिद-ध-हे। दे-द्या-श्रुव-धर-द्रश्रासंदेर्ट्स्ट्रिंस्स्इ्रिस्स्क्षेर्ग्वे । यह नहर तर्द्रिन्त स्त्रुंस्क्रिंस् वर्देशके स्टर्मे नश्रूव नर्देश लाहें श्रावशाम् श्राह्म शाम् स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्व र्वे। । ने प्यम् अयानिया । अर्देन शुअर्देन नम् हे अन्यवानमा । प्यम क्रेशः ज्ञानाशः प्रशः महोत् । नारः श्रुनः प्रमः वर्षे दः प्रवेशः श्रीः चितः धर-र्-तुश्रासदे के शाउद-रे-तान्सून धर-तु-वदे के शाद्र दिन्ताया वदे सर्दिरशुस्तरमा हेस्राशुर्द्यवारम्बर्मा खराद्रमा व्यवस्थान क्रिंशःवाववःग्रीश्राःशःवश्रवःवर्षे । देःश्रूरःवःवश्रुवःयरःग्रुःवःविवःशःर्षेःवः बेन्यम्यक्ष्र्यस्थिवार्वे । निष्यस्थिवार्विनेष्यम्भूम्यक्षे निम्यः श्चायक्षत्र, से दुरारे । वियायाह्यामें । क्ष्यायावयायर ग्रायदे देवा श्चरायर भे हो दार्दे विश्वाया भू तु द्वाराय उदाया उदार द्वाराय या दार । ग्रान्या मुन्ये द्या थे व भे राहे या शुन्यग्राम वे खेंद्र या या थे व विद श्चरः ग्राम्यायः प्राप्तायः प्रवित्ते वित्र श्चे रामाने वित्र वित् ल्यान्यत्रिस्ट्रेन्स् विश्वान्यात्रास्त्रास्त्री नेप्त्वाचीश्वानेस्त्रिः स्त्राची स् नर्यानिक्षेर्रिक्षान्य स्वापानिक्ष्या

र्श्विम् अप्यति अप्ते । विष्य अप्याप्त । विषय । वि

ने भ्रान्त के नाहे अगादि स्टानी हैं के निर्मान के स्वान के स्वान

नश्चन गुःषेव नः क्ष्रव नश्चन गुदे के या गुः यश्वन वेय वे श्व र पु यो यहन ह्रे। भे ह्या परितर्शे किंश समुद्र परि दिसारी उद श्री दिये से दिस र्भे । क्रिंश उत्र नश्चन जुदे ह्माश र्ने द सेन । क्रिंश उत् नश्चन जुः धे द स क्ष्रवर्वे अने नुवर्णणेवर्षेवर्षे अन्तर्भवर्षे अन्तर्भवर्षे वर्षे वर्षे वर्षे धर भे नुर्देश । वाय हे वाहेश गा धेव व वे भ्रुव धर वाहेश गर्देश । वर्दे थ नश्चनः ग्रुःनश्चद्रः पः न्यः नडदः नः हेनः ने अः ने यः परः न शुनः नरः देवाः हुः र्श्वेरःग्रदा देःवश्चः देरःवश्चरा गेरःदःर्रश्चात्रव्या डेगा में अप्रमान पर्देन से प्रमुम्। । गाय हे न सून ग्रुन स्रम् परि हेन हें लेश देशन बुद में दर् शुर्व दर्व शुव चेद दर्व प्रदेश हमा शर्थ श्रिमा शर्थ वयद्याचेत्राचेत्रचे स्वीदानु देयाच बुदा गुरुषाया व्यया देवा यो दि हो। नश्चनः ग्रुनः मेहेतः यः नयः नवदः नः हेनः ने सः ने सः न वुनः देगः हुः श्चे नः न वेः ह्याश्राभी द्रोत्रान्दे द्राप्ते देव द्राप्त स्वाप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्र प्राप्त प्र प्र प्राप्त प्र प्र प्र प्र प्र प धेर-५मानरवन्य-रेग्याय-५८मी ।

दे निवेद नश्चन निर्मित्र स्वाप्त स्वा

द्युर्रात्रास्यस्य न्युं त्ये स्थान्य न्युं न्य

वस्र अरु दिन्न स्वर्धि र विश्वास्य विश्वस्य अरु स्था धेत स्था से द धिर वेश र्देव र्वे । नि स्व व रे के श्री स श्व र परे र मेश र श्व र श्व र श यशमान्त्रःक्षेम् अस्ति स्वरंत्रः स्वरंत्रः स्वरंत्रः स्वरंति । ह्रमः हेरः यह यः श्री अः यदि रः नश्चनः ह। । अप्पेता हे नर पह्यानशहे पर्दर श्चाया वस्य उदा हे या हा नश्रात्रस्था स्वत्रात्रा स्वत्रात्र के त्र हिना सार्था नहीं नि स्वत्र सार्था न स्वत्र सार्था न स्वत्र सार्था न गुन'रा क्षेत्रस्य उद्'ग्री विद्या शुः क्षु प्यट वर्ष या देश ही र रस्य द्रा नरदानदे सुवारा निवा धोदा सदे सुन में विवार है । वावा है । वसरा स्वा ठेरायायात्रस्यारुट्यो सुर्यासुन्दान्यरुर्यासे नहें दाने दे दे सुरान्यस्य उर्-ग्री-विरमासु-सु-पर-पर्मायि-द्वीर-वसमाउर-साधिव-माहेर-दे-सेर-र्ने । हे सूर से द दो वार वी के त्दी हिंग्य वार्र वा धेव प्रदे हिर बस्य उर् अप्पेत्र मर्दे ले त्र दे भूत ते माल्य या पर हिं मारा महिमा पेतर महिन र्ने । वस्र रुद् संधित स्र रेने । दे स्र त ते वस्र रुद् संधित संसे वर्देन्यरविष्ट्रर्से । के क्षेत्रे क्षाव ज्यानकवानवे क्षेत्रं दिव्यूरा है। । श्रेन्याय हेन् ग्रेश ह्याय हेन् यस्य यदि श्रेम वे स्थाय प्रिय क्षेत्रक्षेत्रान्तरादशुरानाने साधेनामदे भ्रेत्रान्नात्रार्धितामराने हेत्रायाधेना ययाते किया थे य श्वरायते प्रयोध के प्राया हित्तु क्षा विष्ट्रे क्षा विष्ट्रे क्षा <u> ५८:ज्ञयः नः वस्र अरु ५: इस्त्रेनः वस्र अरु ५ स्थान्य वस्त्र वित्र । देः यदः ५ स</u> नरुवानवे देव श्री श्रीम्यामिर मार्थिन स्वीत स्वीत स्वीत स्वीत द्वीत स्वीत स्वी ह्या क्षे के ह्या प्रदे ही र वे र प्रायविव हैं। । श्वावे र प्राया या या प्रदे रें व हिर स्वर्यान्त्रयान्त्र्यान्त्रयान्त्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्यान्त्रयान्त्यत्यान्त्रयान्त्यत्यान्त्यत्यान्त्यत्यान्त्यत्यान्त्यत्यान्त्यत्यान्त्यत्त्यान्त्यत्यान्त्यत्यान्त्यत्यान्त्यत्यान

क्षेत्रण्यः श्रुन्द्रित् श्रुव्या विष्ट्रम्य स्वाप्त्र स्वाप्त्र

ईन्। प्रस्ति स्त्रीय स्त्रीय

प्रतिर्म्वाह्म स्थान्य स्थान स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य

गिरेशाग्वसामादायदास्त्रदायायाचे केंसान् सूरायाने दिने रात्रान् निक्तिने के किया वात्राय्य राष्ट्रे व्याप्त विक्रा नःयःश्रेष्रभागःत्रस्रस्यः उत्रिंद्रान्दिः भ्रेत्रः निष्ठाः नित्रः मित्रः स्रितः हित्रः स्रितः हित्रः स्रितः हि नःभुःतुर्दे। विदेष्यवदःसुम्बर्गाःस्त्रेन्द्रा । स्रेष्ट्रेन्ष्रस्य उदःसुनः वर्चेत्र-त्वरा विदेश्वर-हेगा-वेंश्वर्शनिक्षणार-स्वानुः ग्रुवः वर्चेत्रस्यसम्बन्धस्य । वाराविवामहिकागायार्म्स् स्वास्ति स्विवाका ग्रे के रायाधेव पावे प्राये रावायी गा बुर ग्रु है ए हु गु है पे वे खुव वर्चेत्रसर्वे । श्रुवःसदे द्रोत्रत्वेत्रः क्रुवः क्रे त्रचीः चे त्रवाः वी श्रः श्रः द्रदः स्वेत्रः नु न भू नुर्दे । ग्विव ने परे भू र भू न प्राया थि । शुव पर्ने व रापार स धेव'राया'देर'ग्राट'मेथ'ह्रग्या'रा'रासुन्। ।ग्रावव सीयासुर'प्राट सुर्या वःवर्देन । वायः हे : ध्रेवायः ग्रे : केंद्रः हेन्द्रः वश्चवयः वः ने : श्ववः वेदः विदः કે 'શ્રે' શુંવાયા શે 'કેં યાયા બે વાયા છે વાય કે र्ने॥

र्श्वाश्वाश्चित्रः के श्वाश्वाश्चित्रः के त्राधित्रः के श्वाश्चित्रः के श्वाश

रेग्र राया अप्येत है। दे त्या से दे प्यें दा सामें ग्र राया से सामे विकास के त्या से स्व वेशनिर्दिन्यर होन्दि। । गाय हे ने र नुन्य न्य विषय न वश्च न हार वेन्द्रनेन्यानरद्यत्रेन्द्रम्भः मुज्यान्य विवास्त्रम्भः स्तु द्युरः देश हेशासु: न्यम् प्यरः ग्रु: नः नु: नः यः से सर्वेदः न्यरः यदः देवा सः यः यो नः ने। हेशा शुः न्यवा या से न्या प्रस्थाय स्वयुस्य विष्टि से स्वि । ने विष्टि से स्वि । यर्दे विश्वानित्र भे ज्ञान्य स्था द्विनाशान्य ज्ञू राय राज्य है। दे प्यर के शास्त्र राज्य १९८७ वर्षे । वर्षे रःधेव प्रवादा प्रवादा के प्रवाद के प्रवाद के विकास के कार्य के विकास के कार्य के कार्य के व क्रॅंश ठव ग्री इस धर प्रविषा पर ग्रीत पर दे साधिव दें। । ते स्ट्रिस व रे विषा केंश उत् मी केंश उत् नश्चन पर मुन्य पर साधित में। किंश उत् मी केंश उद्गत्रभून पर गु.न । या वे अ विश्व के विश्व विश् श्रेश्वान्त्रः श्रुवान्यरः होत् 'दें' ब्रेश्वेरः दें। विश्वेरः देवाश्वान्यः ध्येवः हे। वर्रे यहें लेश ने हें द रावे ही र स्र र निव हों। । याय हे रे लेग रेग्र शरा हिन्धिवाही न्यावस्थारुन्यासे सासर्वेन्यदे सुरार्ने । सार्सेन्यासी नश्चनः ग्रुः १८ । भेदः भेदे । ग्रेनः ग्रुनः ग्रुनः ग्रुः भेदः पदे । श्रुरः भः धुँग्रथः नह्रम्यार्थः भेर्द्रस्थे न्द्रभेष्ट्रा । द्रयः नडवः नवेः धुँग्रयः माडेगः मी गान्तः क्षिम्यायाधीवाते। येदे ग्रेज्ञान्यस्मन ग्रुप्ते प्रति श्रेप्ता स्थित स्य क्षेत्रायाधीत्रायवे स्वीर र्रेतिष्ठा येवे त्रेत्र त्रात्रम् त्रात्र स्वीत्र त्रिया त्रात्र त्रेत्र त्रेत्र त्र शः श्रेंग्राशः ग्रेः वित्रायरः ग्रुशः पदेः तुः नवेः नश्चनः ग्रुतः वित्रास्तरः ग्रुति देरःशः ध्रिन्यशः ग्रेः हो : ह्याः वः केतेः हो स्टाः अतेः हो : ह्याः व्यादः नी यः वर्टे श्रुट वर्र छेट्। यह द्यार्टे श्रुट से श्रुट है श्र

नेवे श्रेम कें भागविव हे न न भून प्रमा श्री । वेवे श्रीम वे व नेशाह्यन्तरम्, वुःनवे केशाउव नश्चन वुरःनश्चव पाःश्वे। यानः वी खेराने क्षु'धेद'रा'देवे:धेद्रा गहद'क्षेग्रर्गे:ग्रें केंश्राद्दान्यसूत्राप्य गुनवे:केंश्र बेद्राव के त्युद्र नर निष्ठु न प्राचित्र के प्राचित्र के का के दिया का प्राचित्र के कि कि कि कि कि कि कि कि कि नशुःनदेः ध्रेरः ध्रुरुः या न्यानउदः ह्वारुः ग्रेः न्वार्योशः वादा । यो दर्देनः यः यात्रयानार्हेम। १२ दे यो दा दे या ने या नु यो हो। १२ यो क्षेप्त या क्षेप्त या क्षेप्त या क्षेप्त या क्षेप्त या न्येरव्यक्षाह्यायायाधेवाहे। यथाह्यायरावयानरव्युरावदेधिर रमा ह्या. हर्ना हर्ने यो या स्वया यर विद्यूर यदे भी रही । भी या यो स्वर ने प्यत्यान्त्र के वार्ष के द्वारा वान्त्र के वार्ष वश्च वा वित्र हे राष्ट्री वाद्या । बेर्'ल'बेर्'मर्म्स्इर्'मर्ग्य ।रेर्'वे'ख्'मदे'स्रवर्'ह्र क्षेप्तरोर्ज्ञाक्षेप्त्रमाक्षे व्यानाक्षेप्त्रमानवेष्ट्रीर वियानवया ह्याक्षेप्र चुरासदे भुरत्वेराचुराय कृत्वे । वर्ते वार्स्य मुग्रा केरा केर द्वेर वेर वेर वार् याधिवाशी निषेत्रायळन्त्रिन्न्याधिन्यायाधिवास्यावी ह्यायावी हे वरःश्वरःयशःदर्ग्। वर्षरःश्वेष्यशःशेःक्ष्यःवःशःवयःयश्वरःव्यःवश्वरः यरःश्वःश्वे। देःश्वःशःषदा श्वःश्वर्थःश्वेषःयवयःयःश्वरःयःयश्वरःदेः वेषःयःवविदःह्ये। विदेरःश्वेष्ययःश्वेःक्ष्यःवयःयःश्वरःयःयशःवश्वरः

त्री | द्रिः न्या वर्षे न्या वर्

हर्त्रस्थर्था । इर्थाह्र्यास्थर्भराम् वर्षान्यः वर्षान्यः धेर-रें वेशनु नरे हे क्षर नशय हे दें रश्य पाये व वरे दे नशय हे दिन्यामायाधीताते। यानायी भ्रीमा वयावसूम भ्रीयाया स्वयावता स्वीमा। पिशः ह्यार्थः र्श्वेदः दुः श्वेदः यथा ।देः चिवेदः ह्याशः दूरः द्याः च ठदः धी । भ्रुविन्यहेन् श्वाद्यीवन्त्रं लेखाया । त्रिन्यार्थे में प्येन्या हैन् ग्रीका यानवः क्षेत्रायार्थेव निवास्यया ग्री हे या शुरवर्षे निस्त्र स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वय स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वयं स्वर्य स्वर्य स्वयं स्वयं स्वर्य स्वयं स्वर्य स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स क्षेत्रमात्रव्यक्षम् अःश्रुम् इत्र्री विदेशंष्यम् स्त्रम् स्त्रम् मात्रम् नवे र्श्वे न य र्शेन्य रायवे व्यवसाय स्री ने प्येन हम सी है सार्थ वर्शेन है न निवेत्र-त्र्व्यात्र्याः वित्याः श्रुत्याः वित्याः वित्याः वित्याः वित्याः वित्याः वित्याः वित्याः वित्याः वित्य देशमंदी । प्रश्रासेन्येन प्यट वेट्र सं हुँ द्वा च सं प्येन मं ने प्येन प्रन सं थेव'रादे'हीर'इ'रादे'गानव'क्षेग्रायायायायात्रेन्'थेव'र्वे । इयायार इया हेर्र्र्य्यरायमाधेवावेरारे सेर्पावमात्वरमाये खेवाहवाइसमा ग्रम्स्राहित्र्र्विम्हो ध्रम्याधित्राम्राहर्ते विश्वाध्रम्याम्या धेव है। व्यव परि वर् नाम हैना परि ही र र स्था वस्य उर् र र सिर परि धेरःर्रे । डे.रे.र्वा.करःइशःहेर्र्व.वयःवरःवक्रुरःर्रे । इशःहेर्क्यः वृत्रायवस्थावत्रायाम् स्थाकेन्द्रात्रात्रात्रात्रात्रात्रे। इसासाधिताया <u>षदःह्रुगनिवर्दःह्रुगर्षेदःसरःदशुरःर्रे विश्वाद्यानवदानदे र्स्नुवःषेतः</u> है। इसइसायापीदायाहेटाग्रीयानययानदेग्वीरार्से । हेग्स्रेप्पटापेदा 

देशमंद्रिन्दुम्र्रेन्वा देश्चन्द्र्या नु प्रशुर रे विश्वापदि प्राप्त विद्याप्त विद्याप्त विद्या हे<u>ि र ग्र</u>ी मान्द के नाश यश पेंद रुद या श्रे नाश रा नावद इसश या पर वया नर दशुर रें लेश वया दशुर शुना शर्के वा में । शुना शरी रहें र यान्त्रः क्षेयाश्राः श्रायान्त्रः क्षेयाश्राः श्रूरः त्रारः त्युरः ने। ने प्रयाः इसः धरः में नित्रं ते समुद्रमुँ वार्याया पें दासे दाम माने राष्ट्री या सम्माने राष्ट्री वार्या सम्माने वार्या वार्य ने पार्षित् पाश्चन पाने निश्चन पर शुन्न दे के अभी श्वे अभी नाम पान्य सन्तर्भवे द्वित्रायासङ्ग्यापाये देव न्यस्य उत् द्वित्राया वेया हु न से दे यद्भन्न चुते के अभी वित्र देशे देशे चित्र वित्र क्रेंत्रयर होत्। । समुत्र संदे सिंग्य त्य पेंत्र हेया की । पाय हे पदि सुरा समुद्राभुग्राबेश्वासामुग्रायशाहे। ग्रायाहे मन्द्रासे दाराहे हित्या समुद्रामुनाकालेकानाईन्द्रादे प्रदे प्राप्यम् समुद्रापि मुन्यायादे लेका गु निक्षेत्राधितार्वे। । यायाने ने स्क्ष्रमायने त्यान् हो नासान हें ना का निमार्थिता र् कुवार्सेन वुस्रायासेवासायाधेन्यासेह्वायाहेन्दे वसूना वुस्रा धेव हो नेवे भेरा वर्ने खवर मन्दर हे रासी वर्ने ना नेवे भेरास मुक यदे द्वित्रामा व्यापेट्र हेमामा देवामा ना प्रेत्र हे । वित्र से समुद्र प्रदे द्वित्र मा गराधेवानेवाक्यायान्वरात्यूरायांकेतावे व्याप्तायां वर्षेता वस्रभासाधिवायावेशाचेईदायाचिवादी।

र्षेत्रमान्यामान्यस्यायेत्रमाधेवर्ते विश्वान्तर्ते वित्रमायाधिवरि ने या ने विवा । ने वालव नि विश्वाय ने । । श्रे अ श्व सुव श्विवाय स्थय गहिरायाण्या ।ह्यारासेरायराही त्यायायासे। ।ह्यायरान्ध्रा वशुराधेवा । वायाने प्यरासश्चरायि श्वीवारायार्शेवारायशायाव्याने। श्रे अश्रुव पदे श्रिवाश पेंद पर्देश व वा प्रव श्रेवाश से द पद्म प्रदेश । वर्रे सूर्यार सञ्ज्ञायि द्विष्य राया धेर्यं स्वेर स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वय स्वय स्वर्य स्वयं स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वयं श्रे म्वा याया श्रेवाश्रायायश्याववर पुर्या वस्याया श्रेवाश्रायायायाया ल्रिन्यः धेवः व्याव्यः विष्युवः प्रदेः स्त्रिष्य अपन्यः व्याव्यः यः स्रे अस्त्र स्रे स्रे विष्य धेवर्सेन्ग्रीर्याग्रह्नेर्याग्रह्ने त्यासेन्य हेन् इसायर न्युन्य राज्यून गुर्नो नर ग्रेन्दी । ने सूर र प्यर यह से से से हैं न पें न हैं ले र स्रा ग्रन रेगा से ५ : सर से वे : इॅं न : एका में निर हो ५ : दें । इं : हे : हे ने मा साधि द : सा स म्द्रियासाधितासासेदासायाध्यदासाधितार्ते। ।सम्बद्धम्यासायासेदासेदा महित्। । सळवहित्याहिनाहिनाधिवार्सेनाग्रम्। । दिवान्यायायह्यायि रेग्या ।ग्रारक्रेक्ष्ररस्र मुक्राये स्ग्रिय्य स्था से द्वाराया । बेन्यकेन्दिन्देविषासम्बन्धित्रेष्यायासेन्यस्थित्यादे समुद्रापदे र्धेग्रयायार्थेन्याक्षे नेयाह्न क्षेय्रयायायेन्ययान्य स्था हैन है। ख़ॣॸॱऄॱढ़ज़ॱय़ॱढ़ऀॸॖॱॻॖऀॱढ़ज़ॺॱऄढ़ॱय़ॱॸऻढ़ॏढ़ॱॸॖॱॸॸज़ॱऄॸॱय़ॱॺॱऄॕज़ॺॱय़ॱ यापराश्चरानरानुदे।

वर्दे सूररे निर्मा से द्राया से म्याया से द्राया से द्रा

रायान्त्रम्यास्त्रम्यास्त्रम्यास्त्रम्यास्त्रम् र् प्रमुर् न भेतर् दें ले वा इश्या है र हैं भेतर भर हमा य पर निमा से र रायार्सेग्रासाम्स्रसायातुसारायार्सेग्रासायविदानु हे सेंसानु वर्गुराना वे अप्येव वे । शुःष्य हे अप्वे त्रुव से से व । शुः वस्य उद वे कें अपीः कुःसधिदाने। नुसामन्ते नुसामन्ते नुसामन्त्रे न धिदायानुसामासाधिदामायाधानः सर्वेद्रानाधीत्र वे । इसामा हिन् से ह्या माया स्वासाया स्वासाया स्वासाया स्वासाया स्वासाया स्वासाया स्वासाया स सर्वेद्राचाने साधीत है। वस्र उद्दु माहत के मार्थ है द्राप्त है न थ्व'रावे'धेर'इस'रार'नडर्'रा'यश'गानव'क्षेगश'पीव'र्वे। धिंगश'ग्री' क्रॅशने हेन इस या मुख्य नु न् हो से सबुद यदे हैं मुराय पेंन या न् बेन्यन्यस्य विकासिकात्राम्य विकान्य विकान्य विकान्य विकासिकार्य रे ला पर मा शुरु मा शुरु नु ने निर स शुरु मा रे । से मार स शुरु मा ळॅर्नरने हेर से सबुद रावे सेंग्राय र्जें र राय्या सेर राय्या केंद्र बेन्यहिशाग्रन्ते। ।नेप्तविवन्त्यस्त्रस्ति स्वाराया बेन्यन्यहिशा गायाधरान्त्रे नाने हिन्दी । यार यो के प्दी क्षूर से ह्या स हिन्दस स्वापद यःश्रेष्यश्चित्रेष्यश्चित्रभाष्यः वित्राचित्रः स्वेष्येत्रः स्वेष्टे स्वेष्टे स्वेष्टे मुंग्रायायायेत्रपाहेत्रचे याते प्रायमेयायम् हे सूर्या हेता देवे धर्मार्भेनिने सेन्सिनेनि । श्रिम्या श्री के यान्ता में निमानी निमेरा

नर्हेर्देशमानिवर्त्त्रभूवर्यमानुः भेष्ठ न्त्रास्त्रेष्यम्भेषान्त्राखा रेस्रायानविदान्नेसाद्यान्नेरामीयाम्चेदासन्तर्मासन्तरम् विवायामीया र्वे । प्रसेट या देशे अधुद से पार्थ यो पार्थ अधी से पार्थ प्रति साम निवन निवन के न गुः धेतः प्रदेः भ्री स्वाः क्षेत्र या प्रदेः भ्री स्वाः प्रदेः भ्री स्वाः प्रदेः भ्री स्वाः प्रदेः भ्री स्वाः नःयशः हुदः नर्दे । हुशः सदेः हुदः हुना सदे । हुना श्वेः अद्वन हुः धेवः सदेः धेरर्से ।हग्रेहेर्यानायमा हुरानदेष्टिर्से । भ्रेह्यापदेष्टिरहेयाना यश हुर नर्दे । हैं यान यश हुर नदे हुर से ह्वा पर्दे । ह्वा से रेवा यर ग्रुप्त अप्येत प्रदेश केर रें विश्व ग्रुप्त इस्र अरे। देप्या ये प्रदेश क्षेत्रायासुः नरुद्रायादी वालया ग्राग्न्या द्वारा । ग्रियाद्वराया । ग्रियाद्वराया । त्रः केषायश्चा । अप्ति । केष्ट्रवा केषा क्षेत्र । विष्ट्रवा । विष र्शेनारायद्री । ने स्ट्रूर्न् हो न इसरा ना हत कि नारा न्याया न निष्य देशमा हेन्द्र महेन्य महा हे ने स्वार सह्य हिंग्राय विद्या हैया । विगास मुद्र पिते मुँग राया पेर्प पारे निश्च ना मुना मुना मुना पारा से ना ना से ना पारा से ना ना से ना पारा से ना ना पारा से ना से ना पारा से ना पारा से ना पारा से ना पारा से ना से न यदः समुद्र-पदे मुँग्राया से दादे। गहिरा न सुन मुन मुन से दाया से दार हिद वे निर्मे निर्मा श्रम्भ मार्थे ।

याहेश्वःस्ति। सद्युवःस्तेः र्ह्येन्यश्यः सेन्यः स्त्रे। व्युवःस्ते र्ह्यायः याव्यः स्त्रे व्युवःस्ते र्ह्यायः याव्यः स्त्रे स्त्रे स्त्रः स्त्रे स्त्रः स्त

ख्या'स'इस'स'ख्'र्से'ते'याहत्रकेंयास'सम्रा त्याय'न'हेट्'र्'स' देशन्त्रः है। वे र्क्ष्यामी कुर्ति वेशन्यते व रक्षेत्रामी । यात्रव क्षेत्राया स्वाया यायदी द्या वस्त्र उद्यापदा वहूर यर यद्देर यद यद्या विवा हेता। रेग्र रहराह्य यथ नेया सर्ग्य हिंदि वय मुन्दि है या मिष्ट्र या स्वी । या र षरः म्राम्या विवा वेया भेया भी विषेत्र वारा स्वाया प्राम्य सुव स्य प्रिंत भी दे वेशन्त्रानायार्श्वेषाश्रामाने निह्नेन्यमायर्नेनायाः हेते हिमावेषा नन्त्रात्याचे र्कें अधिम् । नाया हे नाम धिमायायायाय क्रव हिना नहिया हु। नर्हेन्यन्वात्वराम्बर्गान्यस्य विवासम्बे सर्वेन्य हिन्ते निर्मे स्वार्थः गुरुष्य हेन्द्र अहत् गुर्मा यहत् गुर्माय हमाय हेन्द्र हे के के या व नःधेवर्त्वे वे वा ने निविवर्षे कें अरह्मा अरहेन खर्या विषेता हरे अरमर सर्वेद्रासाधिता । द्रमेर् त्र श्रुप्य सेमामी म्बुद्र ग्रुस्य धेव प्राद्र सर्वेद शुराराकित्र्त्वायश्रभुदि ह्रागुर्साधेदाय। यश्रागुर्साधेदार्दे विश देश्याधिवार्ते । देशिश्चित्रावर्दे द्रायत्रावर्दे द्रायाचिवा छे दार्दे द्रायाचिवा छे द्रायाचिवा छे त्रायाचिवा छे त्रायाच छे त्रायाचिवा छे त्रायच छे त्रायाच छे त्रायाच छे त्रायाच छे त्रायाचिवा छे त्रायाचिवा छे त्रायाचिवा छे त्रायच छे

यदे र में कें या मी अर्बन हे द है ने वा प्याय न से यह या नः ठतः वे । ने विगामिडेमान्य वे ने कें असी अक्व हैन सेन संवस्थाने कें स मी अळव हे ८ ५८ व्यव रायाय वर्ष रायाय वर्ष रायाय के वा हे ५ त्ये व हिं । ने<sup>ॱ</sup>१४'त'ते'सेग'गे'ग्र्डर'तुःस'भेत'स'हेन'न्द'सर्देत'सुस'स'भेत'स'हेन' <u> न्यान्नाक्रम्यदेःयान्रम्क्रियाश्राण्येः अळ्मान्नेन्ये मुन्यहेन्याः सूराधिनः</u> वियायान्त्रः क्षेत्रायाः ग्रीः सक्ष्यः हिन् न् नेयायाः ग्री दिन नेयायाः नियायान्त्रः वियायान्त्रः वियायान्त्र धेरसे ह्यायें । हैं यायायया हुरायदे धेरसे ह्यायें वियाहाय सुत्रुत् याययाहे सूरादेयायर क्रें विता र्यायेय प्यायायाता विवाह नरः धरः महिनाः यः बहुना । विदेरः वे : तुः स्राधेवः धरः देवः महिनः हो तुः स्रवेः यर वर्दे द स से इस स द रे वदे वा दे वि से उमा महिमा स धिद हैं वि स न्रहें न्यान्न विवर्ते । वायाने वानान्य प्रमान्य प्रमाने वा विवर्ण विवर्

गुरामाने प्रमानम् निमानम् । स्वाप्तस्य प्रमानम् । स्वाप्तस्य प्रमानम् । भेर-र्रे विश्वानु प्राप्ति । दे व्याद्यायान भे विद्यायान स्वाप्यान स्वाप्यान स्वाप्यान स्वाप्यान स्वाप्यान स्व क्ष्यान् प्रयानमात्र्यूमार्भे लेखा ने ने प्यान प्राया प्यान ने प्राया क्षेत्र के ने प्यान में प्राया क्षेत्र के ने प्राया क्षेत्र के निष्या के प्राया क्षेत्र के निष्या के प्राया के प्राय के प्राया के गुरर्देवर्र्भा होर्प्य होर्प्य स्थर्मिय विवासिय विवासिय विवासिय विवासिय विवासिय विवासिय विवासिय विवासिय विवासिय हुः धरः देवार्यः र्वे विषयः हे वारः दुः पदे स्ट्रूरः वर्ष्ट्रवार्यः व्याप्त्रः व्याप्त्रः वर्त्रा के अर्थे वर्त्र स्था के स्था के स्था के बार के वा कि का विकास के विकास के विकास के विकास के विकास के व गल्व भित्र है। वे कें अप्र प्रामृत्य या से न सामित्र ही मार्च का ग्राम सुर्वे वेता ने या पर सव र इं व र र नहेव र या वे के या विका मार्थ विषय स्वरं गविव 'हे न महिव 'के मार्थ मार्थ मार्थ है न 'थे व 'वें। । न सूर्य व 'वे 'गहिव' क्षेत्रायाः ग्रीः यक्षवः हेनः न्याया हेयः गाः सूनः याया व रहेयः या सेनः र्ने । वाय हे इस मन्वि में बे केंस ही वाहत केंवाय सु दशुर न दे वाहे य गायाधिन्यवे स्रीराधिव व्या विवास ह्वा सर्वा निवास हिन्दी स्रीत विवास बुवर्सेट संभीवर्यते धुरर्से । वाट बुवर्सेट संभीवर्यते वर्स्नुवर्यर गुर नदे के अन्दर् के पार्श्व अने अन्तर् प्रदे प्रदेश में निस्त्र अन्तर् प्रदेश प्रदेश ध्रेर्रे या बे र्कें अ भी जाहत केंग्राय है। दे प्राय्य स्वाय देश प्राय्य स्वाय र्रा । नारः अवदः गाँउ ना त्यशः ग्राटः अः वे ना सः हो। व्रुवः वे रः नुः क्रायः सः सः नडर्'यदे'ग्राह्रव्रक्षेग्रार्थाने वे दे 'द्राक्षेद्र' खर्दे 'बेर्था ग्रहेर्था ग्राह्र्य वयावान्यस्य ने कें अपी पान्त कें या या है न ने । या न वि म या है या या ने क यारेश्वाराक्षेत्राप्तव क्षेत्रायारे जावव यथा वेत्रा पर्दे वेशाया वर्दे । हिन्यारा

म् । विष्यक्षेत्रास्त्री । विष्यक्षेत्रास्त्राचिक्षः विष्यक्षः विषयक्षः विष्यक्षः विष

वर्दे । यद दे हिंद देश पा दे हे श शु कें वा न में इस श ही सदे त शुरा न्द्रभ्वास्ते भ्रिक्ते । त्रेते त्रस्य निविद्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य बुव सेंद सेव पाद्या । श्रु दि त्वायाय सेव पहुवा परे । कें राह्य स्थरा वस्रश्चर्न्, देन्या विः व्यानभ्रेत्रायदेन्द्रवासः इस्रसः धेता विवासः ग्रीः क्रिंश-८८-१२वरमार या नियायर्दे ५ मर्डे मानयाम् ५ मान्या विक्रिंश हेर्र्युर्ययाविवा । वाह्रव्रक्षेवार्याष्ट्रर्भूर्येर्ययाधेवा वायाहे वर्रे सूर वर्रे र संया वार्रे र सं हो र संवे ववाय न रे न हैं वा संवे वा हर क्षेत्राश्राश्चिश्राहे सूरावहेंद्राधराग्चाले वायाने वाल्याने वाल्या के स्वीता विश्वासी कार्या के स्वीता विश्वासी के स्वीता विश् <u> बेर्प्स हेर्पार धेर्यं स्वार में भ्रेर्यं अवस्य स्वयं स</u>्वयं ग्री-र्नेष-ग्रेन्-प्रदे-मान्य-क्षेम् अप्येन्-प्रदे-श्री-र्नेष । ने-प्रदेव स्त्र-प्रदे-ध्रेर्भे ह्वार्वे विश्वायाया ग्रुश्यायश्ची ह्वायाय वश्चायाय वश्चाया है। ह्वाया हेन्-त्-भ्रुन-भवे-गान्द्र-क्षेग्रस्थ सह्द-भर्ग्नान-हेन्-धेद-भवे-धेर-र्रे-वे-दा म्लानायेंदे से से नवदायमानमें दाया है। दे लादे ह्या या हेदा ग्री या हता कैंग्रभः नृदः भ्रवः याचे गाया बुदः नवे श्री रः श्रुवः यरः हो नः या ध्येवः यः छेनः त्रत्युर्र्स् । वायाने यदे स्वर्मा विवार्षे दे त्याया स्वर्धे । विवार्षे स्वर्धे । विवार्षे स्वर्धे । विवार्षे स्वर्धे । विवेर्षे स्वर्धे या स्वर्धे । विवेर्षे स्वर्धे या स्वर्धे । विवेर्षे स्वर्धे या स्वर्धे । विवेर्षे स्वर्धे । विवेर्षे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे । विवेर्षे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे । विवेर्षे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे । विवेर्षे स्वर्धे स्वर्ये स्वर्धे स्वर्ये स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्ये स्वर्धे स्वर्धे स्वर्थे स्वर्ये स्वर्धे स्

त्नै : श्रुम्म निव्यत्त निव्यत निव्यत्त निव्यत्

गहिरागायम् नाम्यानम् नाम्यानम् नाम्यानम् विष्यान्यम् म्यानम् विष्यान्यम् न्यानम् विष्यान्यम् न्यानम् विष्यानम् विष्यानम् विषयान्यम् विष्यानम् विषयान्यम् विषयम् विषयम्यम् विषयम् विषयम् विषयम् विषयम् विषयम् विषयम् विषयम् विषयम् विषयम

द्वीत्रः त्वावायः नः हित् त्रेन् त्वावायः व्यावायः व्यावायः नः विद्वायः वि

यरनिह्ना केंग्रन्तिका उदान्ति विष्या । देखे हो न्या थेद यटः स्टा धिवः हे वें वा हु क्षुवः प्रदे धिया । दे व्यः वार्वे दः प्रश्रः ववायः वः वर्षायाकेरावे सेवात्यार्थे वाषायावरावी केरार्टा ख्वाये वाह्रवाकी वाषा शु:नर्गे द्र:मित्र किया शा शी: अळव हे द्र द्र द्र स्थ सामाया सा हे। दे ख्र-रवादेश्यादेशः याः सञ्चतः स्वायाः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्व वे मान्व वस्त्रस्य स्टन् ग्री देव ग्रीन संदेन तु न मान्य स्टान स्ट ग्रीवित्यासुवित्यास्। ।देकित्वाययान्य ग्रामवे श्री सदे द्वाकित्र देव नश्चनः ग्रुःयः गृहेशः श्री । ग्रान्यश्चनः ग्रुदेः र्केशः ग्रीः ग्रेन्दे ने दे नाश्चरहेनः 

यन्त्रांकेन्न् से नायम्यास्य स्तिन् न्याकेन्य स्थित् सम्यक्षित्र सम्य ने याद्रासे विदेश है किया । दिर्देश से गुरु ही स्टार्स वी ही ह्या वा वाद्र यायार्श्वे प्रमाह्य प्रमाह्ये के शास्त्र महिला है वा कि महिला है वा से कि साह्ये प्रमाहित स्व होत्ती र्मेरत्रश्चाह्याययस्य से ह्यायर ग्रुवायायावया हा धेवायरे धिरावेशा ग्रामान्या दे मविवाद् साम्रवाग्राधिवासये धिरावेशासामविवादी ञ्चा'अ'र्हेअ'त्र्यम्ब्य'ग्रिअ'र्रुष्टे । न्यून्यचुर्यक्रियात्रहेर्यात्र्यादेखायः वे प्यटान्यायान्टा वेयायम्हेयायायन्त्रेयायान्यकेयायान्त्रकेयायान्त्रकेयायान्त्र रु:धेवर्दे । वि:धरक्ः मारमी द्वीर वे व रूर्ये महिरासवरमविमा हु बेर्व्हें अप्तुप्रयुप्तावीयि यदी सूर्या प्राप्ति वाती विवास विवास विवास है वा कु वियासन्दर्भ वियासन्य वियान्दरहेसन्य युन्य युन्य वियास र् अर्वाय्ययाविवाद्वयायर्वयर्वायायर्थयाथ्ययः विवादियाञ्चर धरागित्रात्यायनायाप्यरायापीत्रायाने ते हे याशुरवर्ते वादरार्थे गायाद्या यश्राधेवाने। नेप्नावेकालश्राम्हेनारा र्शे। । वाय हे 'हे 'क्षेत्र दे 'वाडेवा'य 'हे सामर (व्यास सम्हा) वे वा सदर श्रेव पाइवाश शुप्तशुरा विदे सूर विदेश गादे काय विदेश पर व्यायायायायीतावेटाहेयायुःव्यायायाद्याद्यायायाद्यादे यादेयाया महत्रक्षम् राष्ट्रम् स्त्रात्या स्त्रात्या मान्द्रम् स्त्रात्या स्त्राहेर ग्राम्प्रकृम्प्राम् अप्राचित्र । विष्ट्राम्य विष्ठाम्य अवस्थित्र । विष्ट्रम्य विविष्णः हवा धराषरावयुरा शे हवा धरावयुरा व वे शे शेरार्दे। । दे नवित्र नुः र्योद् निः हिन् हिन् हिन् स्थान्य स्थान्य

नेते क्षें त्रान्युन गुते ने ग्रायाय या या संस्था या वेता या ल्ग्रायान्यान्त्राद्वात्रायान्त्राचित्रात्राचेयायान्त्राच्यायान्त्राच्यायाया नर्हेन्याधेवाते। । नियेन्त्र श्रुत्थात्रेत्र श्रुत्या श्रेत्र श्रुत्या श्रेत्र श्रुत्या श्रेत्र श्रित्य श्रेत्र श्रेत् क्रियानायमानुदानदे भ्रीमानेमान्याद्वात्री ।दे ननिमानुस्य स्थित्रायमे दे नम् नक्षेत्रायश्चिक्षेत्रप्ता व्यवानिक वित्रायक्षेत्रप्ता व्यवेता हर्मा प्रमानित्र विकास के त्राचार के त्र त्र विकास के विकास के त्र विकास के वित्र के विकास के मसेन्ययाससर्हित्ववे हिर्मे । ने स्याधिव है। वाय हे ल्वायाय नविवःश्वनःवा । नगरःगञ्जमशःर्षेवः हवः नहेवः यः यशा । देवः यः नविवः र् नर्ज्जेन ने अप्या निर्धेश महिना निर्धेश महिना है । विद्या मी किया हु क्रें राय दे माठेग हु सानक्षुनराय वायान से विद्यान उद धेव मश्चे र्स्ट सामी मिन्द स्मिश्हेन र् नेश सम्मिश्चे पदि । ॡरःश्चे:ह्ना:धर:पिर्यायेद:ध:य:याअद्दा:हिन:न्दा:श्वराध:हेन:ग्री:श्वाय:हे: यदी ह्या या भी वा विश्व क्षेत्र क्षेत

ने दे न र्सून र ते स्वाय वा ने दे देन महिरागदि कर क्यायानिक्यासुरवेह्नाक्षे देःक्यायरानउद्के नक्षुनायराग्रानदेःदेवादुः गव्रायः व्यायः प्रते भी स्वायः म्यायः भी वर्षे । । प्रीयः वर्षात्रः क्षेत्रायाने निया होता त्या स्वास्या साधित हैं विया सूत्रा सम् होता पदि यायरह्नायायायायदेश्चित्रित्वरावर्ष्वियायाञ्चरायर्भेत्राया विने विने से विने से के से के ति के विने के वि वयायानरावगुरावे दा हे स्ट्रास्त्र से वगुराने। यारायो भ्रीसाग्रास्त्रे रेगानानग्वामान्यान्यम्भाभिकार्द्वे न्यान्यस्थान्य । स्वाप्तिन्द्वे न्यान्यस्थान्यस्थान्यस्थान्यस्थान्यस्थान्यस् नर्से नश्चन पुरक्षान्य पर्मार सेना संभित्र पेते प्रमुन परि क्ष्रवर्वे निर्मे के से शर्दे रेगा संधिव पवे प्रायाय न सून परि गुर्मे नदेःरेग्'सःगुनःसरःन्र्रेन्'स्रार्नेदःग्रीःश्ग्राराग्रीयःग्रदःरेग्'सःधेदः धरः ग्रुवः धवे : श्रुव्यायः वरः वर्हे दः धः यः व्यायः वः से दः दे। । वे ः स्रे : ग्रुसः

हेन्दे कें यानायमा हुन्ना न्या हुन्न वाहे माना न्या से न्या धेन वा वि.शु.८८.वश्रश्र.१८५.वश्र.श.सूची.सर.विचीश.सश्र.भेची.स.कुर. हेशसु (व्याय प्रति भीय प्रयाय के ह्या प्राय ग्याया प्राया के व्हिंय प्राया प्रेत के वि वा गयाने गराविया गराया व्याका सारे वे हे का कु व्याका सदी के का सदी <u> चे च्या ने इस पर पाविया पवे क्षे वस चे न पर वृश्व त वे ने क्षर प्राप्त</u> र्रे। ।गर-र्-ल्ग्रथान्त्री देवे हो ज्ञानाय सेंद्रश्य वर्षे। ।द्ये र-द्राह्यश्य हेन्ॱ<del>ह</del>ियानायसानुदानान्। सानुदानामहेसामायात्मासाने स्रीता गिहेरागार श्वापा ने कें या ग्री माहत कें मारा पित है। माया है ग्री साम है स क्रियानायमा यूटानर्दे वेमासूनाययम यटान्यमा यटान्यमायी क्षेत्रायश्राण्यवान्वव्याण्यवान्वायाण्यवान्यस्थ्यवान्यायान्त्रीत् । वावाने दे क्ष्यंत्रे नुरुप्ये से स्वार्मे । यद्या से दुर्दे विरुप्त नुप्य से से से सि गहरुक्षिग्रासुप्रमुरहो गहेरागायाधिर्प्रदे धुर्रे वेदा ग्याहे से ह्वायान्द्राच्यानवे नद्वायो सेदायाया तुर्याया विष्टायर वित्तर स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त क्षेत्रपुरार्स्य । ने क्षेत्रप्रवास्त्र स्वास्त्र वास्त्र क्षेत्रप्रवास्त्र क्षेत्रप्रवास्त्र क्षेत्रप्रवास्त्र वर्गुरर्से | देवेरधेरक्षायाग्रमारहेर्से ह्यायाद्रायाया देशमध्यान्त्रक्षेत्राश्राधितर्हे । यत्रक्ष्त्रख्यायायात्व्राश्राद्वे शेर्केश ग्री मात्रव के मात्रा धिव विं । हिमा या नामा या श्रूट रूप यदे से हिमा या है द

ग्वित दे 'पेंद 'रा' स'पेत दें। । ग्वार देग्र सम्बर्ध सम्बर द्या 'यस 'रेंग् रा' नेदे क्षे न्यानक्ष्या चुःषा नेया प्रत्वा प्रमाचेत्र प्राप्त क्षा क्षा विष् वर्देरमें राम्राक्षणभागराम श्रुवार्श्विणभाम श्रवाराष्ट्राया वर्षेत्र पर्दे विभाग है। याधित विद्या वस्र राज्य विद्या क्षेत्रायायात्री स्टार्ट्र एत्रेयायार्ये स्त्रयात्राव्य र् मुनाया उदा श्री प्रेयाया नश्चेत्रपदे तुरुष्य प्यापदार्थेत् स्याधेत्र त्री विदेत्रपदा विवास्य सुदि न्नर-तु-नुरुष्त्र-रेग्। यर-नु-क्षेत्र-रम्। मी क्रायर-रेग्। नेर्-ग्री र्भुदे·गुरुपायरायरायरायीरागुरादरार्भुदानदेः विराधासर्वेदानदेः <u>भ</u>ुरा खुर्या ग्री द्वाराय रामेया ग्रेन निविदार्हेषा नाय या ग्रुम ना हिन में निवस ग्रेन में। दे सूर्वर्दर्भे महिराधेवरम्य महिमाहेद्रायदे व प्रवे व प्रवे व प्रवे व प्रवे व देराधरावे के रामाववानसूर पायरा हुरान हेरा ग्रीरे रामाधिर शी देरा वे हे न् ग्री अ दे अ यर न हो न य वे अ पी व वि ।

देते श्री र पदि र पाठि वा हि र वा श्री र पा श्री र पा श्री र वा श्री र पा श

र्देव'ग्ववव द्वय'यर'न उद्दःयदे'ग्वहव क्षेत्रयावव क्षेत्रया स्व शुर्रासदे दे त्याचे कें अर् शुर्रास दे अप्येद दें। । अप्येद सर द्याया साया यरने नविवर्ष्म राजरा होये। जियाने पर्ने ह्या याया थेवाया थे ह्या पर्दे विश्वास्त्रित्राधिताते। दिन्ध्रायाधितात्त्रात्रायार्थेषायायार्यस्त्रात्राया क्षेत्रान्त्रेत्रान्त्रेत्रात्त्र्यूरार्त्रे । वदी वाष्प्राचेत्रायरात्र्यावारात्य्याद्यत्र यर-र्-तश्चर-यर-श्चर्ते त्रिः श्चर्त्रायाम्यायाः स्वर्थायर-यगायाः यर्दरः श्चर्र-यः धेतः र्वे विश्वास्त्र म्यास्त्र माने साधिवार्वे । हिमाया विश्वारे साधिवार्वे । दिसेरा <u>वःभ्वःह्रणःश्वेःनेणःग्रःसःधेवःसदेःग्वेनःवेशःवेःसःधेवःर्वेःवेशःग्रःनःश्वःग्</u>रः वर्रे या वे चे कें अया सें अवश्वानगा पा धेव या स्था वे न क्रिंग पा या सें अ वर्याधेवर्दे । वारावी के ह्वा धरावरावरा हो त्येव धरे दे के धरावाववर ही रा गुर्नात्र प्रत्नेवार्याया हे राज्या की वित्र हुं सबर वाव्याया से वित्र वित्र स्व र्भाव भेरि नविव भरे कें व निर्धे अवस मावका स स भिव माया के हमा स धेन में ले का ने हिंदा ने कि ने मान के निष्य में निष्य

दर्ने १८ म् अ १८ व्हा वा प्रति । विष्ठ के वा सारे दि । विष्ठ के वा सारे के सार के सारे के सारे

न्ते मालव श्री पर्देन स्थान प्रमास श्री ने प्यामे लिया हिन स्थान स्थान

होत्रासदे सूरावा अववाहा धोवा सदे हो राह्मा सदे विवाहा ना पदी माहवा क्षेत्राश्राश्राश्रयान्यत्वार्ट्य । ने ने ने म्वाराष्ट्रित् से दाया स्था सक्रायनवःविगाःहग्राराशुःवशुम्। ।देःददःसश्रुवःसःसेदःसःविंवःवःसेदः यदें विश्वासायदे या विया सहसार्शे से मार्थे दायसा धेवायश सहसाय सहसाय स गुनि हिन्हिन् सार् प्राचयानि हे सामाने से निस्ति। वेत् गुनि से निमानि न यासेन्यर्देवेशनेशयम्य बुद्यानेदेवे धुराष्ठ्र सहस्र सेर्पेन्यार्देत् गहरुक्षेग्रास्युद्रहि। देखानुस्रास्तित्रसेह्नासर्गे नेदाद्राद्यूर ॻॖऀॱ<del>ढ़</del>ॕऀ॔॔॔॔॔॔ज़ज़ॵॹॗड़ॱॸ॔ढ़ऀॸ॔ढ़॓ॱॵऄॴऄढ़ॴॸॱढ़ॻॗॸॱॸॕऻॎॗऻॸ॓ढ़॓ऄॱढ़ॴॱग़ॸॸॱ वियासहसारासाधीताहै। दे सेदाराधारासे ह्या सासर्वेदायदे हिरार्दे | दे समुक्छिन हे सार्येन स्था । हे स्ट्रेन निम्म सुक्य हेन । हे सारे सा धराव बुदावरा ब्रेट् वादे 'द्राय श्रुव 'धार्वि' वाद्रा श्रुव 'छेषा 'तु कु 'वरा बुका मश्यादात्रवारायम् । व्याद्वाराया विश्वापित विश्वापित विष्या विष्या विषय विश्वापित विषय विषय विषय विषय विषय विषय ग्राम् ने 'क्षेत्र' वे 'के अ'याम प्रमुव 'यम स्वाप्त के देवा अपन्य अवुव 'या वि व से न यम्से वर्ष्युम् नावे विवायामा या यामा या या विवाय वर्षा स्थाया न्यासर्वेदा । यान्वरक्षेयाश्याचेयाययदान्यसेन्यसेन्यसे वर्ष्यस्य सम्बद्धाः ह्रे। दमेरः व तुरुपार हेद वे से ह्या य दर यद्या सेद या व सेया रासेद वासेनामाधिवार्वे। ।नेवेष्टीमानेसाममान इतामासुसामार्भेवारवाधीवा र्दे। । यर ने न्दर अध्वर यन्दर भ्रव के वा कु कु नवे वा विव के वा वा विव स्तर स्तर व

वर्षान्धन्यम् ग्रुः है। हे मे विवायने म है सूम नसूव याने नविव सक्व केनः हेन सम् होन नमा अन्य अन्य अन्य प्राप्त स्थान स ने यश है र वशुर वे वा ने वे निर्मा के द शे श के व वा निर्म के निर्मा न्हेंन्यमानुमामाधिन्। विदेशन्ते नहत्यामान्ना मुनुद्रान्ते से रावे भाषा नश्चनः ग्रुः से द्वारा निष्ठा दि । विष्ठी पर न्यां र्ने व निवान है है। यने प्यर न्या यये रेने व है सूर पेन या सूर सकत क्षेराहेरासरा होरार्रे विषा रेष्ट्रायाणया इसामानायामेशानाया विसासा नर्हेन। । गायाने नान्व केंग्रास्टर हेन ग्रीस सूँव साधिव व स्यास गार वीश्वादा है। श्वरावद्या हिता श्वेदा स्टा होता द्या वादा तुः प्यारा सर्वेदा वादा है। नेयायम् होन्ययायन्यायनित् । नित्रही सून होन्यर्षेन । नेयायर हो दायदे या हवा के या या हो रहा यो अळव हे दा हो या या यह दायदे नन्गाकेन् ग्रीसानेसाम् ज्ञानदे नेंद्रानेसाम् ज्ञेन् प्राचेन् प्राचेन् । अगः ग्रीयान्। बुटा बुदे देशीयाया श्री । स्री ह्या ह्या या श्री व्या वर व्या ह्या । या या ने ने दे प्रमा के न प्र इस क्षायळ व के न हे न प्र स्वे न के व के वा वी का ग्राबुर ग्रु हेर ग्रुट से ह्मा स हेर र्र रास्त्र के मा हु क्रु नवे माहत के माना स्रु वशुरःर्रे।।

नायाने नाराविना सानसूत्र संदे ते नाम् त्र क्षेत्रा सामा स्वित्र हैं विसा नहें ति हो सानसूत्र सावित्र नहें तामा निस्त्र सामा स्वादेश सामा नहें ति । ते सूरातु नहें तामा से सामा से स्वादा से गहर् केंग्रास्तु से त्युर विसास सुरार्सि । व्यूत हेगा कु नस नसूत गु या । विः क्षेप्तिः क्ष्रमाने प्रमास्त्र स्वारा से द्वारा से द्वारा से द्वारा से द्वारा से द्वारा से द्वारा से द नश्चनः सरामुः नः यानाः सानश्चनः साने वे वे सान हें नित्ता ने से सान हे । गिरेशायशायगुरानशा । ने निर्माश्रम् निरम्भ्रम् हेगा हु मुन्निर्भ ૹ૾ૼ૱ૹૹૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૹૢ૽૱ૹ૾૽૱ૹૹૢૢૢ૱ઌૹ૾ૢૺૢ૱૱ઌ૽૽ૢ૱ૹૢ૽ૺ૾ૺ૱ૡ૽૽ૢ૽૽ૺ૾ૺ૱ૡ૽ૺ૱૱ नसूर्यात्र्यान्भे माहेर्याचीर्यान्याचीन्दी । हे सूर्याहेन्याहे सूर्युः न्यायी अव न्ये अप्रवेषाय देश यम क्षेत्र या धेत के ले अप्त हेन या धेत के ग्र-विग्।ग्र-ग्री अप्त्रश्चन ग्रुप्यायात्र सूत्र पाने विश्व महिन्याने त्यान् ग्रुन् धरागुः क्षे भे हमा हेर से मारा अर्थे राज्ये । वर्षे मार्थे स्वा विष्टे स्वा विष्टे राज्ये स्वा विष्टे स्व विष्टे स्वा विष्टे स्वा विष्टे स्वा विष्टे स्वा विष्टे स्वा विष्टे स्व विष्टे स्वा विष्टे स्व विष्टे स् न्याचे। । वायाने ज्ञाराने न्यो वान्य के वार्या ये क्षा से हवा या हे न न्यों क्षा से वार्य हे न न्यों के वार्य धर हो द व वा वव के अ शुवा वाद शुव धर देवे के देव द । धर द हो र हें द । धर बेन्द्रमा नश्चनः चुःगावनः नहेन्द्रमः वे सः धेवः वे । ने स्ट्रम् व ग्रान्सः नश्रुव राने विश्वासायार नेवाश्वासाया थिव वि

रेवाश्वास्त्रव्यक्त्रश्वास्त्रेश्व स्वाधान्ते स्वाधाने स्वाधाने

वश्चरःहेः दसमायः सँमार्यः निव्वतः है। दिवःश्चेः दसः नहतः यः सँमार्यः । वश्चेः ददः दिवः स्वाः वर्षः स्वाः स्वाः स्वाः स्वाः ।

गवराणरा भाराक्षेत्र यहेराभारते के त्रेरास्त्र के के रास मुत मवि निमेर महिन मा हिन मह्यून हु हुन मा हिन प्येत स्व ने ने हिन ने प्या गुरामाप्परामाप्पेत्राविदाग्रेत्रात्र गुर्नेत्रामात्रा विदासमात्र ग्रामात्रा ५५.२.१६८.४४.१९८.४.४१६८.४४१ । २०.९४। यक.५.५६. सूसानु ग्वाद के सास मुदारा त्यसान्ये निहें नि ग्री द्वार नि सद कुंद नि मुन मदे क्वें व्याधिव है। दे नक्क्ष्य नुक्ष्य मित्र के मायाधिव कें ले वा दे क्ष्यंत्रेने। हिन्यम् उत्रुम् देवे द्वेम् लेवा केंश्यव्यापि नि नर्हेन् प्रवे रमा प्राप्त के अपार प्राप्त के प्राप्त के माना के प्राप्त के प् यवे भ्रेम्। विन्यम् उत्रम् निष्मा न्दर्वित्रयात्वर्श्वित्रयायाः श्री श्रीत्रयाः मे द्वार्ये न्याः वे न्यस्त्रयाः स्त्रायाः स्त्रयाः स्त्रयः स्त्रय वेन यरकेनमुनन्त्रम्न निन्द्रम् रायश्याम्यदित्। ।देखश्चिर्यस्त्रम् वित्रा गहिश्यापाववर्त्रपर्धितः धरावशुरा । वायाने पर्देशायशाधीत त ते वारान्तर पर्पाप्त विवास विवास यने वित्रामहत्र के म्या शुरद्युर में । म्याय हे न कुर्य याय श्वीत स्वराधित यार के अः अञ्चर प्रवे छत् प्रवे क्षे अः पः ने यान्त्र के या अः सुः वर्गु रः ने । यावः हे प्रवःद्धंवः नक्कुं दःवशः नक्कुं वः शुक्राः वः दे गाह्रवः क्षेण्यः धेवः प्यदः छवः सतः निश्वास्तान्ते । व्याप्तान्ते । व्याप्तान्ते । व्याप्ताने । व्यापताने । व्यापताने

त्याविद्यां विद्याः स्वार्थः स्वरं स्वार्थः स्वार्थः स्वरं स्वरं

यशुर्त्स् । देश्वेर्त्यव्याप्य क्रिंश्य स्वर्त्त्रं देशेर्त्वं स्वर्त्त्रं विष्ण्य स्वर्त्त्रं विष्ण्य स्वर्त्त्रं । देश्वर्त्त्रं विष्ण्य स्वर्त्त्रं । देश्वर्त्त्रं विष्ण्य स्वर्त्त्रं । देश्वर्त्त्रं विष्ण्य स्वर्त्त्रं विष्ण्य स्वर्त्ते स्वर्ते स्

वुगायर वुश्वशायर वश्चर व गवाने विराधरार् विशासदीर्देशरे विष्टूरा की के शास बुदासदीर गावसका उर्दे मान्व के मार्थ संभिव के ले वा रमा गुव से पर्दे र ले व मारा पर्दे र ने हिन्यर उत्र र् की वाय हे के या बुद र वा बस्य उन् वाहत क्षेत्रामान्याधीत्रत्राधारामान्यात्राह्यमान्यात्राम्याः धेव वया देव गर द्या मी छित यर श्री रात्र हित यर त्र से होता याय हे वर्रे भूर हिन् यर ही क्वाया के क्षेत्र यदे ही र र्ने व र् कें व का यदे रेने व या वशुराने। न्यावरुवान्दानान्याक्षेत्रायायानवे भ्रेरारे लेखा दे क्ष्र-जिंदाराया विवादी विवादी निवादी काराये निवादी कारी वै। अन्ति प्रत्यासम्पर्देन्साधिव। क्रुः सळव सेन्सम्पर्देशः क्रीः स्रुदेः देवायायन्यायम्भेषायायायायेवावे । निवेधिमःकेंयायम्बनायाकेनाम् यर:र् गुर्वे | र्नेवःश्चाह्यर्यर:र् गुःवःवे सःधेवःवे | रे ःक्षरह्यः परःर् या त्र्याया ते हे १ द्वारा निवादा से अन्याय है राष्ट्र प्रमान है । वि है  र्वे वे व ने विन्यम् नु व्यापाने या प्रे व व विष्यम् व व विष्यम् व व विष्यम् व व व व व व व व व व व व व व व व व ৻৸ঀ৾৻৸ঀ৾৻য়য়য়৻ঽ৾৾ঽ৻ঀয়ৣঀ৻য়ৢয়ৢয়৻৸য়৻য়ৢ৾ঀ৻য়৾ঀৢঢ়৻ঢ়য়ৢয়৻য়য়৻য়৻য়য়ৣয়৻ हिते।हित्रपर्र्,हेत्यरके वींपर्ये हित्र विवास विवास है। सब्वायर क्षुनायर होताय शान क्षेत्राया दे निविद्य निक्ष्य हा क्षुनायर कैंग्रअः सूर सूर न इस्र अ हे जार के अ स्तु व स ने वे जा हव के ग्र अ सूर बूर न स धेव है। गहर के गशहेर में लेश नहें र पर ग्रुप धेव में ले वा ने भुरत्वे वित्रपर पर रेग्या या अप्येत हे श्रुर नहर न या द्येग्य नर्यार्थित् प्रमःश्चित् अप्येत्। । वादःविष्यः यः यः श्वेषार्यः विः स्वेरः स्वार्यः स्वेरः स्वार्यः स्वेरः स्व यः इट र के अर थे र श श्रुव र या हे वा हव र के वा अर क्षु द र खूट र वा धीव र शे र ने वा हव ध्ययाया श्री रामहरामदे में भूमका क्षेत्र मदे श्री रामें

स्राद्धेनाश्चा स्राप्त स्र स्राप्त स्र स्राप्त स्र स्राप्त स्र स्राप्त स्र स्राप्त स्र स्र स्र स्र स्र स्र स्

त्रुवः सः तः श्रेन् श्रम् श्रुवः सः स्वाद्यः स्वादः स्वतः स्वादः स्वद

त्रे त्रवास्त्रस्य त्रित्राचार्य क्षेत्रस्य क्षेत्रस्य

न'वर्दे'व्य'यद'नश्चन'यर'तु'न'व्य'श्चे'हेर्'ग्रे'हेंश्य'श्चें'हेश'त्र्यान्त्र' क्षेत्रायास्य विष्ट्रास्य विष्ट्रेष्ट्रिक्ष याधीत्य देने देवे चुयाय हेन्य स्वायाया भे भेर्रि । रे भ्रे के भ उव धेव व वे रे धर भे तबर रे ग्रुव भवे भ्रेर्रे भ्री ह्या मा हिन् न भ्रुन ग्रुम ग्रुम श्रुम श्रुम श्रुम श्रुम ग्रुम श्रुम श्रूम श्रू धेरःर्रे । भेरहगराहेर्ग्यः भुलेश्या भुभेरहगराहेर्र्ने वेश्या श्चा भी मित्रा मित्र मित केंशन्दरकेंशरुव नक्षुन गुरेव । दिन्यानक्षुन गुरके भेरिदी । क्रेंबि देशवःश्वेदःधेवःक्वः ५ शुरः १९५ वे नश्चनः ग्रुरः वर्षेवः नरः वश्चरः है। दे'याश्चित्राः केंशाउदाद्यापावदायापादापादादे दिया वशुराना से दारि के सामी हमा पर्वे विसान सुना गुरु। विसान सिना निसान सिना निसान सिना निसान सिना निसान सिना निसान ने न्या भु छिन ने निर्ध्व सर्वे ने यान ने वे के याने पान व के पाया थु वर्गुर-र्रे । देवे: यर बुव-र्सेट-ववे: दर्गु-यर ग्री: वर्भुव-ग्रु-दर्भव: पवे: क्रूश्रायवीर.धे। विराधरायश्चियाचीर्यराज्ञेयाची क्रूशायक्र्या यश्चिया धरः ग्रुः वः नृदः कृतः विश्वः हे नः देशः वेशः वेशः व श्रुदः वरः ग्रेनः विश्वः विश्वः विश्वः विश्वः विश्वः विश्व ग्राट्या अन्ते । दिव श्री के शास्त्र प्राया प्रमानि । वि वे निश्चन गुन्द थ्व पाष्ठेद ग्री के मार्थे वे मायने या पदे भे सार्थे मार्थे के मार्थे भी सार्थे  वेशनायम्बर्क्षम्यास्य विक्रम्

नश्चनः मरः ग्रुः नदेः के सः सर्द्धर सः मंदेरः दें वे दः सः धेदः हे। देदेः ह्य-पर-र्-हेर्पाययाव्याव्यायाद्वेयासुपद्वार्गे वेयापादियासुर बॅर-र्-पावन यः यह्मा या यो वा परि द्वी स्थळ्ट राया या यो वा वे । ह्यायार्थ्याहेर्न्यञ्चरायराद्यायाहेर्न्याधेरात्राचीत्रवाहेर्न्या यायातुस्रायार्सेवासायवे केंसावाहत केंवासासु नाई दायर सुरायवे से रा श्रेमामिशमा बुदानर ग्रुप्त हेर् ग्रूप्त महत्र के माश्रास हैर सर द्यूर है। ग्वर पर अरेश राया देश रावेश तुर्ग ते हे के के आ ही ग्वर के ग्र रा है। विश्वित्यःसदिः यान्त्र क्षेयायः ने । यद्यान्त्र क्षेयायः सुः वश्वसः स् । प्रधेरः तः ह्या है। खुरु उद साधिद पदे हिर लेश हा ना धर है । दूर ह्व पर हैं यूरा धरावश्रूराहे। इसाधात्रस्या उत्तु सावहोत्या वा हेता देवे हिराहें सा सम्बद्धारिते निर्ध्व राजे विद्याय विद्या ने निर्वास्त्रे के अन्तरम् सुवास के अस्त्रुवास धेवास के अपाववा स्रम्यायम् वर्षुमाने। सन्दायमानु नाने निष्याया उद्या है । स्र दवा'स'विवय'वर'विव्यर्'रे'वेस'रेस'सर'व बुट'व'श्वस'सवे'धेर'रे| |

श्र्यायावे हे अत्यह प्रति क्षेत्र क्षेत्र प्रति क्षेत्र क्षेत्र प्रति क्षेत्र क्षेत्र प्रति क्षेत्र क्षेत्र

दे त्या से विवा वार्षें के व्या दि त्या या स्थाय मास्य स्थाय दि स्था स्थाय व्या स्थाय स्य

तश्चुतः च्रितः र्रेशः यहः श्चुतः च्रितः व्याप्तः व्यापतः व्यापतः

नसूर्यापित प्राने प्याप्ता प्रवाहित किया या शुर नहें न प्राप्ता विवाही न सुर नि वे 'यव 'यग 'वस्र अ 'उन 'वहूँ न 'यं प्येव 'वै। । ने स् अ 'वस्रव 'यं पे 'युन 'यस 'वे ' में नर्जुन्यसाधिवार्ते । द्रियेष्पराम्याके महायानश्चराजुञ्जनायाया द्वेत धर हो द र प्येत के दे प्या के मान के कि के कि के कि के कि के कि के कि कि के कि वर्ते निर्वे स्वरं सेवा । भीरावी भीत स्वरं स्वायाय स्वरं वायाय स्वायाय स्वरं वायाय स्वरं वायाय स्वरं वायाय स्व कुगान भरासान सून पाया ने हे सा सु पर्वी ना से ना परि ही मान्ये पूर सून ना धिवर्दे। १दे निवेवर रुक्ष्म नम् छेद मिरे देवर महास्य प्रमास स्थित दे। न्रह्में न्या निवास का क्षा के निवास के गयाहे निहें न्यर ग्रुप्ताय हे या सार्वे न्या या धेव स्था ग्राम निहें के श्चेंत्र'न्राचिष्ठ्याचे साधित हे प्यति स्था ह्या ग्राह्य ह्या प्यति प्यान हे । यः श्रीवाश्वारायावार्षे निति दिन्देशस्य श्वार्यो नामस्रवास्य श्वीरा ぞ 」

ग्वन्था । प्रमानी प्रमानि । प्रमानि

योद्गानाः भेत्तः हित्ताः स्वातः स्वात

गडिगाछेन्द्रे अप्पेत्रिं। यदे छेन् ग्रेक्ट बेश नश्रुत पर्वे भ्रेस्ते वेश हिन मासेन् भ्रेम् केन्यासेन् स्वेन्या सेन्या सेन धेव है। ने अर केंद्र य से द य वे से देग राय है द दें। विवव द वे विवा हेन्साधेवाबेना वेन्डसासेवा वेन्साडसायरान्सूना गुःसाधेवार्वे वेशनईन्द्रि । नने न्याया स्वाया प्रति देवा सान्द्र हे सासु वर्षे ना साधित है। इन्दर्भिर्भुद्रायम्भूयामानिद्या । पायाहेर्देवर्भेषामाग्री कु गठिगामिक्षेत्र निश्चन होर्दे ले तरि देशे साधित हो। वर्त्त इससाय देगा स गठिगामकिट्राह्र अरुप्तर्वे ना सेट्रायि द्वीरार्के । हे अप्तर्वे प्रस्था स्वर्था स्वर्धा स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्धा स्वर्था स्वर्धा स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्धा स्वर्या स्वर्धा स्वर्धा स्वर्धा स्वर्धा स्वर्ध श्चराडे वा । याधिव हो नये से न परि श्वर मान से मान से न मान से मा वर्चर्यानु हिन् त्यः श्रीमार्था प्रवेशहे साशु श्रीमानवि छिमानमा ह्या प्रमास्थ्र प्रा ग्वितः इस्रश्रायः पद्यायने यानितः स्रीतः । ग्वित्तः स्रीव्यायः पदः स्रीतः

गर्गायाञ्चरमञ्जूनायाद्यायाचाद्यायाचाद्यायाच्याचा रेगाविगाः अञ्चनः यात्रे रेगायां गाउँगान्दा हेया सुरदर्शे न सेन पदे श्री र रेगा अधिवाने। वारावी श्रेरावाद्य सम्भावत्र सार्वा वार्वे वार्या देवे श्रेरा देवारा गडिगाहेशासुपर्मे नाउदारेप्ट्रायारासर्घरास्री गवदार्पत्रसानुगडिगा महित्। । सेन्यम् प्यम् व्यवस्य त्या विवास हिन् स्वेन स्वाय स्वाय स्व यदे वज्ञ शन्तु ने न्वा ने वहिया हेत यदे श्रेया वा श्रेया शायदे ने शाया वा नरःलेवःमवरःनेरःवशुरा ।हेःनरःलेवःमरःशुरःमःवःष्परःकुतेःवन्रयः तुःषेवःमबःदेवेःदेवाबःशुःहेबःशुःद्मवाःमवेःदेवाबःहेःखुवःद्गुक्रःमवेः मुत्यःसँग्रायःयःवे सःधेदःर्दे वे व सःधेदः रुक्षादः षटः भ्रेसः रुषः <u>षर खें त्र तृत्र गार्थ संहे सार्थ प्रमाधिय स्थाप स</u> नेशमने दे अवस्र्रेन्य अविश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वेस्त्रे ।

के हे हे से स्वाक्ति हु न्या के वाक्ष्य निष्ण के निष्ण है से स्वाक्ष्य है निष्ण के से निष

म्बिर्द्धेम्भ्रिः न्यः विद्याः स्वान्त्रभ्यः स्वान्त्यः स्वान्त्रभ्यः स्वान्त्रभ्यः स्वान्त्यः स्वान्त्यः स्वान्त्रभ्यः स्वान्य

र्शेग्रथायात्रस्था उद्गानि नाया श्रेग्रियाया देश देग्रया द्वारा द्वारा द्वारा द्वारा द्वारा द्वारा द्वारा स्व र्थेवर्र्यात्राचित्राच्यात्राचित्राची ।रेन्ध्रम्यरेनेन्विनानान्वरक्षेन्यराधीः र्भेवर गशुस्रागरि । (यदानादानी श्वीत्राना हैना श्वेत पु सिंदाना हता श्वीप्राप्त प्राप्त । इस्र र्से विस्तर्भा निस्ति । निस्ति निस्ति निस्ति । निस्ति । नुःक्षे निरानीः त्राञ्चाराया सँग्राया सदिः क्रें तर्नानाया सँग्राया सँहा नरःश्वरःनरः हुर्दे । देः वेदः क्षेत्रा द्ये देः प्यरः वेदः या सः विदः विदः नुवायार्शेनायायात्रस्ययात्राप्त्रप्ति। देप्तावे निस्ता यरामुनिने पार्रे पार्श्वर्तु पर्शे पार्वे प्राप्त प्रेत्र स्वित हो प्रेर्पि । दे प्रवित रूप्य यगाःभ्रमाः अत्रस्य अरग्रीः इस्राधराष्ट्रदायायर विदेशायाः हेर् र्राट्रेमा अर्थे विद्या रेगायर हुरे। ।गुरु हु रेश विवास एक रायस है दिर साम वर्ग न वि बेशनायावन्त्री पर्देन्ना स्थित्या वात्र स्वापाय स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त ग्राबुद्दान्तिः ग्रुप्ताने प्रस्थाने । से से द्वानाना । से से द्वानाना । से से द्वानाना । यदे वर्ष है महिष्ठि है। द्रे द्रायाय प्राप्त द्रा विष्ठ ह्रा स्था द्रायाय नःवेशःश्री।

देव् कर प्रवासित प्रियास के के राज्य प्राप्त के के जिया साल के के स्था साल के के स्था साल के के सिंद्र स्था साल के के सिंद्र स्था साल के सिंद्र सि

दिवाश्वाविवावि। हेश्वाश्वावि विवाधित्वा स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थापत स्यापत स्थापत स्यापत स्थापत स्

बन्द्रास्त्र स्वर्ध्य स्वर्धा स्वर्धा विष्ठिया यी हे सा सु प्यर्थे प्रस्ति स्वर्धा प्रस् वश्रुम्याध्यम् अधिवार्वे। यायाने हेशाया सेन्द्री क्री यावशासेन्यते धेरःग्रेगिःहेर्-र्,त्रयः नरःवर्म्-र्रेवेशःन्हेर्-रेवेत्। रेक्नर्-र्नेवेहिः वःरेग्रथःसरःवे स्यान्हेरिःदे चर्तिः इस्ययः त्यःरेग्रयाचे ग्रांची हे यः शुःदर्शेः नः भेंद्रासाया भेदास्या वाषा वासा विद्या हे मार्डमार्हेन् त्या अवतः मार्डमार हुन्देश साय मे मार्था मार्थे वार्वे के वा अप्येवा है। देवे:लर:अ:नश्रुव:मश्रव:नर्ज्जेवा:म:ब्रॅच:मर:लर:व्युट्र-र्रे । पाठेवा: हेन्यासबदाविवा हुरेसारा यह क्षेत्र वार्स स्वार्थ स्रास्त्रेट्राच्यात्रः श्री प्राप्ते प् हे अ शु दर्शे न दर न अय हे दिर अ य द्वा ग्रुट श से द्व दु श्वय नर वशुरार्से । दे त्या अववा गाँउ गा रु दे अपा प्यें दाया आधी दाय अपा वा दूर दु हु र नरः ग्रुःनः अः धेवः वे । देवेः भ्रेरः मान्वः कैम् अः अः नश्रूवः यः उअः ग्री अः देः नर्ह्मेनास्य प्रस्तात्र प्रस्तात्र प्रस्ति । न्यून न्यात्र महिन । न्यून न्यात्र न्यात्य न्यात्र न्यात्य न्यात्र न्यात्र न्यात्य न्यात्र न्यात्य न्यात्र न्यात्य न्यात्य न्यात् रैग्रायाधिवार्ते। विरीक्ष्राविष्ट्रात्रे प्राची विष्ट्रात्रे प्राच

र्शेट्टान'ते'स्रवत्यां देवा'तुंटेश'स'धेत'सदे'द्वेर्ट्टायश्च ह्वेंवा'स'व'द्र्ट्ट् वयः वरः वर्गुरः र्रे । दे १२ १५ व । इसे १५ व । व । व । दे १५ र त् शुर्वारात्राधारारीयात्रायावेयाः यावता सम्मारा श्री स्वार्वा स्वार्थाता स्वार्थाता स्वार्थाता स्वार्थाता स्व क्षेत्रप्तः हे सासुर्दर्भगायायार्थेना सायसासेत्रपार्श्वेत्रप्तः सेत्रपार्थेन प्राया र्शेम्थायाक्षेत्रावे मान्त्र न्यायमायम् विष्याते । हे शार्वेमा सायशायिमा हा र्शेट्टिन उत्तर्हेश शुन्द्रमण पाने साधिन हैं। । दे त्या पटा मन्द्र द्वार नर दशुर री । नर्हेर परे ते न पर्म सम्मार मार्थ पार्थ पर्मे । नःठवःतःन्देत्रविःधेरःवदेःइस्यस्यःथ्वःसःयस्य भावःत्तःत्वेःनरःग्रःनः धेव वें। विंद्र न पर पर पर प्रमाय प्रम प्रमाय प्रम प्रमाय गठिगायशः भ्रेष्ट्रायाधीदादा भ्रेष्ट्रायादशासीदारावी स्थिता वार्यायात्रा वशुराने। रेग्रायावेगायावरायेरायरावयावरावशुरारेवियागुरावरे र्नेनर्जे।

यदे स्वर देवा श्राचित प्रचित प्रचेत प्रचेत

विश्व स्वर्त्त्रात्तां भीत्र के विश्व स्वर्त्त्र विश्व स्वर्त्त्र विश्व स्वर्त्त्र स्वर्त्त्र विश्व स्वर्त्त्र स्वर्त्त्र स्वर्त्त्र स्वर्त्त्र स्वर्त्त्र स्वर्त्त्र स्वर्त्त्र स्वर्त्त् स्वर्त्त्

देवे भ्रेर श्रेर प्रवेश्मळव हेर सर्व पर साय हे या है विश्व हु ना दे <u> न्या यो श्रादे । या न्या रहत इस्य श्रायी या नृद्ध यो श्रायी स्याय प्राय प्राय विया हुः </u> अ:बन्:ही इस:धर:ध्व:धन्दःवस्य:हे:देदसःधःधःधर:देवेसःवहेन्दे। गहरुक्षेग्रायार्हेर्द्रयागहरुक्षेग्रायुर्ध्यायात्र्युर्धा देः यारे विवार्से दायासून या सामुनायाद्या सामुनायाद्या । विवायावि र्देव वे नाप्त्र के नाये भूर सूर नार्दे वे या नेराया नि नाया सामाना नाया र्शेम्यायायाते प्रमेरित महेरित सक्ष्य हिर वे साधिव हो प्रमेर व से मारी ग्राबुद्राचुःधेत्रायदेःधेर्यः क्षेत्राक्षात्वेत्राचुः वास्याच्यायः व्यासाद्याः धेव पदे भ्रेर ह्या में विश्व द्वाया अदेश पद्या है ज्ञा पर इस्र राष्ट्र प्रदेश र्रे यश तुर वदे श्रेर भे ह्वा में विश्व तु व व्याय व व विवाद । व्याय वयायायायाहेशायदी ।

प्रशासन्यान्य प्रति । वर्ते प्रण्य । वर्ते प्रण

 वन्यायाः इस्यादीः वाह्नदाक्षेवायाः सूरास्य वियाने रार्दे ।

दे त्यायहिकारा द्रायक्षारा दे सारे शारा है। दे त्रुर दाहितारार र्धेर् भेता गर ए अ देश मा धेत ले ता गलत ए श हिर् पर र सा भूत्रश्चात्रत्रश्चात्रश्चित्रश्चात्रश्चित्रश्ची भूत्रश्ची प्राप्त विष्टि भूत्रश्ची प्राप्त विष्टि भूत्रश्ची प्राप्त विष्टि भूत्र विष्टि भूत्र विष्टि । गिहेरागिते प्रिंत प्रति हैं विश्व श्वाप्त स्थित । विश्वेष्टि स्विम श्वेष्टि विश्वास धेव हो गडेग हिरेश यायोग्यायाधेव यदि ही र दर्ग गर देवे नश्चनःसरः ग्रुःनदेः रेग्रामः हेर्द्रः दशुरः हे। देः षरः दर्दे ग्रिष्ठेगः हः रेग्रामः वमेग्रासाधितर्वे लेवा वरे सूर्वा पराष्ट्रिया सर्वे रामाधित के वि क्षुत्रःष्परःनक्षुत्रःग्रुःसेदःसःद्दः। देःत्रसःमाव्यःसःदः। देःद्दःसमायःतः यापदावह्यापरादेवाग्रीयार्यो वरादेयापराग्रेवे । इयापात्रस्य याउदार् विविधारा उर्व साधिव हैं विका क्रमान हैं निर्मा विवास है सब दापका सुमका व'वे'ने'न्रायाय'न'धेव'म्रायम्य'न्याय'न्यायुर्ने न्रोर्न्व हे'न्याय'स्दे खुराउदायाधेदायदे ध्रिम्हॅियायम् होदायायधिदाहे स्याद्यम्यद्वयया निवन्तेयात्रानाक्षात्रेर्वे । ने निवनिवन्तानम्यास्य तुनायात्रानायाया र्टायन्यायान्यान्हें न्यराद्यानान्ते स्वायानाः ग्वितः धरादर्वे नः स्रे। ग्वितः क्षेत्रा श्रास्त्र स्थरः नावनवः विगाः पुः सः वर्षः ग्रीः वर्रे त्यात्रे सुर्वा उत्राधित प्रवे भ्रित्र विकाश्चाना वा स्वा मित्र विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास क्षेत्रायाणी भ्रेत्रान्दा केया नरा हो दाया या धेवा वे या हा ना द्या नव वा निर्मेत्र लर.लुच.हे। क्रूर.विश्व.धरश.स.र्टर.ख्याक.यह.हीर.र्स् । वि.क्रे.लट.टे.श.

गुनःमःहेनःन्दःवनायःनःहेनःमहिषःगानःवगुनःवने। न्यःनउवःनवेःश्लेवः <u> ५८.त्याक.य.क्षेर.र्या.लुच.धे १ क्षेत्र.य.क्ष.चु.र्याक्षेत्र.या.क्ष्या.क्ष्य.र्</u> वनायानरावश्चरायादे। यदानेना विकाशी हो दाया से त्या सूराया वदेनका धरावश्रूरारें वे व दे भ्रान्य राश्रान्य राषा राष्ट्री माया हे हो दारा रे वे र्से रा न'नबित'र्'वरेदि'र्केश'गवित'वगवाय'न'हेर'ग्रेश'र्झेत'यर'ग्रेर'त'ते'रेर' षरः सः गुनः पंते दः दः निहें द्राय दे हो। द्राय उत्य विः श्रुवि षरः। देः नवित्रः भेता देरः गुनः पर्वे अवदः यश्या गुनः पर्वे देतं हेरः नविता दशः र्धेग्रथः न्दरायायः नवेः श्रुवः गाव्वकं केनः गाठेगाने नाईनः नुभेनः ने । छिनः यः र्रे त्यः क्रें अः वाववः स्टः द्वरः ठवः द्रः वाववः द्वरः त्यः श्रें वायः यः त्ययः धेवः नयायायायायायार्थेवायायायेत्रायाचेताः वियाग्री श्री राजादी द्वीरादायाया नश्रुव रें प्दे ते नश्रुव रें बिश ग्रुप्त श्रुप्त । याद प्दे प्य ग्राद्य रहत ग्री श वे पर्ने अन् न् नर्हे ने । पार्डे ने वे कु यथिव हे। ये यय पाउव यथिव यदे हिर्देखेश हु न सुर्वे । दे या यह न स्था न हे मार्डे में यस मान्त याधितामवे भ्रिमा शुक्र सें मास्य धिकामिं विश्वा शुम्य विश्वामि सामि स्वा विश्व विश्व *য়*ॱ८८ॱয়য়ॱয়ঀয়ॱৡ८ॱ५ॱॾॕ॒८ॱय़ৼॱॻॖ॓८ॱয়ॱवेॱख़য়ॺॱয়ॱৡ८ॱ५ॱख़ॻॖॗৼॱॺॱढ़ॕॿॱ ग्रम्। दे निविद्यस्य दे दे दि दि व विष्य स्थाप निविद्य विषय स्थाप निविद्य विषय स्थाप निविद्य विषय स्थाप निविद्य विषय स्थाप निविद्य स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप नर्ज्ञेन'मञ्जून'मर्राचेर'मदेरिष्ठेर्रार्चे । गुन्रामदेरस्रवदर्गदावावानदेरिष्ठेर वेशमार्वे संधितर्दे । । यारायाञ्चनशास्य स्वानियाप्य नियाप्य स्वानिया धिरके नर वर्गे द्रायं के अन्य द्राय स्ट्री द्रेर व नद्रा के क्या

राधिताहे। सुराधरामान्त्रायधितायदे द्वीराने राष्ट्रात्रा । वर्देरः पर सुरायरा ग्वित साधित राष्ट्रेर यया नित्र मुर्देर सादे सा धीव हो तदी भूमा अदेश सम् त्यूमा नाम नी श्रेम तदी भूम हना सव्य यविद्यायः स्वीत्रायः नद्दा से ह्वायः त्रुस्यायः स्वीत्रयः वाहित्रः गायः सुर्यः यशग्वत्याधेत्रमाहेत्यार्वेत्रम् वित्रित्रम् विंद्याने से हमायाधीय विश्वान्य हिंदा स्थान होता हिंदी है रायने सारे शाया यश्चन्त्रन्त्र्नुन्यः धोव्रार्वे । विश्वनः ग्वन्तः ग्वन्तः स्रोतः स्राः श्वनः स्रोतः । धेर्न्यञ्चन गुन्द्रस्य द्धर्याय हे। देरेर्न्य ञ्चन्त्रा हे रेगायर गुन्य स लेव.सप्त.हीर.धू.यहोव.वू.एक्.ची.य.के.ची.व्यी वित्रेर.लट.स्.त.र्या.सर. ग्रुन्यः अधिवः यदिः या प्रवाद्यः स्वाद्यः स्वादः स्वतः स्वादः स्वतः स्वादः स्वतः स्वादः स्वादः स्वादः स्वतः स्वादः स्वादः स्वादः स्वतः स्वादः स्वादः स्वादः स्वतः येद्र-मःहेद्र-ग्रीशनसूत्र-ग्रु-द्रित्र-ग्रु-द्रित्र-ग्रु-द्रित्र-प्रदेद्र-द्रितः नश्चनःग्रुन्दः अर्द्ध्दंशः धरः दशुरः र्रे । याववः रु. हेंगः धरः ग्रेनः रो र्रोः यद्रायान्यस्य विष्याद्य स्तर् स्याच्या स्तर्भे यात्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त हिन्यरसेन्य भेत्र कें लेखा भरान्य स्वाप्त हिन्य हैन से के या वि समुद्रायाम्सस्यायनु सराधे । । वस्य राउट् १५ देवे वा पाने साधिदार्वे। धरसेन् प्रदेन् भे दे साधेव दे । दिव ग्राम् पर्ने स्माम्य प्रदेश प्राप्त प्रदेश प्राप्त प्रदेश प्राप्त प्रदेश प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्र प र्दे। ।रेदेः ध्रेरः अः गुरायायवादः विवाः अः धेरः ग्रीः वाह्र विवाशः क्षेरः सूरः वः

यात्रा हे 'दे अ' सम्मान्ना निवे 'दें त्र दु 'हे अ' हैं द 'सम्माने द 'हे 'दे 'हे 'हे 'हे अ' हैं द 'सम्माने द हैं प्राप्त हैं द 'हे ह 'हे ह

धेव धर र दूर है। गानव के गाया गी देव र दें ते या गुरा वे वया वे या इया षरःनश्चनःसरःग्रःनःहेरःसःग्रुनःसरःनाईरःरें लेखा देःस्वने नाहनः क्षेत्राश्राभी में तर्रायायायर प्रमूरा मुनारार्श्वेत्र न् पर्मे तर्रायाया नश्रूव पर जुर्वे वेश जु न पर्ने पाने प्रजेष परि त्राव र र न र त् जुन परि विश्वास्त्रित्यम् नुर्दे । वित्यायाधिवायावी सेत्याये से संस्थाय साधिव दे। *ॸॖॱ*ढ़ढ़ॱढ़ऀॸॿॖॸॱॳॵढ़ॱय़य़॓ॱॿॖऀॸॱॿॖॸॱय़ॸॱॼॖॖॺॱढ़ॺॱॸ॓ॱख़ॱॸय़॓ॸॱॿॾॕॸॱ या गयाने मुख्य भेता वादी हत्या नाय नाय वादी माधिव के विश्वा नाय होती डे·श्लेप्पर : वेंद्र स्वाधित : यदि : या हुत : क्षेत्र स्वाधित : या स्वाधित : या स्वे : वेंद्र : वेंद्र : वेंद् गिहेश उत्र मी गिहत के गारा दे हो के सार् प्रमुस में हो ने हो गार्थे दारा अ'भेर,'रादे'गान्द्र'क्षेग्रयायायोद'ने। ॲंट्र'रा'य'भेर्द्र'यादे'से'हेंग्रय' र्शे। ।दे सूर वेदाया अविष्य राष्ट्र अपने या पर विश्व राष्ट्र यो विषय श्री राष्ट्र राष् नर्ह्हेग'स'धेद'दें।।

दे निविद्य नु त्यायाया नि त्या ने स्थान स्यान स्थान स

यदेन प्यान श्री न स्यान स्थान स्थान

## न्ये न्दरन्ये स्ट्रस्ट्राच नह्या यदे खे तु स्ट्रे निवा

यात्रस्थात्र्वात् । याद्यात् । याद्यात् । याद्यात् । याद्यात्रात् । विष्णायाः स्वात् । याद्यात् ।

कैंशसबुद्राधरागरिदाक्षेत्राचारार्स्रियानायशा बुद्रानारे के ह्या र्वे विरानभूत्रत्ते के राधि समुद्राम्य गुरामित्र से ज्ञानरानभूता गुःसेरा यायासेन्यराङ्ग्रेत्यरावयुराने। यान्त्रक्षियायाने हिन्यसूर्या स्थान यासेन्यरानसून्याधेनार्वे । साधेन्यन्यायाचिरान्या ।ने निवन्यक्ति केन् सेन् त्यापन्। । ने सूर स्याने सापिन पर निवान पर ह्या पर के राया सुर्यापर के रायी समुद्रापये प्रोप्ताप धीद दें। याया हे । धर हे न भून हु न्दर थून भने नाहन के नाम नाहे ना न है न भग नहि साम सन्तर्विः स्त्रिम् राविष्ठात्वः विष्ठात्वः विष्ठात्वः स्त्रितः विष्ठात्वः स्त्रितः विष्ठात्वः स्त्रितः विष्ठात्वः सन्तर्वः सन्तरः सन्तर्वः सन्तर्वः सन्तर्वः सन्तर्वः सन्तर्वः सन्तरः सन्तर्वः सन्तर्वः सन्तर्वः सन्तर्वः सन्तर्वः सन्तरः सन्तर्वः सन्तरः सन्तरः सन्तरः सन्तरः सन्तरः सन्तरः सन्तरः सन्तरः सन्तरः सन् धर-त्राग्री पर्ह्मिण धायाया है साधित है। । वाया है पर्दे भूर तुसाया दिसे र निर्देन'म'ने'क्ष'न'ने'हे'क्ष्रम'गहन'कैंग्रान्त्रुन'ग्रुन'क्ष्र'म'ने'क्ष्रम नश्चन ग्रुन ग्रुन केंग्र न्द्र थ्रुन प्रमायगुर में लें न साधित है। नहें न प्रमा

भ्रान्तिः भ्रान्तिः न्यान्तिः न्यान्तिः न्यान्तिः न्यान्तिः न्यानिः न

गवराधरा अञ्चर्भारायाह्याययम वहेवाराययावहेरावन्य क्षेत्रत् । यदेरके हे अःशुःनहें त्रु अन्य । । अन्निन यदें त्र अव अस्त अ हेशवर्वे । पायाने केंश्रासमुदाराये क्षेत्र वारासाम्याम् सामाने हिना में विका वर्गुर-र्रे । दे निवेद र् केंश्रिश्य श्वर्यं से देश मार शे ह्या य दे श्वर मदे लेशमाधेत्वत्ते ने स्वापर हो ह्या माहिता है न नु न हुन मा वर्गुर-र्रे । अ। विन पदे हैं यानायश वुर न हेर या गान्त केंग्र यो हैं त ने न्वाः वेन्यम् वर्षम् ने । श्लिषाः वर्षेषा वर्षः म्वाः संकेन्यः । वर्षः वर्षः वर्षः वगः तुः त्र तुरः नरः धरः त्र तुरः रें विश्वः यः वे श्रेष्ट्र विश्वः वे विश्वे श्रेष्ट्र वे विश्वे श्रेष्ट्र वे र्थित्-तुःक्वाःस्त्री गायःहे न्यूत्रुतः चुतेःमें न्यः चुत्-सदेःह्वासः चितः सरःसेः क्रेंत्रत्रते त्रे म्ह्या प्रायमायाव्य प्रायाप्य स्थित प्राप्ते हिताया स्थित स्थित स्थित स्थित स्थित स्थित स्थ गुः सेन्याया सेन्यिति सामार्द्धिन स्थाया । ने से प्यान सि स्थाया उयाधिवावावी:तुयायायी:ह्यापारेट्राग्यादार्हेत्यावायया ग्रुटावायेट्रावायी: वर्तुर नर वर्तुर नरावा दे ही रेवा ही देव वा है राय वे नहें न्यर से नुर्वे । विन मं हे न् ग्रे नाह्य के नाय न सुन नु हे या शु सुन र्ने लेश नाई दायर नुहें।

वदेवे मान्या भूनया शु ने 'दें न ग्री 'भुगया मिं न्या न भून ग्री ये प्राय यागित्रक्षित्रायास्य स्ट्रिंग्यालीयास्य स्थान्त्रायास्य स्थान्त्रायास्य स्थान्त्रायास्य स्थान्त्रायास्य स्थान्य र्श्वेर्न्य दे से नुर्दे । याद मी के दिये या है रागा श्वेर प्या ने दि के दे वु:बेद'रा'व्यंबेद'रा'तक्षृद्र'रा'धेद'राक्ष'वदी'क्षूद'रु'ष्पद'नक्षुत्र'तु:क्षुत्र'र्यंद' हो ८ . राष्ट्र मिया अ. क्षेत्र अ. अ. शुत्र पा ५८ . पा च का पा भे ते हिं । ये मे से १ चुर्वे । ने सूर पर गहत के ग्रा ग्री न भून ग्री में सारी भून परे त्योगरा मित्रे देव द्वा प्रश्ने देव प्रमेषा मित्रे देव देव के स्व प्रमेश कि । सम्म स्व प्रमेष र्धेग्रयायार्षेर्पार्पार्वयात्रेयागाः वियास्थ्यायवे स्थितः स्थितः स्थितः वित्राप्ति । विदेशाने वि ग्रीशनसूत्र पदे भ्रीम में । दित ते पदित से मानस्य सुत पदे भ्रीपाश पितः याः प्रिंद्र हे अरो अर्थर मा बुद्र न्य र हुर्दे ले ता दे स्थान हे अ बुद्र स्परि हुँ मा अर मिं त'य'र्धेन'हे अ'राअ'क्षे'अ बुत्र'रादे हिंग्य अ'या अ बुत्र'रादे हिंग्य अ'क्षेन्'रा क्षेत्राचमामामा विवास स्वयुक्त निष्टित्र द्वा त्ययुक्त स्वा । दे से दारा वा से दारा बेद्रायाक्षेद्रायाबेद्रायाधेदान्त्री के सम्मन्त्री वासान्या सेद्राया स्वर् श्रॅमश्रामाने साधित हैं। । ने निवित नुवित मामिन स्वामान स्वामाने से निवित निवित निवित स्वामान र्वित्रसेट्रप्राधेत्र श्रीमाव्रवायात्रे साधेत्र हैं। । से समुत्रप्रे से से सिम्सान सुन वुःर्वो नरः वेदः दं रे रया दः या हदः केया यः दुः या यः वयायः यः द्रायः यायः व ह्रे। थेन्-निव संदे द्यायान निव के या अ हेन्-नु दकन साने न्या हेन्'न्'न्यः प्रक्ष्यः प्रश्रुम् प्रवेशक्ष्यः स्र श्रुवः प्रवेश्यहेन् प्रवेश्यः स्र स्र प्रश्रामः । हेन्'न्'न्यः प्रमः प्रश्रुमः प्राधेवः क्ष्यः स्र श्रुवः प्रवेश्यहेन् ।

दे खासुका उदाका धीदाया है दाहुवा या खाकोदाया धादा धीदा यदे दिका र्रे विश्वास्त्र विश्वास्त्र स्वाप्त स न्देशसंख्यार्थेवियामनेयाधिनर्ते । निःसून्त्र्याय्यार्थः वर्जुरर्देखेशजुर्जा है सियानायशा जुरानादर्। के ह्या या है दाहेशा हु। वर्त्रेवायविः श्रेरः भ्रेष्ट्रवाः या सेर्प्या वा प्रवास्त्र स्त्रेत्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र गुर्दे। किंशासी समुद्रापदे प्रदेश देश हुना याया पें प्राप्ता प्रदेश सिद्राया १९८७ वित्र के विश्व अप्तस्त्र की विश्व की विश्व की विश्व की विश्व की विश्व की विश्व की स्वाप्त की की की की कि ह्यार्चे विश्वास्थित रुष्या विदेश्यस्य स्वाप्त व्यास्य स्वास्ति रुप्त रुप्त न्यानरुयामानेन् ग्रीयाया ग्रुयामानेन् न्यूनाया धिवार्वे । निःश्वान निःगनेनः য়৾ঀ৾৽য়ৢ৾য়৵৽য়ৢ৽ঀয়৽য়৽৸ৼৼয়৽৾ৼয়৽য়৽য়ড়ৢয়৽য়৽য়য়ৄ৾ৼ৽য়ৼ৽য়ৢ৽য়৾ঀ৽য়ৢৼ नर्हेन्यरक्षे नुर्दे । रेरेर्य्यहेन्यने अधिन ने । देरवयानर वसूर नशःश्री । दे भ्रान ने प्रदेगा हेन प्रदेश हैं रान हे शाशु न हु दान शान है दा छै। नश्चन'नर्-नु-नदे कें राहे सूर-नदे ना हत कें ना राग्ने अकत हे द ते अपीत है। अरेशस्य वयान्य वर्ष्य राज्य विष्य विषय म्याया विषय ग्राम न्मेदे के मा मुन्य स्था देव में मालव के न मालव यात्रवरक्षेयायाध्येवरमदेरश्चेररह्मयायात्रेयरहेटर्ने वियायहेटर्ने । निःक्ष्या धीव'व। श्रव'र्केट'दर'वे'छिद'सर'हेद। ।वमाय'नवर'श्रुव'हेद'हेद'र

वशुरा ।रेररेरमिष्ठेर्यामायानिहरम्। ।रेर्यात्रर्मरमहेरमिष्ठेरासुःह्य गयाने कें रास बुदायां हेरा हेरा सरा होरादा है। सेरायायर प्रमूरा से लेखा . बुद्रास्ट्रिन्याह्रद्राक्षेत्राक्षात्रुः देवाकाराः भ्रोतः देवा । वावाहे स्ट्रिकास बुद्राः राक्षेत्राह्म्त्रायरा होत्राव्या विश्वायरा हा विष्या विश्वायरा होत्राय बॅरासाधिवासरावशूरार्से । विःक्षेषाविषायाः हिनासराधीः होनावावीः नेषा समुद्र-पदे-भ्रिन्। साम्याक्षे विश्वास्य स्वासाम्य सम्बद्धाः स्वासाम्य सम्बद्धाः सम्बद् नदेः ध्रेरः वनायः नरः वस्य रार्से । देवे ध्रेरः नर्देन से अः नर्याहेन सेवेः र्द्धेग्रथःग्रेथःदग्रथःन<दरःखःदेथःयःग्रहेथःग्।न्रहेदःधरःग्रहेदे। ।दनदः विगाः हुः इट वन् युन राष्ट्रिन न् र्यक्त्र ना धेन हैं। । या ना स्पन सुन ना विगाः नर्हेर्यश्यायम्भूना होर्र्ययुरिते। भ्रानिवर्र्रेन्याहेशाहेन्याया धैराग्राण्यार्द्राचाविवायीयाविश्वात्रिश्या वश्वराधिरादेवाची श्वाया ग्रेशमहेशमहें द्राया धेव दें।।

र्देश हे अर्थ द्वा प्राप्त प्राप्त प्राप्त के प्राप्त

हेश्राश्चात्रवात्रम् । बेत्राश्चात्रम् अत्वात्र्याः अत्वात्रश्चात्रम् वित्रः श्चात्रम् वित्रः श्चात्रः श्चात्रम् वित्रः श्चात्रः श्चात्रम् वित्रः श्चात्रः श्चात्रम् वित्रः श्चात्रम्यः श्चात्रम् वित्रः श्चात्रम् वित्रम् वित्रः श्चात्रम् वित्रम्यः श्चात्रम् वित्

देशन्यावन्तः श्रीः भेशायमायदे द्रायाया श्री वाशाय विषय वा विष्ठः विष्यः विष्ठः विष्ठः विष्ठः विष्ठः विष्ठः विष्ठः विष्ठः विष्ठः विष्ठः

ने स्वादित्वा हैन स्वाद्या अस्ति व्यव्या व्यव्या स्वाद्य स्वीत्र विद्या विद्या स्वाद्य स्वीत्र विद्या स्वाद्य स्वीत्र विद्या स्वाद्य स्वीत्र स्वीत्र स्वीत्र स्वीत्र स्वीत्र स्वीत्र स्वीत्र स्वाद्य स्वाद्य

दे: द्वा की शक्ते द्वे कि स्व के स्व

क्षेत्रभाराक्ष्यां अध्याप्त स्वाद्य स

यर त्युर्र्से ।

यर त्युर्र्से वे व ने वे या प्रवे के ने या प्रवे ने या प्रवे

श्रुदे रेश सर नमूत्र रास गुन प्यार है। वि से नुसरा या र्राम्य निवरभे ह्या संधित श्री वयायानिय निवर मुल्या सर्वे वेया संवे या धीत हैं। वेशनश्चनायरा गुर्गार्ड्या हे प्रमायहत्या प्रमार गुर्गे देश द्वा स्थायत्य वःश्रेष्राश्राध्यश्चर्यात्रश्चरार्वेदार्येषाः धरादेः विष्रा सप्तिन्ते। वे से नसून हिते हो ज्ञा हे नर वहवानर हो र पदे स्वा से ह्याक्षेत्रयायायार्थेवायायाविवार्वे विष्ठा देष्ट्रवायारक्ष्यातुष्यार्थेवाया यायमार्येषायदे तुमाय हेर्न्य इर्म्य विद्युर्मे विश्वत तुः इसाय वस्र राष्ट्र प्रतासिक स्था निया निया स्थान स नः अधिकाते। अःह्याः पाकेन् उद्यान् अन्वयः नः धिकः पदिः द्विनः ने । ने ः सूनः के नर वहवा नवे दें त इससा बससा ठ८ ५ से देवा सार्शे विवाद है । पाया है । पार *ॻऻढ़ढ़ॱख़ऀॻऻॺॱढ़ॆॱऄॖॕॻऻॺॱॻॖऀॱख़ॕॺॱढ़ऀॸॖॱ*ड़॔ॺॱऄढ़ॱय़ढ़॓ॱॺॖऀ*ॸ*ॱॸॗऄॱढ़ॆॱॻऻढ़ढ़ॱ क्षेत्राश्राभुद्भितायश्रास्त्राश्चाराभ्यायम् । विष्युम् में विष्यु विष्युम् ने विष्युम् ने विष्युम् ने विष्युम 

न्तुः अत्याक्ष्यः भूत्रः भूतः व्याक्ष्यः व्याक्षः व्याक्षः व्याक्षः व्याक्षः व्याक्षः व्याक्षः व्याक्षः व्याक्षः व्याक्षः व्याक्ष्यः व्याक्षः व्याक्यः व्याक्षः व्याक्य

न्तर्ति।

निह्न क्षेत्रायान्य स्वार्ति स्वार्ति

चीयःतःश्रःश्र्यःयाद्वःयाद्वःश्रः व्यायायःयःश्रः व्यायःयःयः विश्वः श्रः श्रः व्यायःयः श्रः व्यायःयः श्रः व्यायःयः श्रः व्यायः व

याक्ष्यात्र । क्रिंश्याः सम्वाद्धः विष्णः विषणः विष्णः विष्णः विष्णः विष्णः विषणः विषणः

गायाधेर्द्रदे दे द्वरहें या नायश तुरानदे हिरा के ह्या में विश्वास निवर र्अःहण्यिःधेरःईवारायमानुहारेविमानुपरावन्तरार्वि ।देवेधेरा गहरळेग्राने हेर्न मुना गुर्द विया पर हेर् नर होत्। क्रिंश सर्वित द्या हो श खेव हिना ही। क्रिंग र क्रिंव रा प्या स धेवा । शे ह्या याया यहेव या उस हे दारी सामा हवा के या सामी से प्राची या व नश्रुव पर तुरु पर वे साधिव वे । दिव श्री शामानव पर नहें दि हे वा वि ख़राग्रारार्क्टियानायया तुरानारी क्षेत्रमानी बियानहें नामिता क्षेत्रमानी क्षे ग्रीशहेंगारायासेन्दें विश्वासर्हेन्याधेवर्वे विता ने क्षिवं वे पारा ने क्ष्र-भ्रे अश्व शुँग्राय ने निह्न भ्रे न्या निव श्रीय में व वे निश्चन ग्रु ग्रु न स् वर्त्यात्रात्रेयायाले यात्रात्रात्रात्रेयाचे वित्रात्रीया वित्रात्रीया यन्। अःसम्भन्भवःम्। विश्वनःमःम्भनःस्यः भेवा १८९ १६८ ह्वा पा हैया न त्य अ सा गुर हैं विश्व सून प्रवे से विश नश्रव राः हैं या नायश तुरान हे ना शे न सा हिना या है नाया तुना या है। दुरा बना ग्रारा यर्देरर्दे।।

म्यायाम्यान्त्रः स्वायाः केन्द्रा हिंयान्य स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्व

क्रियानायमामानुहानाद्वाहम्यापाद्वाप्यम् द्वार्यम्य स्थित्। नरः परः वशुरः र्रे । देः क्षरः हगः यः हैं यः नः यशः शुरः नः सः धेवः वे रायः नवित्रः र्रें व्यानायश्या सुराना ह्या पर्वे विश्वाने व्यून प्याप्त हो दे र्भे ।दे सूर पर वर्षे द या साधिव हे दे दर से समुक रावे में वा राव गा हु बेन्द्राक्षेत्रवृद्द्रवित्ववेषावाधिन्द्राक्षाधिवादी विद्वानित्वेषायाः याते से नात्र से प्रतृतानि प्रतेषाना से नामाने वे से माने प्रता से सुतानि र्द्धेग्रथःदग्राग्रीयःवर्द्रेवःचर्द्धेयःचर्हेदःयरःधेःचुद्रि विदेःभ्रदःद्य ह्येंद्रितः <u> ५८:तुस्रामाकेन के सामुजनाक्षामुजनामिके दिन के ५ के ५ के सामिक स</u> नर्हेन्यया वर्नेरव्रोययार्स्य नर्हेन्यवेन्ने धीत्रवे श्रीरदेशयर नश्रुवरमञ्जूनरमदेर्देवर्तुः धेवरमने अवर्तमे स्ट्रूनः श्रूनर वितर्र देवा असः याधीवार्वे।

त्रीः अतः तुः वातः हवाः याते सेवाः यतः श्रुः वाः याधिवा है ति याते हितः यतः श्रुः विद्याः यतः विद्याः यतः याधिवः या हितः विद्याः यतः याधिवः या हितः विद्याः यतः याधिवः या हितः विद्याः यतः याधिवः विद्याः या विद

याव्वराधरायात्याते दिये अर्थे वर्ति । श्वर्ताय स्ट्रीत स्वाप्ताय स्वापत्ताय स्वाप्ताय स्वाप्ताय स्वाप्ताय स्वाप्ताय स्वाप्ताय स्वाप्ताय

ने यस ग्वन पर्वे के स हे हिंग्स पर हिन्दे से न हैं। । न में क्रिंस पर पर गुनःचवे के राने निर्ध्व पर निर्दे निर्धित मिराया वहे गा हे व पर नन्ग्रायायि क्वेंन्ट्रिया अध्वायाये निया भीता के विष्या के विष्या के विष्या के विष्या के विष्या के विष्या के व हेट्डि:रेग्राय:याथेव:हे। इयाग्रद्यायाग्री:श्रेरःयव:यग्राव्ययाःवययःउट्गी: नश्चनःयरः ग्रुःनवे र्के अ हैं ना अ य छे द । इस ग्राद्य र अ जि य अ व र दे 'हें न यर र वुर्यामायाधीवार्वे। १दे छिदाग्री श्रीमाधारामाठेमाछिताछिताम् । धरः गुः चंदे रे के शद्रा सम्बद्धा के शद्रा सम्बद्धा सम्य सम्बद्धा सम्बद्धा सम्बद्धा सम्बद्धा सम्बद्धा सम्बद्धा सम्बद्धा केट्राच्चन'यदे'धे<u>र'य'</u>दे'यशपाव्द'यदे'ळॅश्'दे'हॅग्रश्'य'केट्'दे'सेट्र'यदे' धिरःर्रे। । यदान्युनायराग्चानवेः र्क्ष्याद्दाः समुन्याययाः र्क्ष्यादेवेः विश्वास्त्रीत्र मुन्ना नुति के शं उदार्दे विश्वानु निष्य ने प्राप्त निष्य ने प्राप्त निष्य ने प्राप्त ने प्राप्त <u>พราทุธิพาทานพาธิพาธสาธิราราวฐราฏารัสาธิทพาราฐีพารานพา</u> वे अ भेव वे । । गय हे हिंद ग्रेश न सून पर ग्रुन पर ग्रुन पर ग्रेन पर क्रॅंश-८८-क्रियाचे द्राचे त्या अन्त्र विष्येष्ठ विष्येष्ठ विषये विष्ये विषये व गुर-रगानी अह्या नरू अर्थाय अर्थ सुवायर गुर्वि रेवि हैं गुर्थ सर्थे त्यःशं वियः सूरः नहें र विवः हैं।

मालवर्त्रुः वर्ष्यिरः के अः अश्रुवर्धिरः निष्ये र निर्मे द्राय्ये । मालवर्त्रुवर्षिरः निष्ये अः निर्मे वर्षे व त्रुः अः धेवर्षे । मालवर्त्त्वाः विः के अः निः हिंगा अः यः छेन् र निषेत्रः निष्ये र निष्ये र निर्मे द्रायः । धेवर्षे देवे अः श्लोनः निर्मे निष्ठे निर्मे ।

दे'ल'णर्। नश्चन ग्रुदे केंशन्र श्चर शे ग्रु । नर् गे श्चर हे नश्चनः मरः ग्रुः नदे रेके अन्दरः अश्वनः सन्दरः । के अन्दरः भे अश्वनः साधारः हे। दे में निर्मे हेर्प हेर्प अर्थे प्रमेश हैर में । ज्ञार या प्रमेश मार मी यार विया प्रश्नुय प्रस्त शुर्विक राष्ट्र श्रुर प्रस्ते श्रु विष्ठा यार रहे श समुद्रामितः निर्मेर निर्मेन स्थान स्थान स्थित स्थित स्थित स्थान स्थित स्थान स्थित स्थान स् नश्चन'मर'तु'नदे'तुश'म'हेर्'य'र्सेग्रामश'र्केश'र्र'स्र शुद्र'मर'श्चर' नर्भः नुर्दे। । नुस्राम्यादे निस्त्रुनः नुस्रामाया सैन्याया सेस्राम्या सेस्राम सेस् समुद्र-पःतुस्र-पदे-नङ्ग्व-पर्य-तुःनदे-केंशःहेन्।सःपःहेन्।से-तुःन-न्नःहोन्। रासेंद्रियन्ययाययाधे दान्नी कें या विदार्धे दाया से वाया या या निवार नुदे के अन्दर अनु व स्थित के विष्या महिका में प्या नर्हेन्-न् नसूत्र-भवे-सेर-न्या-यी-क-न्या-हेन्-हस्या-भाषीत्-भयान्धेरः नर्हेन्ग्यरम्भाषायायाधेवार्वे । द्ये नर्हेन्यायार्थेयावयावी । देनविवा र्वे विश्व हेर हुँ र न। । नश्चन ग्रुप्य पर दे नविव विश्व । हे नर हुँ र न रेग्रायायायीत्। । पर्ने प्यायराने निवेदार्वे विया ग्रयायि श्रीते हे परार्श्वेर नवसनेवे हो ज्ञाणीव पर रुट हो। देवाय या या यीव है। । वसय उट ही। श्ची वे ने ने निव के विश्वास्त्र प्रमासे विश्वी मार्थे ।

माया हे 'हे 'ख्रु' द्राया हो 'या से 'बिमा हु सा सा दे 'हु सा सा ख्रुं हु से 'ब्रिस सा ख्रुं हु से 'ब्रिस से 'ब्रिस

ने त्था साथित त्या हिन्य साथेन स्थित स्थि

देः यानाया हे द्वाचा पाना है सामा साम है साम है साम साम है स

राधिवाने। न्रामी श्रुश्चिमायमा त्रुयाया हिनाधिन । या वितासी वित्र श्री वित्र ॻॖऀॱॺॊ॔ॱॾॣॸॺॱख़ॕॸॖॱय़ॱॺॱॺ॓ढ़ॱज़ॸॱॸॖ॓ॱॸज़ज़ॱय़ॸॱॻॖॱॸढ़॓ॱॸॕढ़ॱॸॖ॔ॱक़ॕॺॱऄॱ सबुव माने नरार्श्वे रानरा हो दादे । साहु सामा दि । सुव । से ना पुर हिना माने दा <u> न्यायाः सर्ग्यः निवः निवः निवः स्वारं स</u>्वारं स्वारं स् गहेन रेंदि हैं गरा ५८ ख़न राधिन हैं। किया समुन पदे हैं निया हुया रा हेर्गी असी ह्या अहेर् हेया अस है। से देश या हे द से देश हैया अह्या महिद्राद्र स्वराधर प्राचाद मी अप्योग असर होत्। हे स्रे प्यदास गुन पवे भ्रेर ह्या प हेर या के रा से समुद पा रंस गुर ह्या पा हेर वमोग्राश्चर्तिवा ने स्वाप्ता हिन्स् स्क्रीं वश्रामाने रावसूना गिया ने·ळॅंशःसबुद्रायायाचेईदायराष्ट्रदायराष्ट्रीःक्षेष्ट्रयायदाके से देशे महेत्रसेति स्मार्या स्वाप्त क्षेत्र किया हु कु नायनी मार्या धित समाय कुमाहे। <u> नियम्बर्धित स्वरिष्ट्रीम श्रुर्धित स्वर्धित स्वर्धित विश्वराष्ट्र सुर्दि। ।</u>

तुस्रायाः सँ वास्याः से हिं वायाः स्थाः सहत् यायाः से द्वायाः स्वायः स्वयः स्वयः

याध्येत्ते। वादादे स्थेद् साथ्यस्त्र ह्यास्य स्थित् स्याप्त स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्याप्त स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्याप्त स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्याप्त स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्याप्त स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्याप्त स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्याप्त स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्याप्त स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्याप्त स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्याप्त स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्याप्त स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्याप्त स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्याप्त स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्याप्त स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्याप्त स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्य स्थित् स्थित् स्थित् स्य स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्य

ने त्याधान स्वायत्त्रे स्वाई न्यते हुँ स्वयः विष्णं विष्णं हुँ न्या विष्णं हु

यायाने नियास्त्री सुन् श्री भिवास्त्री यान्त्र के यास्त्र श्री यास्य स्त्री स्त्र श्री स्त्र स्

र्द्धत्यागुरुष्यान्त्र्याय्ययान्ते प्रत्यास्य क्ष्यायाः विष्यायाः विष्यायाः विष्यायाः विष्यायाः विष्यायाः विष्य

## ग्वित्र शेषा नह्या मदे खे तु हे खू म

देवे श्वेर हे शशु द्यमा य त्यश्य प्राप्त स्था वित्र हो । वाद त्य त्या वे प्रस्त स्था वित्र हो । श्वेर प्रस्त क्षेत्र क्षेत्र

नर्हेन्यम् नुर्दे | मे लेगामेग्राशाश्ची श्वाणित्याया श्वाणित्याय श्वाणित्य श्वाणित्य

म्बिन्यान् विष्यान् स्ति हैन् हिन्द्र हिन्द्र

स्राप्त विकास के स्वर्थ के स्वर्थ के स्वर्थ के स्वर्थ के स्वर्ध के स्वर्थ के स्वर्ध के स्वर्थ के स्वर्ध के स्वर्थ के स्वर्य के स्वर्थ के स्वर्य के स्वर्थ के स्वर्य क

वर्त्रेयामन्त्रे मिर्देवास्य निर्मात्रेयामन वर्ष्यम् निर्मा स्त्रेयाम स्त्रे प्राप्त स्त्रे स नश्चर्यायार्श्वम्यायाविवाम्बन्धीयोग्यास्त्रेत्रास्त्रीत्रि ।देवेरिष्ठेरा वर्त्रेवायारा उत्राची के या ग्रीया वर्त्तेवायाया नहें दायरा ग्रीया धीतायदे भी रास्टा गी। केंशाग्री है प्रत्रेया प्रदे हिंदा प्रस्ति होदा प्रदे हुदि है शार्षेदाया साथित प्रस अर्कें द्रायश्वा वर्ते 'धे 'रेग्रथ' ग्रें श्वा धेश दी । नर्हे द्रायर ग्रुं न हे द्राये वन्। ।वावान्वाने। विन्यम् की श्वान्यम् विन्यम् विन्यम् मुन्द्रा वर्षेयासराक्षानवे मुन्द्रा भे विषयासवे मुन्दितास्य ख्रुन पार्ड अपि हिंद प्रमानु दि ले अपे ने में प्रमान के <u> व्यवः भेवा । ने व्यवः अराह्यः श्रीः स्टावीः दे से संयोधः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वर</u> न्नुयादयाद्यावेयान्द्राची न्द्रयासुन्नेयाप्यान्यान्य वःश्रेष्यश्चादेः बन्दन् श्चे न्द्रवेदः यदे श्चे र ने हेदः बन्दन्यः हेदः वा वि समुद्रायाधिदार्वे । सेदायाद्राया मुस्राया न्याया दे यादी समुद्रा यक्षेत्रः व्यान्यः व्यान्ते । प्रदेश्यान्यः स्यान्यः स्यान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्व नर्हेन्यर ग्रुज्य ह्र अ ग्री विद्यम्य त् ग्रु अ त्र अ नर्हेन्य वे श्री र से । विद्य मश्राह्मश्रायासदरायायार्श्रेषाश्रायात्वे स्रीयमेवार्वे। १दे व्यूप्तश्रायायदेर 

मान्वराधरा हे न्यरायहमाशाधिरा श्चाने स्टाने स्वाधारीयाश शुःचर्हे न्याने त्यायहमा हे न्यरायहमाशाधिरा श्चाने स्वाधाराधिता ही । मान्विमामाराधा हे न्यरायहमाशासदी में स्वाधाराधिता स्वाधारीया स्वधारीया स्वाधारीया स्वाधारीया स्वाधारीया स्वाधारीया स्वाधारीया स्वधारीया स्वाधारीया स्वाधारीया स्वाधारीया स्वाधारीया स्वाधारीया स् र्वे विश्वान हे नुर्देश विद्यान प्राप्त से श्रीन हे नुरा स्वराम प्राप्त से हर्त्रा विश्व त्राच्या व्याप्त स्विश्व त्राचि त्र त्र त्र त्राच्या व्यव हर्ते । ग्रीसम्बद्धान्त्रम्यास्यदेष्ट्यायपद्धाः श्रीद्धान्यदेश्चीरः स्वि । हिःसूरः नेसायः यनित्र । र्ह्निः धे रहेषाया मन्दर् धेरार्से । द्येरादा ग्राम् भेरे दे प्राप्त रहे वेशः त्रवः यः रदः में भूरः वर्दे दः यं वे कुयः ये दिरः त्रवः ये त्यः क्षें स्वरंदशः यरः क्रें। प्रति संस्थित हैं। । देवा श्रा श्री क्षा दे 'द्र स्थ्य संस्थ है 'वर वह वा श्रा संस्थ । रेसाग्रीशाहेर्प्यराग्रेर्प्यादी ।गुद्यप्रप्रस्थिताश्वर्षायाराधीयविद्या ।गुर् यानेशामासद्धर्भामाहेरायाहे देशाहीशान हेरामरासर्वे राहे। द्येराहा बे हिंग ग्रांव ५ ५ ५ दे हैं वा ग्रां खु ह ५ द वी ५ ग्र से दे ले वा चु न नविवार्वे । विवारवरानापरारेग्रायारे न्दराय्वराये यहारा हो। वियायायर्थे नदेर्न्नराने भेर्न्स्य भेन्ने । भेर्न्न्नर्शेश्वर्न्न्न्या । र्ह्में सेन्यम् प्यम्प्रम्य विषय् ने स्वर्थन्त्र विषय् विषय् यव निर्माय साम्य अधिव निर्मा श्री निर्माय निर्मा स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत धेव व वे ह्याय पह्या प्रवे क्वें धेव प्रवाय पह्या प्रवे क्वें या के क्वें या प्र वशुरार्से । भेषान्सरारेविः क्वितिन्देशारेविः हेतायाव्यास्याधिताने। इस्रायम् साञ्चाम्याया इस्रायायाया वात्राये हिं से दाये हिं मार्थे ।

ग्वन्थायम् वहेश्याये क्ष्याम् व्याप्त क्ष्याम् व्याप्त क्ष्या व्याप्त व्यापत व्याप्त व्यापत व्यापत

वयाने द्यापर प्रस्ति देवे हिर लेया प्रवित र लेया प्रस्था प्रमानस्य र र र्देव है ख़ु न अ पीव पर प्रमुस्रे । मावव पर । क्षे र्से माया यह से हि । ८८.वी विवायम्यहेव.स.इस्रायायमा विवायहेवारासंवीयवाया वरत्युर्व विराधरायरार्वे वहेवायरावयुरावादे द्यारार्वे व्यारार्वे व्यारार्वे व्यारार्वे व्यारार्वे व्यारार्वे व <u> ५८१ विक्राम्य अहराम्य दे विक्रामा वेक्राम्य के वाक्रामा देवे </u> कें खें ब हुन में अप्यन पर्दे गा अप्यायाया यस प्रमुस में । दे वे कें खें न हन ॻॖऀॱख़ॖ॔ख़ॱढ़ॺॱॾ॒ॺॱॸ॒ॸॱॺऻऀऄॺऻॱढ़ॹॗॸॱॸॸॱढ़ऀॱज़ॖॺॱय़ॱख़ॱऄढ़ॱढ़॓ऻ<u>ॗ</u>ॿॎॸॖॱय़ॸॱ बेर्'यदे हिर्दे । धुयाविषाय इस्राया धेर् नित्र ही द्वाप द्राय अस्स्राय शुर्द्धेरः नरः भरः तुषाया साधिवार्ते। । यवः हेगाः तुषाया या सेंग्राया सेंग्राया सेंग्राया सेंग्राया सेंग्राया से न्रें अर्थे हैं गुरु के लिया में त्या मी की भी विर्मे विरम्भी विरमे विरमे विरमे विरमे विरमे विरमे विरमे विरमे वस्रकारुन्तुस्रायाधीदायदे धिरावेशास्रादी रेपा उरान्त्रायारेपार्थे। र्शेर-सव-वर्देग्रथ-सर-ग्रेट्-सर-वशुर-व-तुय-सन्य-श्रेग्रथ-संदे-द्रिय-से-यावे मा बुदान से दाये ही मा बेदे । वा बेदे । व र्भे महाराज्य के किया कर र में मिया पा पी कर में।

ने न्वा शन्त्र ह्या व्या प्राप्त विष्ठ विषठ विष्ठ विष

न्हेंन्यराग्चानवे रेग्यान्यायायाया अवे रूटा में दे रें कें निन्न्याया *दशःह्रशःशुःनिर्हेन्*नःधेदार्दे विशःश्चेन्नःस्य देवासःन्नः ध्वतः सःन्नः देवासः ग्रे-दे-ते-लेन्-प्राया-स्वायान्य नार्देन-प्रायीत-ते । विनेन-प्यन-स्रुत-दे-स्रून-नर्या निया की मुन्ति । नर्या विश्वा की सूर मन्त्र स्थरा ग्री-देग्राश्चाक्षेत्रभेत्रभूत्रप्तराग्चेत्रकेशन्तर्भग्नात्रप्तराध्याध्यर नर्हेन्याधिवार्वे । विःश्वेष्यरानेयायावे नेयायान्याय्वायार्व्या श्वेयार्वे यार्वे यर हो दःय धिव हो । बाददाय दे दे दे दे साथ व दे ले अ व हे द दे ले व गयाने ने स्था ने स्वराह्म स्थापर वर्षेया पर्य । पर्य न साथित विशास्त्रा यम्पन्त्रम् । ने ख़्र रं अ ले अ या या ने प्रमा ख्र या प्रमा प्रमा या ने प्रम या ने प्रमा या ने प्रमा या ने प्रम या ने वसायवेषायवेष्प्रवाह्मान्याद्वार्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्रात्र्यात्र्यात्र्यात्रात्र्यात्र्यात्रात्र्यात्र बेद्रायाद्या देखायवायात्रस्य सायायवेषायम् सर्देवायम् वर्देदादे। म्बर्यायाम्बर्याच्यान्यात्रः व्यवस्थित्रात्रे स्वर्धात्र विष्यायः स्रोत् स्वर्धायः स्वर्धायः स्वर्धायः स्वर्धायः यशर्शे विश्वाराने त्यापाना नेवाश्वार्थसम्बर्धश्वार निर्वाया र्शे स्ट्रेन् हेन् सेवा विश्व नहेन् हेन् हि

तुयामार्थेषायाण्चीमे प्यूनमें त्रा अयामार्थे श्री ने प्यमायाम श्री महास्वासीय विश्व क्षिया विश्व क्षिय क्षिया विश्व क्षिय क्षिया विश्व क्षिय क्षय क्षिय क्षेय क्षिय क्षेय क्षेय

तुस्रायाः सेवासायाः सूस्रातुः याः सेवासायः यह वाः याः यो त्रात्यः सेवासायः सेवासायः सेवासायः सूस्रात्यः सूस्रात्यः स्वास्य स्वासायः यो त्रिः सूर्वे क्षेत्रः कष्टे क्षेत्रः क्षेत्रः कष्टे क्षेत्रः कष्टे क्षेत्रः कष्टे क्षेत्रः कष्टे कष्टे कष्टे क्षेत्रः कष्टे कष्ट

देवे भ्री र गार्दे व से अपन स्थानिक स्थानिक स्थानिक से दे दर्ध्वर्धित्त्र्यायायार्थेष्य्यायात्वे व्येद्र्यते स्रूयावहेंद्र्यर ग्रुवायेष् यदे भ्रिरने प्राथ्व यार्षे प्राय्य हिंदा है राज है स्र र द्वा बदा ग्राय हुन स येन्नि ।ने प्यम्कु सर्वन्येन् प्यम् पर्नि । श्रु मन्नि स्यम् प्यन्ते मधी ५५ मी मु अर्द्ध पाव्य अर्थे में प्रिये में स्टेश में स्ट यदे श्रुप्यमार्थे व पृत्र स्पेर्प्य प्रायाव्य साधिव साधि हमाया यह वा साचे निव हिर्मे न ता र्रे न रा निव न दि न दि सामा रा र्रे न रा ना ता ता निव न न धेवायाष्ट्रायम्तु छेन्यान्याष्ट्रायम्तु छानम्यस्य मायाने गडिगाययर र्श्नेर्सेग्राम नविद्या । यद्येय प्रदेश्यें तर्म र प्रदूर र प्राप्त । दे स्वर्स्याधेवा र्वेदारेदिः सुदि भेदानु र्वेदानु राया र्वे वार्या से दायर वावदा ग्रीशादे 'द्राष्ट्रव प्रमाय विष्ठा प्राथित हैं।।

र्थेव से हिन निर्वाय माने सुदे में वाय भी व के विकान हैंन में

ग्वितः धरःश्चे दे विश्वास्य ग्रहः । दिवासायः देवासासे दासादे सेता । ঢ়য়য়ৢঢ়য়য়ৣ৾৾ঀয়ড়ঢ়য়ৄ৾য়য়৾য়য়য়য়য়য়য়য়৾য়য়য়য় गशुस्र-तृ-से निर्देश्व-सेंदि-धेंद्र-तृद-तृ न्य-सेग्रस-धेंद्र-स-स-धेद-दें। यार:तुस्र:स:हेर:य:सॅयार्स:सदे:रेयार्स:दर:ख़्द्र:स:देदे:ह्युर:सर:हे:बर: <u>त्त</u>रकारावे भ्रीराङ्कायावह्या प्रवे तुष्ठाया केराया वेषाकारावे । ह्या प्रवे वर्देन प्राधीन विं । नेवे श्रिम वर्दे । धरा महना सम स्वी श्रुवें । ने व्यूप्त वे श्रुम निह्निन्यम् नुःवः अः धोदः ष्यमः देवः नुष्यः वः वः वः विष्यः वः वः विष्यः वः वः विष्यः वः वः विष्यः वः विष्यः व याष्ट्रित्यम् वर्देत् यम् वर्षुम् न व्यो वर्षे । त्यायाया स्वीसाय विदेशने प्रम ग्रीसप्यदस्यायवरास्रादेशायदे | दिन्ग्रीसप्यदस्यायानेसाग्रानदी यारायार्देवाग्री: भ्वायाग्रीयारेयायराष्ट्रीतायाष्ट्री द्येरावाहेतायराधी वर्षे वेशनायश्वरास्त्राचनरादेशनायः नुत्रि । विदेत्ते व्यान्ते स्त्राचेशन <u> २४.२३,४.५.७.४ूव।४.२.७.४.५४.५५.३</u>४.३.४ू४.३.२.७१४.५४.५ू४. ग्रीसायम्यायार्थेन्यायार्थेन्त्री । निवेश्वीरानेषायाः मदेःश्चे देवारान्दाक्ष्यामदेः ह्नामरा होनामाय्य त्वादायदासु रावराशेः गुर्दे।

 र्सेन्यान्। श्रिण्यान्यान्त्रियाः स्वान्त्रियाः स्वान्त्रियाः स्वान्त्रियाः स्वान्त्रियाः स्वान्त्रियाः स्वान्ति । श्रित्रायः स्वान

ख्रुव्यः मुद्रः ययदः यापीतः है। विश्वयाया वर्षेत्रः याचे वर्षेत्रः याचे वर्षेत्रः याचे वर्षेत्रः याचे वर्षेत्रः याचे वर्षेत्रः वर्षेत्रः याचे ८८.शिष्टेषपुरस्थात्वाताकात्राचु.र्.शब्दार्यातास्त्रीरायराचीयपुरस्या न्यात्यन्ते साधिताने। विष्यमानाने। विर्मेयानवितान् में स्यामा हि क्षरकेते क्षर्रा सेर्'स'रे'नवित्र'र्'त्ररे'ख'लर:र्ह्य । यात्य'हे'वि'र्ह्यान्ह्रेर्'स'ख'दे'र्र्र् धेशःदुरःविगाः ग्ररःर्देवः ग्रीः हैंगाः यः शेः न क्रीटः रें विश्वः यः देः नक्षयः विदः नह्नाः मञ्चरन्यः हो मिर्ने मानी ने वा दुर बर्ग ग्रम्। बिव वयर के मानि वा या रे स्रम्देवे सुन्दायवे सुन्वादे यवे सुरु सूर्या ने नवेत नु अहता न इट वट ग्राट देव श्री हैं ना या की न हो ट दें ले का या न ने त्या मश्रापार्देगार्देव श्रीशार्श्वेदायां हेन् प्रविव प्राप्त्र साया प्याप्त स्थून पे गे नरःगुःनःभेवार्ते । श्वःमः ५५:ग्रेःनाई ५:मःभेवावादे देवाग्रेः १वायःग्रेयः र्देव मन्दर्भे लेख नहें दिन प्राप्त के विकासी स्थापन के कार्य के कार कार्य के कार्य के कार्य के कार्य के कार्य के कार्य के कार्य याज्ञित्रस्त्रम्। हिन्यम्न् हेन्यन्नहिन्यम्न् हिन्यम्न राधिवार्ते। दिवागाववायावे श्वादे दिवाशे प्रमन्दि।

मावराधरा दर्भामार् सम्बयानमात्त्रम् । दर्भामार्वे र् सा यशमाव्रस्थित्रयदे भ्रिम्प्रस्थित्र द्वामान्य विष्टा । विदेशिष्ट्रीरायरार्वेदारायायेवाहे। विदासाहेदाद्वावयात्वरयास्या वर्षामानमा अङ्ग्यार्थेवार्यवेत्रेन्द्रवायाम्बावास्त्रव्यास्त्रे सेनाने। वर्रे सूरा गरेगाय वह्या य द्या य द्या य दी। श्चि द्या रूट दें दें श्वेंट साधेवा। यार प्यतः यार या र वा र वे तर्रे प्रदा । अञ्चल वे सु प्या यो पे तर्पे व व वे प्रदा <u> ५८.५५,४.५.५वा.७.५८५,२वा.वे.५७,५५५,७</u>४.वाट.जश्रावावे.सर्वर धर दश्रा गय हे हे अ ध दे दग दे और दे श्री है दे विरुष्ट अ हो ज्ञा श्चेतिः देव त्ययाधीव प्रयादेव श्ची श्चे श्चमा द्र राष्ट्रव पा लेया प्रयाश श्चेर गहिरागितः सुदे सुँ र र प्येत हैं। । ने सूर द गहिरागा पर गवि स सुद पर वशुरानाधेवाने। वर्षायवेर्नेवान्याध्वायाधेवायवेर्धेरार्नेविव। वर्षे

यारे विवार्श्व रेवि श्रुभाव भे प्रान्त र्यो रिवाय वे साथ वे साथ वे साथ व इस-८८-५ग्रास्ट्रिं सेवि-स्वि-सेव-से साम्हिन-सानि साधिन तामा स्वराही चनान्दरह्रभान्दरनेवायाग्रीविद्यासुरद्र्यासरामहन । नायाहे ह्या र्थेव से निवेद दु श्री राम हें दिन वी हो हा निवेद के लिया निवेद के लिया हो हा निवेद के लिया हो हिन के लिया है कि लिया है न्राधुव्यान्याः ग्रापित्राः सुः वर्षः स्राप्ताः वर्गुः स्री । ने व्यूनः न्राप्ताः वे देग्रायायायायायात्रा हेदे ही स्वावा स्रम्यहें द्राहिमा देरास्वायमा नर्हेन्यायाने स्रमानेन्त्र स्रमानेन्त्र स्रमाने स्रमाने स्रमाने स्रमाने स्रमाने स्रमाने स्रमाने स्रमाने स्रमान व्याप्तर्भासदे ध्रिम्में विभावहें दास दे प्यम्मेया सामाधित है। यद यशक्ता वे कें कें या वित्र केंद्रिया या वे वित्र बन्दर्भिष्ट्रियादायश्चे केंस्याबन्दिश्चिष्ट्रियास्य वित्र र्वे। । त्युर-५ : द्वान प्यर-देव : ये : ये वा मी : सु : ये अ : ये व : हे। क्षे : हे वा अ : य यात्री विद्यायात्री से सामा प्यान विद्या स्था से विद्या स यदे विश्वास्त्र स्त्र स् नः परः सः पेतः दे।।

यदे भूमा मालव शेया श्रेवा यदे भूम श्रेव शेव श्रेव शेव श्रेव माण्ड या श्रेवा शाय श्रेव शेव श्रेव शेव श्रेव शेव शेव श्रेव श्रेव शेव श्रेव श्र

व्यामी देव दु ध्येव व वे द्रमा वाद्या प्रवे श्रूर व्या र है। या वे या व्या स्था <u>न्ना न्वान्यायाधेवाग्रीः स्रम्भी म्वाने केन हेना साम्यान्य ग्रामित स्रा</u> म्बर्याम्बर् र्रें रायाधेवर्ते । निःश्वरावर्ते इयाम्यायाया में सुरस्य रामे सुर क्षेत्रात्री यात्राह्मसायात्रसायीः क्षात्रेसात्रेदाते नाहेत्रात्राध्येतायीः हेया हत्रात्रात्रीः याधिवार्ते। । ने भूमावाधारार्थेवारे विश्वादेन मुक्ता अध्यक्ष मुक्ता विश्वाद्य स्वाद्य स्वाद्य स्वाद्य स्वाद्य व्राह्यन्त्रप्रस्तुः होन्यान्नाह्यन्यस्तुः हान्यान्याः व्यान्याः व्यान्याः व्यान्याः व्यान्याः व्यान्याः व्यान न्यान्ते से विया व से न्न प्रवे सुँया राष्ट्र सुँ त न हैं न पर्दे । है सूर व से न न यायान्द्रित्याने निवेदात् वात्रात्यायाया भी वात्राया यात्रात्र्याया इस्रसायसायर्भारामाव्यक्तिरामाठेमानसूनास्य गुनारे त्यारे देरे रे प्या इसरायवसा ने न्वाइसरा की व्यन्तिसा विवास विवास विवास गरेगात्रशत्र्वापायपरक्षेश्चेरार्री ।विश्वात्वरश्यारा बर्द्रात्यपर गहेरागासेना । ने त्यापरागिवे समुक्षेर्य रासाधिव त्या छिन सम्पूर बेर्पान्यावर्षित्रयम् र्वा व्याप्यम् वित्रायायायी वर्षे । । ते वित्रे वित्रवाषाया श्च-द्याना डेया हु त्यू र यहा देव द्व द्व द्व र या स्ट्र र यहार या प्रति हु र या स्ट्र र यह र या स्ट्र र यह र य इश्राद्यायाया दे द्राध्य स्मार्यक्र स्थारा दे निवेद दु श्रायशायर लूच. ध्य. ट्रेंच. ट्रेंच. यं यो हे. ट्रेंच. यं र. वं वी र. वो ट्रेंच. केर:न्धुन:सर:बुर्वे ।

ने त्या देव श्रीशाइशन्द प्याव प्राया विषय हे देव पाठिया था

वह्माना श्चि न्द्र हो ज्ञामाने अप्येद सेना । माय हे प्येन हन सेन से न्दः क्रें तः सें खुद्दवादेः नेवा शः न्वाः ह्या या हेवा वा वह वा यदे ही नः वा वे सबुव'रा'न्र'ष्ठिन'रार'र्'हेन'रा'न्र'ष्ठिन'रार'र्'हे'रा'रा'र्षा'र्षेव' र्वे। जिन्नन्त्रः क्रेन्यं अञ्चलने नेग्रान्य थ्रन्य प्रायाणमा जिन्या अपन ने अव गहिरा न जिन जिन के स्वा निम्मी के स्व निम्मी निम्मी श्रृङ्गयदे ने मार्था श्रे दे ने दाया खूद पाने दे के मादी सत्त्र पार्थ प्राया थिता <u> ५८: व्रे : व्रमाक्षेत्रप्र अध्यायवे श्वेत्रः में । प्रे : सूत्र वरे : विमार्ने व : या महिकाः</u> श्चेर्यस्थ धिवर्ते। दिवर्यमिष्ठेशहेरक्षा दिरविवर्त्स स्वायर्द्र है। ल्या त्रित्र त्र अपने विषा निर्देश सम्बद्धमा । निर्देश मान्य प्रमान स्वापन हराने क्षुरमहें न्यर प्रश्नुर न प्येत त ने प्यर प्येत साथ व ते । । ने न्या गी'गवि'सशुक्'रायाधरावर्षेयायासाम्हर्पयदे श्रीरार्ही । देवे सुर्पाया षराष्ट्ररायराचेरायां केरावेरायायायीयार्वे। ।देग्यूरायारे विवारिवायार्या ल्य भित्र भित्र स्थान हिन्द संदेश स्थान हिन्द संदेश स्थान हिन्द संदेश स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान भ्रासद्धरमाशुम्बयानरावशुम्। नियाने सेनामान्द्रास्त्र निर्मान्या इश्राम्ची वित्रायराम्बिमात्यानाईतायानेवे भीतानेवा सक्रायस्य वित्रार्थे गरःगे भ्रेराष्ठ्रपरः र् हेर्पायात्रप्रे इया वे द्वारा देवे भ्रेर्थः अर्थंदश.तर.तर्थंर.र्रू।

देवे भ्री स्टेश संसे दायाया विषय सुतास से दार्ची विषय है। अर्द्धरशः धेरः नर्हेरः धरः शेष्ट्रेर छेशा विषयः हेष्ट्रेश्वर प्रेशः निषयः हेष् नरः त्रुरशः परे विष्यश्रुतः परः अद्धरशः परः वशुरः नशः निहें नः परः शेः वर्देर्पाने वर्ते वर्षे वर्षे सम्बन्धान विद्यान सम्बन्धाने । विद्याने सम्बन्धाने वर्षे वरमे वर्षे वर्ये वर्षे वर्षे वर्ष कुः धेर्प्य भेरामित्र स्वराय धेरायर महित्री रेप्य माल्य से हिनाम बुसारात्यार्सेनासारावे विदायमाने प्येत्र तुं बेन ग्रामा वर्षे प्येत्र हैं । वेता वर्रे हे से बर्प्स नम्य न है। गहे गाइस पर नस्य न हे साहा न बुद क के है : श्रेद दु दें क : व्येद प्य दे । व्य श्रुवे : ग्रुव : व्य व्य दे : व्य व्य नर्हेन्यरपर्देन्यरक्षुर्यनर्गुर्वे । प्रजेष्ययाउत्नुगुरुयायायाजे नर्हेन् यर वर्दे द : यदे । हिद : यर : या धे व : या या हे : क्षेर : देरे या से र : व हें द : यर : ह्या यावरायरा नायराहार्ययायायायरा अर्द्धरमा नियारान्दरहायार्थेयाया राष्पराचायरहित्रीः वित्राया सेवासायस्य वहोवायर हुसाय हित्यर बेद्रायम्प्यूम्या देषावे श्रुप्तहेद्रायम्बेप्तहेद्राया देवे दिस्स्यायम् न्रह्में न्यर ग्रुप्त धोद्याय अप्तर खुद्य व्याप्त र क्षेत्र से प्राया क्षेत्र प्राया विदाय यर:दर:ह:दग:ग्रद:माने:अश्व:यर:वय:वर:वश्व:र:वःधेव:वें। ।गय:हे। नेराग्ने ज्या मुरा ने वाया हे पदी सूस्र न्याय प्राय स्था स्था रायान् वीन्रवाणी वी व्याप्त विकाले व्याप्त विकाल नश्यानदे नेवाश्राणी कुदे हो ज्ञाने र हुश्राय ने प्वापे प्वविद पु पर्हे प्या

म्बद्धायार्थेन् सर्द्धायां सर्द्धायां स्वाप्तात् स्वापत् स्वाप्तात् स्वाप्ता

म्यानि श्री श्रान्ता स्वान्य स्वान्य

अःलियाधितः तेश्वान्य स्त्रान्य स्त्

त्ते त्याके लेगा के अन्तर्हे न्या स्वार्ते । निः त्या व्याप्त स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त स्वार्त्त स्वार्त्त स्वार्त्त स्वार्त्त स्वार्त्त स्वार्त्त स्वार्त्त स्वार्त्त स्व

 विनायस्त्री है न्या स्वर्धन निह्न स्वर्धन स्वर्यन स्वर्धन स्वर्धन स्वर्धन स्वर्धन स्वर्धन स्वर्धन स्वर्धन स्वर्य स्वर

श्चेतः स्टानिव के विवास्तावी ह्या श्चेतायाय स्वास्ति के ति ति वियान स्वास्ति के विवासि स्वास्ति के वियान स्वासि के वियान स्

त्रुश्वास्त्रम् निर्मे स्त्री हिन्यम् स्त्रीन्य स्त्रीन्य स्त्री । यह स्त्रा स्त्री स्त्र स्त्री । यह स्त्र स्त्री । यह स्त्र स्त्र

श्चितिःश्चर्यात्यात्रः स्टानिः वात्त्रः स्टानिः वात्त्रः स्टानिः वात्त्रः स्टानिः स्ट

यदी स्वरंभितः विद्या व

त्रवायान्य वित्त क्षेत्र क्षे

देशवर्तेशश्चर्तवर्त्वावतेः द्रेश्वर्त्ताः व्याविश्वर्त्वेशः श्वर्णः स्टान्यरः वेदः द्रेषः व्याव्यरः द्रेष्ठः श्वर्णः स्टान्यरः वेदः द्रेषः श्वर्णः स्टान्यरः वेदः द्रेषः श्वर्णः स्टान्यरः वेदः द्रेषः श्वर्णः स्टान्यः स्वर्णः स्वर्

गी श्वाप्तर देव अर्द्ध र अरधर विद्युर देश । दे प्रविव हित धर प्राविव स्थयः वै। दि'षेश्राश्चेयावरावगुरासाधेव। हि'सूर्विरावी सुश्चायायावाया र्शेम्बर्धाः सेवान्यः से होत्याने प्रविद्युत्यः विद्युत्यः सेवान्यः भे हो निया सद्ध द्या प्रमान हा नवि हो मानिय है हे या प्राय से निर्मा कुर-दु-द्र-स्यर-सॅर-श्रेय-च-छेर-ग्रीश-इ-द्र-पिते-ध्रिर-रे-वे-वा दे-छूर-वशुरावरारेवाश्रायात्राधेवाहे। देख्ररावेटाद्राकेटावादे शुर्वादे। निदक्षेत्रप्तरनिदक्षायक्षेत्रध्ये अञ्च अञ्च । इत्य अञ्च दिन्दे अञ्च हित्र सर बेन्यवे छेन्। भेन ए बन्न प्रें ने के के स्वार्थ के ने के के स्वार्थ के स्वार् वाषारार्द्रेत्रसावदेशासराग्चातावत्त्रमञ्जू कुराद्यात्रस्य सेवाना वेशमन्त्रे देव याप्य प्रमुक्ते । मायाने मिन्यमाम्बन् मी देव सेया नरः हो दः सः धो वः वः वे । या दः यदे । धेँ वः हवः दः । धेँ वः हवः या ववः ही अः या वे । समुद्रायाक्षे र्रास्यायास्य स्थायान्या वर्षेत्यावान्या भ्रेपावित्र विश्वासाने हे सूरावे वा वदी व्यावमाया नार्षे दारा साधिव है। मारामी हिरा यार विया यावि सम्रम् सुन सुन । धिन एन प्रमान । प्रे इशमिडेनायायह्मायदेधेम् । निवेयोधेस्यायायम् गुरुदे । इश र्षेत्रप्रायात्री रें सदर्याया श्रुसामा हेत्या श्रीम् शामित प्रेत्र प्रेत्र हे प्रमा वर्रेग्रथः धरः हो दःदे।

प्रेंब्राचित्राचार्येत्। व्यायक्ष्मित्राचार्येत्। व्याप्त्येत् व्यायक्ष्मित्राचार्येत्। व्यायक्ष्मित्राच्यायक्ष्मित्राच्यायक्ष्मित्राच्यायक्षित्। व्यायक्षित्। व्यायक्ष्मित्रेत्रेत्राच्यक्षित्। व्यायक्षित्। व्यायक्षित्

<u> ५५'सदे देव मानव या अर्घेट माने दे से राजट से या माने दे है। पर से मान </u> गी भुरत्यसर्वेदर्दे विषान्य दिस्य देवि देव त्या वे वि वे रचा ची दा कुया उयाग्रीयार्केनायमायद्वितायदेनायायायायायदे भ्रिम्मे । ने स्वानित रदान्न द्वार्य के से वायम् । वाया हे सासर्वेदान यस से वाय र हो दार श्चेतिः श्चाः पर पर पर प्राचित्र पर प्राचित्र स्वार्थ । या स्वार्थ प्राचित्र स्वार्थ । या स्वार्थ प्राचित्र स्वार्थ । नरःवयःनरःवशुरःर्रे । गाव्राधेरःरेग्यःधरः सर्वेरः नवेः धेरा । सर्वेरः वेशमित्रभूत्रसायार्सेग्रायार्स्युतिः श्वाय्ययात्ते । त्रास्ति । दे स्ट्रादे बूरायाचे केंबा | ने सूराग्रुयात के श्रुवि श्रुपे ग्रुपे ग्रुपायी सूरायायाचे केंबा बन्दर्भग्रायाधिवर्ते। । गायाने ने स्रम्ययाध्याध्यरम् स्रम्याधिवः वित्रे से विवादियोद वात्यापदा वे कें अवाव वर्ते वा वर्ते श्रू आत् गयाने भ्रम्भवसाया सँग्रसाय प्राप्त प्रम्मेन प्रमा भ्रम्भवस्त्री गाया स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स देवे भ्रीम हे भ्रम त ने कें साम लेता देश सम प्यत याम न या लेश हे भ्रम यःश्रेवाश्वाद्याद्याद्याद्याद्यात्याद्यात्याद्यात्यात्रात्यात्रात्यात्रात्यात्रात्यात्रात्यात्रात्यात्रात्यात् नःश्वेदार्देश विषयः हे प्यदायानः नः चन्द्रान्तः स्वेदान्ते वद्रान्त्रमः क्षेत्रः कष्टि यर-त्-नुर्यायाद्वस्थायायदान्यरानासास्रेष्टिन्न्यत्वस्थाने हे-स्नुत्-त्। रेग्या ग्रे क्षु व र र क्षया ग्रे हें र ग्रेर या धेव के विया गर्हे र पा पविव कें। वे त्र क्रम्सर्भे त्या हे राम्य सर्वे मा विषय स्थित स्था है स्वाविक स्थाप वया धवानरानर्देवर्ग्याहेरानाधेवरो वर्षक्रिराहेरावर्षे

वृह्णानवमा देवाहे प्रवृह्णाया वृह्णाना विकास नर्दे विश्वान हैं न्यान विवादी । निर्मेश्वान विश्व मानि के निर्मेश विश्व श्री । निर्मेश विश्व तुरानवे शुःश्वें रार्रे वियायवे शे कें या गरायया धेता वेया देवे रेया यहें। वेशनायदे यनयविषायश्चे केंस्य वर्षेत्र स्त्री । वारश्य स्त्री नःवनवः विगार्चे अर्थे विश्वाया धेन्त्र श्रेन्त्र । । प्यवागनः नवे श्रेन्ये विश्वास्तिः हेश्यास्ति से दार्ति । हि सूर्रे द्वापावदाशेषात्रादे पविदर्शे यमा श्रुपाल्व क्यायमान्धन वर्षात्री । श्रुवे श्रु हेन प्रमाधिन । श्रुवे श्रु हेन प्रमाधिन । हे सूर तुरु पर्याय स्वाय हुरा स्वाय र त्राय प्रति हु दे से ह्या पाय से या र य में न्य होत् य नविव त् श्वामवव स्याय र तहात् य दे श्वे य हेत् यर हो निवाय श्रुरावर हा वासाधिव या श्रेष्ठी ने त्याया निवायारा यानिक्याचे विष्टु अञ्चा विष्टु अञ्चाया स्विक्षित स्वित स्विक्षित स्विक्षित स्विक्षित स्विक्षित स्वित स्वित स्वित स्वित स्वित स गर्नेवासन्वयः सँग्रायायाये सँसा भेनाया हो निया भुगिरेवा हिन्। नुःस्रायाचे र्वेस्य नाया ने सञ्चाया से नासामा नाया सुराया से नासा धर वे कें अवा उ कुवा व प्यट दे त्य क्व धर में अ क्वे त्य प्यट क्वे दे ज्ञा व वह नरः हुर्दे।

र्देव-वर्हेद-संदे-क्षेर्वशन्दे-द्या-द्द-त्य-व-द्या क्षेरव्द-व-द्या-वर्ष वह्यामरस्य वहेंद्री । अववस्येद संवेदेंद्र विकेषा देशे वहेंद्र संशेद यदे भ्री अभेष्ट्र याष्य्र वर्षेत्र प्रिंत्र भ्रीत स्वर सेत्र प्र वह्याम्यर्व्यायायाधेवाते। यान्हेर्पाने सामर्वेदाना उसाधेवायदे ध्रेरःर्रे । दिःकेर्णेःध्रेरःररःदरःवर्षेयःसः ठवःदगःयसः ग्ववरायःसः अर्वेद्र-विदेश्विर-देश्वयायर-श्वर्पयि हे अश्वर्पयायाय वे रद्राणी देव हेंद्र क्रिंअ:५:५शुर्रायाधेदार्देश विःक्रिंअ:५:निवेद:५:अ:यश:गुर्रायादे ह्याया धेवन्यत्यः श्रेष्वायाया हेन्न् अस्त्याचे क्षेत्रान् त्यू स्वाया धेव है। । या सन् निरमी क्षुर्यायया हुरावाया सैवायायाया धितायायाया सर्वेदावादेवे हिर ढ़्रेंग्'राक्षेट्'यमः <u>हे</u>यासु:द्र्याप्रदें।

त्रम्भारत्यक्ति। विश्वान्यस्य स्वर्ध्य स्वर्य स्वर्ध्य स्वर्य स्वर्ध्य स्वर्ध्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्ध्य स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वयः स्वर्य स्वयः स्वयः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वयः स्वयः स्वर्यः स्वर्यः

त्र्रेयामारुवाभी भ्रियामायविवानमा भ्रुयमाह्यामा भ्री स्टामिवा निर्देश निर्देश स्वामा भ्री स्टामिवा स्

धेव है। बर्द प्रम्य हैंद प्रम् हेंद प्रवे हें में ।दे ख़्म व में बिवा हे रा राष्ट्रायाये निर्देश । वित्रायायाये वाले निष्ट्रमा वे वित्राया । हिन'स'नग्यापा'सदे'हिन्। वि'न्न'र्नेन'ने'च'न्न'सेन। श्चिदे'श्चराने'यान' र्देव'ग्ववत'क्र्य'यर'ग्रथथ'नर'ग्रुय'य'रर'ग्री'ग्रे'ग्र्या'दे'स्रे'प्रयेव'यय'व' बन्द्र-सदेः श्चन्द्र-पाविः सञ्चर्नः प्रद्यन् हेगाः सरः तबदः हे। ।देशः वः अन्दर्भेव मालव सेया नवे में वाके सामा अवे न हें न नुरे। ने स्वार मर हेशमान्त्रीयापरापेर्पायापेराने। हेन्द्रमानेता न्रेशमह्याया श्रेव भ्रिम्प्यम्। दिव ग्विव दे नम्प्येव प्रिक्ष सम्प्रम्य विष्ठा स्थान इस्रायायह्मायावे सेटार्टी । देवे श्वेराद्रामान्य श्वीप्तरामी सार्या ८८.योश्व.व.८८.या.श्व.यत्त्रेय.यद्व.केश.य.श्र.८.ट्री वि.८८.वीया.य.श्र.८.ही.र. ५८। । वियायम् वेदायायाये स्वराधिमाहेदायम् वेदायायाये । श्चेति हेश्याया प्याप्त सेत्र में विश्वावित सेवा नार्य संवेश मन्त्र सामित यदे भ्रिम्प्रा इश्यायाधेव यदे भ्रिम्प्यम्मि । दे केद्रा भ्री में स्वीम क्षेत्र वे विष्णामान्व प्राप्त विष्ण वर्ष वर्ष वर्ष विष्णे वर्ष वर्ष विष्णे विष्णे वर्ष विष्णे वयोग्रामान्यां । दे स्वर्ममान्ये द्वारा । दे स्वर्ममान्ये स्वरं स्वरं से स्वरं से स्वरं से से से से से से से स धिर-र्देव-मान्वन-श्रेय-नःहेन-श्रुवे-र्देव-ध्येव-व-सहस्थ-श्री । मान-प्यश-ने-वा रेग्रथःग्रेक्टिंशः इस्रयः इसः यरः ग्रम्या । रेग्रयःग्रेक्टिंशः इस्रयः वेयः यदेः

गयाने दे सूराया गरायशाम्बदारोया देशाने वायाने वा बुवार्था ग्रे क्षुर्था रे त्या सेवार्था स्था श्रेषा श्री वि देवा वी साध्या सरास्य वहें द यदे ही र खूना स से व्य दु : बेद : गुरा विद : हु : च दि : हु र हो द : य धेवा गरन्यात्रक्षेन्द्रस्य ग्रा बुग्रम् हेद्रस्ट्रिंन्स्य हे हेर्रास्ट्रेन्या धॅर्यायाधेताते। र्वेतारीयार्थेन्यात्रेत्र्यात्रेत्रायार्थेन्याया धेव नश्रार्शे विषा हेश रामे वे से में ने से में प्रमा वह माहेव माना रामे हेशक्षेत्रविष्य । नर्डेस्रक्ष्यत्वर्या क्षेत्रे विष्ठे ने विष्ठे ने विष्ठे सर्देव प्रमः वेव प्रमः से ग्रुः वेद प्रदेश हेव प्रवे सेद खा प्यद सर्देव प्रमः से कुगार्ने विश्वास्ट्र श्री दिये द्वीर विर्ने रुगार्मेश दे कु सळद यश वुरावादरा धेर्यासुपविदायायया वुरावादिया हेतायवे वासूदार् धेवानी धरान्यायवे देवाने द्वार्थिया वर्षे ने ने विद्या हेवा से नविवर्रमें नर्राष्ट्री यहेगाहेवराया व्यावाया शुः श्रुर्वेवर्राया विवाया याययात्रुवारी। रेप्यार्थवायायादीयाधिवादी ।देप्ट्रमान्नवायादेवायादेवाया

सर्द्ध्यात्राम् वारायरानेवातुन्द्राम्यादेश्वादेशायार्थवायायह्वा यदे न् व्याय के दारे में त्या से नाया या के साम प्याय में त्या से नाया या व श्चेत्र्वाववेतेर्रे अभित्रे वार्षायायायायायायाया विवायाते विवायाते विवायाते विवायाते विवायाते विवायाते विवायाते विवायाते विवाया कुः विन्दी अवायी या बुदः चुः हेद हैं हैं वर्षे व्या अवाया हेद दर श्री <u>५५.३८.३.ज.श्रूपेश्वत्त्राक्षाक्षराक्षर्यः भ्रत्याच्याक्ष्यः भ्रत्याच्याक्ष्यः भ्रत्याच्याक्ष्यः भ्रत्या</u> वा ने भ्रः व वी भेगा ग्राह्म । इत्रेन ग्राह्म । भेगा ग्रीह्म ग्राह्म । यःश्र्वाश्वायायावावाश्वाश्वास्त्र्यूराची रेवाश्वाम् मुख्यत्वात्रश्वे याधिवार्ची । श्रेमानी मा बुदा ग्रुष्ठित प्रासी प्रदान विशेष स्वामा बुमाय हित नदसमा बुनार हिन् ग्री सर्दिन सरमा राया न तर्वे न सर द्यूर रे । सिना मीमाबुराबुः श्रेष्ठेराग्यरासुराश्रेष्ठ मायाने देशायाधेवावेशामर्देवा श्रेष्ठा वर-१६४१में भक्ते १ हेत्र १ होरी इसाय सेवास पर वया वर प्रयुम्। इसर्राम्यारसर्राम्या स्थाने स् लेव.रामाने.रेवा.लवर.वाचिवामानेर.लूर.त्यर.वज्ञ.चर.वक्रीर.स्री विविध. <u>षदा दगरक्षेत्रक्ष्याकात्याद्यदाक्षेत्रत्यम् । श्रेयायीयात्रुटः गुःहेदः रू</u> हिन्यम् सेन्य धेव यथ क्रिं निम्ये में मिन्य के अर्थे निम्य के अर्थ  बःचरःश्रेणाःगेःग्र्ड्राःश्रेत्रःश्रेत्रःश्रेत्रःश्रेत्रःश्रेत्रःश्रेत्रःश्रेत्रःश्रेत्रःश्रेत्रःश्रेत्रःश्रेत् बःद्वःद्वःश्रेत्रःश्रेत्रश्रेत्रःश्रेतःश्रेतःश्रेत्रःश्रेत्

श्रुंते देव गावव सास्र हिंदा भाव साम्र है । स्वाप्त स

वयायःविवान्तः से स्थान्य स्थान

व्यान्यस्य कुरानि विराधिताया विद्या व्याप्त स्वया विद्या विष्या विषया विष्या विषया विषया विषया विषया विषया विषया विष्या विषया वि

स्यावित्र नुः भीत्र नुः भूति । वित्र खुं त्र श्रान्त नित्र स्थान स्थान

होत्। ।ते.याववःइस्रसायःदेग्रसःधःतुरस्रेयःवरःहोतःसवेःइस्रादेःसे ग्री देव.ग्रट.वर्ट.केर.स्थ.तर्च.चंद्र.त्यर.घे.चंद्र.त्यंत्र.का.वाट.श्रेवे.क्र्य ग्रीमाधिवाने। यदीयाधारा देवामाभ्रीमाश्रुवारायामाभ्रमेरायास्व रमाग्रीसाहेसासुर्द्यामानित्वसावहित्वेदाने। वित्रिंगुर्सिम्सायाप्यर हेशसन् निपासक्र द्याने। यायाने देयायास मुद्राया ह्या सम्बद्धा पर्दे क्ष्रवाद्यवायायावे समदापेंदायायायेवावें। दिवे द्वेरावदे क्षराद्वा ठवायेवा यदे भ्रिम्ह संधित दें विका ग्रुप्त त्यामु उत्र हिन्सा सुका सम्सास विनाने <u> इस्रायर पठन पा हे साक्षु न्यया पवे छे र हन्न न या स्याया स्थाया स्याया स्याय</u> इस्रायम् सेयानासाधित विमा नायमायासँग्रासासँ सें सायम् वापासः धेवर्ते। धिवरवण्यरर्थेग्रायर्दरत्व्यायर्ग्ने हेंदिरविवर्त्वरेखा षरःरेग्रश्यःषेत्रः विन्यायावतः षेत्रः प्रमायश्येतः वा । यादेयाः हेतः र् हिर् भ्रेश्वरम्याया । दे प्रयाद्रिश में या श्रे मेयाया । याय हे यह या न्देशसंख्येन्त्रनेनेय्यान्निन्द्रम् अतिन्त्रम्यान्य श्री । नन्माम्नवराधेन्यम्।वर्षाक्षाक्षेत्रे वे निर्माणेवरम्माक्ष्यः न न्या यर वशुरा गय हे न्देश से या से न्दिया से न्द्र मा से न्द्र मा से न्द्र मा से न्द्र से ग्रीतर प्रायाय प्राया मुकारा सर्द्ध र या स्टायम् स्टिश्च स्टाया स्टाया स्टिश स्टाया स्टाया स्टाया स्टाया स्टाय इस्र राष्ट्री या राष्ट्र प्रति प नःसेन्यम्यकुरःस्।

धेरःगर्डे में गरेगरेशरा वायायायायी। श्वाधीय हैन में तथान हिनाया। वर्रे प्यर द्वर से विः क्षेत्र पुष्य से वा वार विवा क्षु त्य से वार स्विति । वहुगामविन्त्रमार्थे स्थान्य । अर्देव सुर्या शुः पुत्य वे नसूव न् से न र्ने। । नश्रुवः नुः सेनः पद्ये व्युः वः नन्याः याववः सेनः सः नन्याः याववः पीवः वे विशानहैं नामित के । निवेशित्र मित्र अमें नामित के निवास मानित के । वरी या पार विवा के वा वी निहें राय वरी । रवा वश्रे में तु हस सर नहग्रामा । दगार्देव र्से र्से र सूर नहें द ग्वार । । दे धिरा दर से हे नर नश्चेत्। विकापी नहेंद्र साय देंद्र सेद्र तुं बेद्र ग्राम्य प्रमाय व्याप्त साय होत्ति। । स्टामनेवात्रः क्रेवामनेवाते । शुरावयामनापाते । स्टाश्रदा ग्वितः इस्रासः सुःसे 'रेग्रासः धरः प्रदेतः प्रदेः द्वेरः प्रदेः रेवः ग्वितः हे 'यरः ग्वियायाधेवार्वे । देवे धेराळेषाची देवाण्य इत्यर ग्रुप्ये प्रयाची । र्नेन-त्रभूट-न-दर्धियार्गीययानिय्युविर्मेन-दिन्दर-वर्नेयानाधिनने। <u> न्याक्षेत्रप्रभेदेश्चेत्रप्रयाखान्देशस्य श्रुक्षेत्रभेदर्श्वर्प्तस्य श्रेत्र</u> गुःसेन्यायाधेवाधेरार्ने । यानान्यार्थे सेन्सूनायवे नेवाह्मस्यायाधेवे र्देव'ग्ववव'वय'रे'न्द्र'व्योव्य'य'र्वेर'व्यथ'र्या'गे'र्देव'र् हेंग्यथ'यर'ग्रेट्र'य ने नगागी भूरावा धराने वे त्रमायर हैंगाया उसाधेव वें । विवे श्रीरावे वा हे सूर में अरु परे प्रवादिया पर्या दिवाय से पर्रे विकास में विकास में

मेव दिन्दा से अपने वा प्राप्त का विस्तान का स्थान का स्थ

यात्याते से त्विया कु अर्ळ व उव की श्चा क्रा क्या त्या शे हैं व या ना निया के व्यापात्र हैं त्या है त्या हैं त

नशः हेन्यर होन्दी । वाय हे सेवाय न्य सबुद पदे वर्ष सम्बादवायः हो ज्ञा के प्यूर के स्वा । इंट बर ग्राट से ट ट्री । देगा श ग्री श्रुप्पट ग्रामा श यदे द्वर वीश वि हे वा मृष्य व्यवा र्शे र्शे वा वर्दे वा शासर वर्दे दि । न्रेंशःशुः हेन्य चेन्ने न्ये चर्यान्य सक्विने न्येन्य रायाधराहेँ दासरा हो । या यस ध्यमायन यन विवाया यह वा सामा धेव हो | द्रमेर वा द्रीयश्रद्राय देंग क न्या ग्रीया । विद्रपर ग्रीया वरायह्यायाधेव। श्रिषेशरोधेरळाव्या । रवातुष्यह्यायाद्येयया अधिवा । नृष्ठीनश्राणी । ष्विन् सम्यायिम विमार्थी नृष्या । नृष्टिम सम्यायिम विमार्थी । नृष्टिनश्राणी । नृष्टिनश् <u>५८। गुःनविःमःवेशःगुःनःष्ट्रःगुःषमःयमार्यसःग्रीशःनहेँ ५:मःसःधेमःर्वे। ।</u> ने निवेत नु हि रहे र निर्मा अनुन प्राप्त हो हो है निर्मा के स्कृत त्या के निर्मा के निर्म के निर्मा के निर्म के निर्मा के निर्म के निर्मा के निर्मा के निर्मा के निर्मा के निर्मा के निर्म के निर राइस्रायायराद्री । विदेवाची विदासरायावित्री दिन्। विक्रेप्यार्श्वित्र राक्षे.येत् । ताय.जा.१४ की.विर.सर.ज. यक्चे.ररा क्रूर.वे.ररायज दरा श्रुन्ता केंद्रा श्रद्धेश्चान्याकेंत्रायास्या इस्रायायह्यायासाधिवार्ते। । तर्सायते श्रुप्यतावारे वार्से से नाया ह्रियायास्य तह्यासे। दरेर व में र वेर वेर वेर वेर वेर वेर विश्व विश्व विश्व यशक्रन्यम् होन्याक्ष्यं । विष्ठेषाद्वेष्ट्षायम् स्रीहोन्दी नयेम्द

नेरावाबवायशर्ष्वेश्वराद्या ह्रिवाश्वराद्याचीश्वर्ष्वेश्वराद्याचेश्ययाचेश्वराद्याचेश्वराद्याचेश्वराद्याचेश्वराद्याचेश्वराद्याचेश्वरा

स्त्राण्य ।। स्त्राण्य ।।

## स्नार्केन् नह्ना संदेखे सु हु ना मा

ळंट्र आहे गहिश्य शुप्ताहर शेष्ट्र शेष्ट्र श्रेष्ट्र श्र

विश्वार्याद्धसायास्य स्ट्रिस्य स्ट्

सः न्याया स्वरं श्री स्थार क्षेत्र स्थार के न्या स्थार के न्या स्थार स्

वर्देशः स्थित्राश्चास्य स्थान्याः स्थान्य स्था व्यःश्री हिःया बदःदरः सन्दर्नादरः द्या विश्वयः यः हवायः शुः नर्हेन पर्देन क्षेत्रा । सन निरासन स्वार मिन्य स्वार निर्मा । सार्क न निर्मा क्षेत्राया हेयाय शुक्र प्येता । द्येराव हिंदा वायया शुर्वा विरास्त्रा से स्वा र्वे विश्वानित क्षेत्राश्चा निर्मानिह निर्मानित क्षेत्राश्चा निर्मानित क्षेत्राश्चा निर्मानित क्षेत्राश्चा निर्मा নশ্বন'ন্ত্'ব্দ'শ্বব'ৰ্ষ'শ্বন'ন্ত্ৰ'ব্'ন্ত্ৰ'ন্ত্ৰ'ন্ত্ৰ'ন্ত্ৰ'ন্ত্ৰ'ন্ত্ৰ'ন্ত্ৰ'ন্ত্ৰ'ন্ত্ৰ'ন্ত্ৰ'ন্ত্ৰ'ন্ত্ৰ वर्ष्यूराने। क्रुरामी कु.क्रु.सर्कें प्रदास्त्र प्राचित है। सामुनाया सामित है। गुनःमः न्रः भ्रः व्यक्षेत्रः गुनः चेवः व्यव्यः वर्षः वर्षः ग्राः गिः गित्वः क्षेत्रायः थेवा डे क्षे अ स्ट्राच वे अ स्ट्राच रामा निव के नामा साथेव पा क्रमा रामा हिन्यर सेन्य विष्ट्रिर सुन्य प्राचित्र या साधित हैं लिया ने क्षेत्र सन्य प्राचित्र याञ्चन्यम्यस्र स्वर्द्धन्यायाधीवार्वे । न्यान्यस्य स्वराध्याध्यम्यस्य स्वर्देन्यम् निर्देन् ने। गणके महत्र के मार्य सुन ग्रुप्य स्ट्र सुन पर ग्रेन से न सुन

चुत्रस्य स्याचान वर्षे मार मी माहत के मार पीता हे से से से तरा न सुन्य त वे अ गुन परे भे रागहव के गया अ भेव के वि वि वि के के गाउर ना गहन कैंग्र भेत दी। गहर केंग्र निव दिन र भेर ने अन्य अन्ति अने। सर मी मुग्नाध्यामार्थे व मित्रे विषा चुग्ना भ्रामुद्धि। । दे भ्रमान् व क्षेम्याया धेव न अर्द्ध म्याम् भेव वि । ने न्या वे सार्द्ध न यदे या व के या या वे न न हेशःशुःसश्रुत्रःसर्वे । गारःगीःश्चिरःलेखा रेगाशःसन्दःशः ध्वतःसरेन्द्रोः नर्हेन्गी मान्व के मार्थ मध्य राष्ट्र नर्थ या निर्देश । मार विमाय रेर या स्र न् पार्च सार्के सास सुदारा सामा निदार्के मा सारी सर्व द है न सर्व न सामा वर्गुर-न-गान्य-देनामा देनाम-सु-नेत्र-ग्रीम-ग्राप्तिन-क्रिनाम-स-धित-मश्यक्त्रम्याधिवार्वे । नियनेवार्युम्यम्याधिकाः श्रुवायम् होन्या सूर्रं अया सार् भेग्रा रादे भ्रित् सूर्य होत् साधित हैं विसारा ता पार है। रदायाम्बित्रप्रिकेशस्य विश्वराया में प्रति स्वित्र प्राची प्राचित्र स्व यदे ध्रिम्भे । दे सूम्य मे लेगा द्रा है दे ना हुत के ना शादा ना सा ना स् नु नदे गान्त केंग्रा मु अर्क्त हें द गार्य या राज्य मान्य स्थान से विवासी र्देन हैं गुरु सा गुरु सुर सुर धेरा । गुर में के र्देन गुरु के गुरु धेर स देवे के वे के वा वश्येष वी दाय अपवा वा निवे ही र दे दें दाय अ शुन क्षर क्षर न'हेर'रे। कैंश'ब्रस्थ उर्'ग्रे'गाह्रद'केंग्य रेग्य रास'स्य पीद'स्य र्यस्य नवे भुरम्थायनिव दे।

गहर्केग्रामहिरामदेख्राक्ष्याविष्ट्राम्य ।

न्नाः कुः न्दः वज्ञ अः नुवेः न्दें अः वें स्थाः धेवः पवेः धे रः ने ः न्नाः वेः रेना अः यः अः धेवर्दे। दिग्रथरशुः कुन् सेन् ग्राम् सेया नम् होन् परि ममानिव हो सा शुवा वर्चेत्रर्रव्यूरर्से ।हगान्हेर्ध्यान्यहेर्र्यान्यहेर्यान्ये ।देर्पाक्षेःहगान्यरः व्याधेवा । ध्रिंगया ग्रे क्रिंव ५८८ हे या यहाव १८में। । ५ मे २७८ क्रिंक स्वाः डेशः तुः नः त्यः देवे : हवा : पवे : हवा : पा : प्राप्तः । विकार स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स रदानिवरमदार्वेनायाक्षे पर्देरानाधेवायदे क्षेत्राचे हो ।दे व्हानकावाहमा मंहेर्र्युर्रे वेशन्यन्थ्रित् हे। देर्पहिर्वे मह्मार्थम् सर्द्धरशास्त्रे भूमा गर्हे दाधित है। विदे हैं दस महत्र मित्र के के के सुन ब्रूट नर्दे । भे ह्या म हेट या हु द क्या बेद मदे ही म हे त्या भे ह्या म या भ ग्वितः परः ह्याः पदे वह्याः यः पेदः यः यः पेदः दे । । प्रेर्यः यः दे दे । । प्रेर्यः ये दे हे दः यः द्वरः नायका हुरानर शुराय है। क्षे म्हणाय दें हि का निहें नायर होते । या हु का अन्याने प्यान्धे स्वापा हेन में लेयान में या हैन स्वापा वर्ष्यश्च रहेर दें विषा द्याया स्वीय साम विदारी।

हे अरख्य न्यान्य स्त्राच्य स्त्राच स्त्राच्य स्त्राच्य स्त्राच्य स्त्राच्य स्त्राच स्त्राच्य स्त्राच स्त्र स्त्

यदेर्यापृत्रः क्षेत्रायाः भीत्रः स्वाद्यायः स्वाद्यायः

क्रियानायसासा हुरान हेराने। र्देन ही र्दन ही राजा सामिता सामिता है । वर्देग्रयास्यासारेसाराष्ट्ररास्ट्राचित्रं वित्रसातुःग्रव्तरहेटाग्रीःकाद्रसा नश्चनः ग्रुः से 'त्युन' सर्' सूर्व' स्व १ देवे द्व स्व स्व स्व स्व १ देवे देवे स्व स्व स्व स्व स्व स्व स्व स्व हमां है। विश्वराश्चित्र प्रवेश्चित्र श्वराश मिल्वर श्वराश मिल्वर श्वराश यदे प्रज्ञ अ जु 'हे प्र ग्री अ ग्री अ भारा की हमा या धीव व सु प्र प्रे दे दे दें के अ हे 'हे जु । वेश ग्रु न वे तर्वश ग्रु सक्दिश मेर्दे | ने न्थु ग्रु स्थित हु न स्थारा गश्या । गया हे श्रुप्त सेंदे तुया पदे तत्र या तु हे द श्रुप्त से द दें विया हे द वनिनेदेक्तं अञ्चनमञ्चरम् । दिवने मुद्रेन्द्रवर्षान्ति । र्शेग्रथायिये से म्हणायाया से दार्दे विशा हिंदायि यह तत्वाया वा सूरासूदा विश् <u> ने भ्रे ने केन ह्या याया प्यत्येन में लेज के बुक्कें राया पेवाया पेवायये </u> मुन् यादेयायाष्ट्रमञ्चरावर्षे । यरावार्क्ययम्बन्यवस्वायवे मुन् निर्वतः भूति । देवे द्वीता के अ ग्री भू । त्वा निर्वा के अ ग्री भू । त्वा निराम अ हे अ शुन्दें नायर होन्य धीव हो। नेवे हो ह्या प्यम हे स धीव हो। नेवे नेव र्शे र्शेर-देश्राच हित्र ग्री हेश्रासु प्रमापा स्थेर पा त्राया वर वश्य राजवे श्रीर र्रा दियानसूर से समुद र्से माया निर्देश समुद र देश धीरा ग्वर सुन मा विकास सुन मर सर्दिया ग्वर सुन रेश सुन दी नर्ह्मेनारासुनारासे छेटारासेदे क्रूराग्याय यार्थे । प्राये स्वा स्वास्ता है। हैंयानायमानुरानदेश्वेरकेंग्री सह माने प्रेश माने प्रायानियानिया 

क्षिम् अप्तर्पत्रभूता मुद्रेश हे अरशु पर्मे प्रायम् द्राय प्रेष्ट्रे राद्रा मुद्राय प्रमुवा मु सेन्यते मान्व के मार्थ सेन्य स्थान सूर्व परि हिन्दी । हिन्य सहि साथ यर हे भून न विव र र द्विन या स्थाय यह यो व दिने भूर सूर न दे क्रिंन्यायाप्यराहेशाशुपर्वे नासेन्यराष्ट्रम् ।हेशावर्वे धेवाके विवा हेन् त्यमा । निर्मे निर न्द्रासार्विद्रान्धेशाहे न्यायेह्यान्यान्या होताने। श्वादी नुसारा सुन्ता धेदार्दे। श्चात्रसामायाः सुराते साधितार्वे विका द्वारा सुरात्रे । निराने सुरायदे कारा या द्वीत के विवाधित ग्राम हे भाशु वर्ती ना श्री मान श्री हवा माने हिंवा ना यश गुररें वेश गुरार्दा गर हैय न यश अ गुरर न रे ह्वा परें वेश ग्रानाक्षात्री | देग्क्षात्रमात्र्यायायादेगविवाद्गावेयायादमा देगविवाद्गा अधिक कें लिया सह्या नस्थान स्थान स्थान । स्थित या से स्थान निव न स्थान स्यान स्थान स ষ্ট্রিল|ম'য়ৄ'য়'ড়ঢ়'ড়৾য়ৢয়য়য়য়ৢঢ়য়'য়য়ৢঢ়য়৸য়য়ৢঢ়ৢয় ने सूर सूर न पर तबर राधित हैं। । निर्मेर न सून राउं स है न या हैं ना स <u>ৠয়৻৴ৼঀৣয়য়ঢ়ৡয়৻৸৻৸ৼ৾য়৻য়ৣ৻ঽয়ৣ৾৻য়য়ৢয়৻য়ৢয়৸৻ঢ়৻য়ড়ৼয়৻য়ৄ৻৸</u> ने भ्रांत ते तुयान या के या पिका गा प्यर ने पाया या पीत या ने पावीत त् प्रांत या यावदायापटाटें। १२.क्षात्रापटा ह्यायादेवे वर्षाकेट्योयाद्वी वर्षा विविधारा क्षेत्र स्रूट इसारा विदेश विविद के विश्व सिविश विविधारा है या सा र्श्वेर्यायार्थेर्धेत्। ।रेप्ट्रम्पिर्वेर्यायीयायहेषाहेत्यवेर्श्वेर नदे हे अ शु (बुग्राय वर्ष के अ श्रुव पा न म ) के अ श्रुव पा अर्द्ध मा पर

नस्रुवः सः स्रे। नङ्गयः सम्बाः हुः हुनः नः हेनः हुं नायः ग्रेवाः हुः नेयः सः न्रें अर्थेवे यान्त्र के या अर्थे वर्षे ने प्राय्येत प्या । श्रीत्र के वर्षे या यो रो अर्थः क्षरःश्वरःवरःवर्हेरःहैं। शिवाशःश्वःशवाःवे विःवे उवाःवीशःश्वेरःवःवविवः श्रिम्याम् विमानु देया पर प्रमूद पर पेर् पर साधिद है। । दे प्रविद प्रमूद ঀৗ৽ঀৢ৴৽৳য়৽য়য়ৢ৾৾য়৽য়৻ড়৾৾ঢ়য়৽য়ৼ৴য়ৢয়৽য়৽য়৽ড়ঢ়৽ড়য়৾য়৽য়৽য়৾ঢ়৽য়৾য়৽ मुन्यावरहेराधेराद्री विःचनानाईरायमाळ्यासम्बन्धाना हैंगाः अर्द्धरशः पर्दे । द्येरः दश्यः प्वेदः द्वेदः द्वायः प्यः दिनः हैं या स्वादः विदः प्रशः भे ह्यापर गुराययाय हिंदा देखा है या के या सुदाय पेंदा दे ने साम नश्चेनायम् ग्रुप्तप्त्रा श्रेनामी मञ्जूर ग्रुप्य श्रेन्य श्रादे ग्रेप्त्रमामी श्रातुश यार्विक् से ह्यायर वर्ष्यूर श्री क्षुक्ते साधिवाया क्षुक्ति व ह्यायर वर्ष्यूर है। नश्चेना'सर-द्यु:न'स'प्पेद'स'द्रा' सन्द्रन्तु:हेट्'य'र्सेन्स्यास्य से हेस र्शि।

वर्त्वेत्राधराष्ट्राच्चायात्ररात्युरार्से । स्टामी र्द्वेम् शायायात्रायात्रात्वेतः ग्वित्रायासामुनायामध्रेत्रायवे भ्रीतास्त्र मेन्यास्त्र मेन्यास्त्र मेन्यास्त्र मेन्यास्त्र मेन्यास्त्र मेन्यास् वर्चित्रामायाते मुत्रासेंदाद्या मुत्रासेंदासाधितायते सारे सामासूरासूदानित्। नश्चनःयायाने त्वायाना से तिव्याना उत्तुत्र हिन्या सूर सूर नर्दे । इसाया वार्वेदायराष्ट्रेसारेकाराष्ट्रमाष्ट्रमार्थेदायर्थे विषयाहे वर्षेवारामा हुन नर्बेट्रायदे न इता अवा कु तुरान के दान हे दान दे अर्देन शुअ दनद विवापः भेवानी वा बुदः ग्रुः अप्धेवः यः हेट् 'द्दः ह्यः हेट् 'यः श्वेवायः ययः यः देशासाधीतार्वे । नर्वेद्रस्यासदे देशासर हो दासदे मात्र किंग्रसाद । प्राप्त । ने निव्यत् संभित्रते । । न इत्यासायमा तु हुन न वनव विमास वे मान्त क्षेत्रायाः श्रीः सक्षवः हित्रत्रः स्वरायः स्वराहे। देवे श्रीत्रः स्वरायः स्वरास्वरः स्वरः नर्दा । माडेमा हेर रा बयानर त्युर धेर हो ज्या सेरा । किंसास बुदारा क्रॅ्र्न्याये अन्याधित स्वरे श्रिम् ने प्रमानिया हु मया सम्वर्ष्या <u> त्</u>चःर्ते अष्ठवः त्रुः अप्येवः प्रेवः स्वेतः स्वेतः त्रिवः त्र्यादः त्र्यादः यो अप्यः वश्चातः व्रदे विश्वार्ये वर्षा वे व्यवासे द हेश व्यव्य वे वे व्यवासे द स्वयं वर्षे । यार विया यार प्रतः हो ज्ञया धिव वि व्या हो ज्ञया से द स्मर हा स्मर हा स्मर है मुरावस्थारुद्राद्रा द्रोराद्राकेषासमुद्रायदे द्रोत्यसायसूद्रायदे *ક્ષેત્ર:*য়ঀৢ৾৾ঀ৻ৼয়য়৽৻৻৻৸৻য়ৢঢ়৻৸য়৻য়ৢয়৻য়৻য়৻ড়৻ড়৾৻৻ रादे के शावस्था वर् श्वाया वितासर त्यूर री । दे त्या वर्ष वस्था वर् 

लट. घे. चे चे. से ट. तर स्वतः चर त्यूर च रात्र त्या राज्य वितः स्वते । चे च हे<u>ि , र्यः श्रेंब्रायः लेब्राये ह</u>ि राह्म हिंगा सर्ह्या सामाय साहित् यरा केवा र्रे पिट्र या साधिव हैं। । देवे हिर्दे निविव दे सामे सामित्र हैं । मुँग्राश्राक्षायावे के शासत्रुवाया उसायश्राक्षात्राम्या नहीं दाया दा यार ही ज्ञवा से दास राज्य साम स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वा बेद्रायर्थ्यः अर्वेद्रायाङ्याय्याः वृत्याय्यः वेद्राद्वी ।देवे विद्रायादेयायाः सूर ब्रूट नर्दे । नश्चन गुःहेन्य या गुन् से दे श्वेट स्थान । सा गुन सा से दा ब्रूट न दा वर्देन । वे.चगः भेरः सरः सर्हर सः सः सः सः सः मः नरः नः नः वे ने नः ने ने न यर में शुर्श्वराश्चि । दे या इसायर हैं माया सर्हर साय दर है। इसा से दार यश्ची न्या से द्राय स्था स्था ने पालक द्राय है। न सुन च न्दामहत्रकेष्मश्राभेत्रप्राचायाचे ज्ञामेत्रप्रेचे स्राप्ते । प्रमेरावे स्र निवन्त्र स्थायान्त्र व्या स्टूरान साधित परि द्विरान सुना परा स्वापा परि यान्द्रक्षयाश्राभेदिर्द्यायाथा हो ज्ञया व्यद्भाया धेदार्दे विश्वार्थे । ।दे व्या नश्चनः परः ग्रुः नः १९८७ द्वीः नहमाश्चान्यः नश्चनः परः ग्रुः नः नहः महनः क्षेत्राश्रान्ते न्व्राया अदास्य सर्वे निष्ठी निष्ठ र्धेन्यः विवान् सेन्यः नश्चनः स्ट्रिं ।

हुँ न्या स्वर्ध स्वर्ध हैं हैं स्वर्ध स्वर्य स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्य स्वर्ध स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्

गुः अ'धेव'रा'हेट्' से'त्युच'र्चे | याट'य'र्से यात्राचिया'तु'रे अ'रा'सर्वेट'व' वे मार्वे द पासे द दे। हे सूर ह्या महिरा पाते र ह्या महिमा र्थे व द र रे द पा धेव है। रग्रायाधिव प्रदेशि र तुयायाया सैंग्राया प्रदेश विसा तुया वर्षास्यासार्वास्य स्थारा क्रीयारवाषाया हेर्या यहार वर्षेत्राचा वर्षेत्राची । व्रुषा यायार्सेग्रामाम्स्रमाग्रीःर्सेन्प्र्न्यम्यामामामामाम्यामान्यम् यव गर विग प्रिं । विश्व न श्व प्राचित्र विश्व । विर्वेत् प्राचित्र मायमायाक्षेत्रसेता निर्मुना गुःयात्रे यदि मार्के सास्र संस्था स्त्री साम्य स्त्री मार्मिना स्त्री स्त्री मार्मिना स्त्री स्त्री मार्मिना स्त्री स्त्री मार्मिना स्त्री स्त्र है। दे य गर्वे द स ग्रुव द दे त्याय व है द धेव दें। विश्व व ग्रुव ग्रुव य य ग्रुव व गहर् केंग्रा । नक्ष्रं द्वारा अर्थं र अर्थं । ग्रान्य अर्थं व्याप्त अर्थं । ग्रान्य अर्थं । धरः ग्रुः नः व्ययः ग्वितः व्यदः ग्वाहतः क्षेत्रायः ग्रीयः हेः नरः नसूतः धः देः तेः न्रीम्यायायाः सर्द्धन्यायदि । न्रीम्य स्थायानिव न्युत्री स्वाप्यम्य सुनायाः यःगान्त्रः क्षेत्रायः यदे :र्स्नेगःयः श्रेंग्यः यः यः प्यदः यः यः प्यतः विदः यदे ।ययः यर्देन् शुयायार्थे ग्रायायायायी । ग्रायाने हे से दाग्राटा हे दे क्रूरविशुर्वा के 'वेर्' प्रायाधिव हों । । वावव हे 'व्ययावव हे हुई रावर होन्ने । त्रने से ह्या परे यात्र केया या या पेत्र हो। ह्या या यो न परे हो स वन्या भी भी द्वारा में दिया प्राया या या से समा प्राया दिया है। वि या सी वर्दे या प्या नश्चन ग्रुन ग्रु सम्बद्धित । पायाने पान्त के पार्या विद्या श्री सम्प्राप्त मुना ने स्थान 

याह्रव क्षेया शक्ते : या धीव क्षेत्र वि । दे के की ह्या पा से दाय रास हिंदा वि । वि ग्रेन्यार्थितः कुरव्ययाव्य ग्रीय्य्ययात् अत्रात्री । निवेश्यात्र क्षेयायात्रेन्य <u> नुः अः शुरुषिः भी अः परः श्रेनः अः धो वः वै । । ने वेः श्री रः अः ने अः यः क्षरः । । ने वेः श्री रः अः ने अः यः क्षरः । । ने वेः श्री रः अः ने अः यः क्षरः । । ने वेः श्री रः अः ने अः यः क्षरः । । ने वेः श्री रः अः ने अः यः क्षरः । ।</u> बूट नर्दे । निष्ठ केन्य राष्ट्र केन्य राष्ट्र नाम निष्ठ न निष्ठ निष्ठ राष्ट्र ह्रेग्रायदे भ्रेम् । याग्रान स्ट्रिस् सूर सूर सूर नात्रा ग्रीय। । वस्रय उर्दर स्वर हु श्चरायाधेता । वारायाध्यायदेशश्चरा होतायाधेतादेशिकायाहेताया हे शैं ह्वा रायश्वावद्यापात्रद केंग्राश्ची रेंदि । श्वाया से राया प्राया धेवरमायासेदरम्य निष्यास्तरे द्वीरस्य गुनामा सुरस्वर स्रो नस्त्र न् यः सेन्यायन्यायेन्याञ्चायार्थेन्यायाय्यात्रायाय्यायाः यर्स्साधिताते। हे सूर्स्स्यायार्सेन्सायार्येन्सितेसळत्रेसे द्यांनसा क्षेत्रान्हेर्प्तर्देर्म् मन्द्राच्या । यात्रवाक्षेत्राक्षेत्राक्षेत्राक्षेत्राक्षेत्राक्षेत्राक्षेत्राच्या नुःन्यःनडयःमदेःन्तिःनन्ग्यःमयानृत्रःक्षेत्रयःमविःधेरःवेःक्ष्यः 5.7美子子门

याहत्र क्षेत्रा शा वित्र ह्या प्रायम ग्राप्त हैं स्वा मार्थ हैं प्रायम हैं प्रायम हैं प्रायम हैं हैं प्रायम हैं

धेव हो गरमाहव के नाय है द्वा प्यय से हिना पर्वे बेय पर देवे सुवा नश्चन गुःर्श्वे नहग्रास्य देसा । १६८ सूटा वर्दे न इत्यास वर्गा हु गुरान न्भेग्रान्यत्रावहिगायाकेन्द्रम् अत्यायायायात्विगाने सूरार्भे वर्षेग्रान्य वर्षे ह्यायायक्रीत्यरा चुःक्षे तेषाणदा सारे सायाणे वायवे चित्राचे कें साणे वा र्दे। विदेश्वरावस्यायात्रम् वृतायात्रम्यायायायात्रस्यायात्रस्यायात्रस्यायात्रस्य यः र्रोग्रायः यः प्रेंद्रायया देशादेशाया युद्राया स्रे विष्याया युद्राया स्रे धेव सदे हिर्दे | वायय व इयय य पर वहेवा स हे द र्षे द स है। देवे ह्येर्स्सारेश्वराष्ट्रराष्ट्ररावर्दे ।ह्याश्वार्याच्यास्त्रराष्ट्ररा श्वेरविवाश्वर्यः नेशायर होर्वे । वायाने वान्व केवाशा शुः श्वीं वन्वाशायर हा वदे वहारा अविष्ठिर्ने प्रति स्थित स्थेत प्रति विषय । अस्ति स्थित स नःस्रे। गहराक्षेत्रायासुःनहिन्यदेःनहत्यायावनाःहःनुन्यसःन्येग्ययाः सब्दार्श्विमाया । नश्चनः नर्हेनः देवः में सक्दर्या नरोरः दायायः हेः हियानः यश हुर न से ह्या पा धेव वा देव ही श्वारा ही हैं या न यश सा हुर न दे र्त्रेग्यार्थ्यम्यार्भ्ययार्भ्ययार्भ्यार्थ्यत्वयार्य्य्यम्ययार्भेष्ट्रात्र्येर्भ्यात्र्यार्थः नर सर्द्धर अ पर्दे | विदे दे | विद्या पानित मी न मुन मुन मुन मि । दे प्री अ श्चर्या । हियायायया वृत्यायायया श्रीत्याया से त्र्याया हितायाया यः हैयः नः यथा अः ग्रुटः नः हेट् यथा ह्वा प्रवे देव द् क्वें वर्दे वा यः प्रसः ग्रेट् यः दे त्याने सारे सारा सूरा ह्या वर्षे वासारा हो दार्री।

देशवासारेशस्त्रम्भूरायास्त्रम्भात्रायायायायायायाया विग्रायान्त्रे सालिव रायान्यान्यायान्य न्यून प्रमान्यायाया सारेया प्रमा क्रियानायमाञ्चरानाकेरायार्भेषामायारे प्रवासेराग्रहार्मेषायार्भेषामायार्भेष शेरह्मायामुन्यस्थार्शे विशःहिन्यम् होन्दी । नेप्यम्यानेस्याप्यम्यस्य धरःवर्देर्यः प्यदः । यदः प्यदः यदिशः याः यात्रवः क्षेत्राश्राः यश्रा । द्येरः वः ब्र-निव् क्षुनायायारे विवायि रात्र्यायार्वि वासी हवा पर्वे वेशायि गहरुक्षेग्रांगराधेदावेयार्थे । देवे द्वे प्रमुरासूरायावेदा । देव्याया श्रे ह्या य गुराय अर्वेट य निवेद र प्या है द य दे निव्य निवेद र य बेर्-मदे-रमे क्रूर-बूर-नर-रेग्यामदे-धेर-रे-क्रु-तु-रे-क्रूर-बूर-न-क्रे वॅरि-५, त्व्यार्गः अर्द्धरमः यर या ५व कियायः ग्री: हे यः वर्षे वर्षे ५ वेव हे ।

साधिवावायाः स्वार्थः विकान्तः स्वार्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर

रायार्श्रेग्रारायायाञ्चायम् इति । वित्रायाचिता हता हिराया वे हे सूर्याय रेयापार राष्ट्रिय के खेँ वा विवर्त खाया पर सूव के वा से ग्रवसायाधेवायवे भ्रिम्भे । यदेवावायम् र्वेवासायवेवा पुरदेसायमः र्श्वेर्प्तते भूति सार्पे सार्पा से सार्पा स्वराधित । सार्पे सार् यर्द्धरमासरम्बर्धित्व्यार्भि। दिःषदःरेग्रमासासाधिवःहे। वर्षेग्रासर्ग्यः नक्षेत्रयार्शेन्राश्वासार्थेत्रयम् सार्थेत्रयार्थेत्रया स्वास्थ्या ॻॖऀॱक़ॗॖॖॖॖॖॖॖॖॖॖॖॖॖॖॖॖॖॖॗॖॖॖॖॖॖॗज़ॖॱऄॱक़ॖऺॴॗॱॺॱऄॖज़ॱऄ॔ॗऻॗॴॿक़ॱॻॖऀॴॱ वे नश्चेग्यर ग्रुप्य अप्येव य द्रा श्रेया मेश्या बुद ग्रुः अप्येव य हेद थः र्शेयायाययाञ्चाह्यायाहेटार्टे वियायहेटायाधेवादी । यश्चेयायमाग्चायहेटा यःश्रेवाश्वास्थानुस्रासंक्षेत्रम् अप्ति । दे यादि अत्यहे यर गुःश्लेष वर्षेषा यर गुःव साधिव याया सेवासा स्वापारि वर सर्वेद नर्ने से द्यो देन ग्रम्मा सम्पर्ने लेखा हो सुमर्ने नालन ग्री हिंगा था वासादेशमान्नेदानाईदामाधेदार्दे। विदेश्यान्नेदावानुनाममानेदाना थेव या हिन हो न साथेव या निव के निवास साथेव हैं।

मी। नश्चेनायरम् मुन्यस्थित्या हिन्य श्चित्रम् मुन्यस्य विश्वास्य स्थितः है वेता ने भूषी वर्त् कुमावर्त्र योष्ठे रामा हे राष्ट्री द्वित हे वे मामी राषी वर र्वे । ने सूर हेन्य गुन्य व ने येन ने हे सूर नु यक्त गुर्येन केन हम महिन्सर्वेन्यते सेन्या सहत्त्र्यास्त्रिम्यहेन्यी प्यत्सर्भेन्य नशह्यानासाधिवार्दे। यादार्केशसञ्ज्ञानदा केशसीसञ्ज्ञानया वीशायदिवे ह्या य हिटा हे शाशु प्रदेश या सम् हो द दि लेशाय हुए हैं। ।दे वर्देरकेंशकेंशसमुद्रायायायेंद्रायाहेदाद्रेरायेदात्र देख्यदेशसम् गुनिक्षेत्रसे स्वापिक्षेत्र्रास्य स्वापिक्षेत्रस्य स्वापिक्षेत्रस्य स्वापिक्षेत्रस्य स्वापिक्षेत्रस्य स्वापिक्ष यदेन्द्रभे र्श्वे र नर्भ धेव व वे र्श्वे माह्या प्र धेव है। हैं या न यस सा हुर नवे भ्रिम् वेश्वराक्षेत्र से न्या के न्या निष्या नाय श्रास्त्र निष्या नाय श्रास्त्र निष्या नाय श्रास्त्र निष्य वयःसिवदःह्याःसः ५८। ईत्यः नः ययः हुदः नः से :ह्याःसः यः द्विवायः यादेयाः हः देशनायम्यम् निर्मे । विदेशना देशम्य म्याने साम्याने साम्याने स्वाम्य स्वाम्य स्वाम्य स्वाम्य स्वाम्य स्वाम्य स अर्द्धदश्यायायात्रवाळेयाश्यायेत्रायाकेतात्रः हेत्राय्याचेताते । ।ते या चेता डे वें मा हे न से न से हो मा बिन में न से मा बिन में न से मा बिन में मा बिन में से मा बिन में मा बिन में से मा बिन में मा बिन में से मा बिन में मा बिन में से मा बिन में से मा बिन में मा मा बिन में मा बिन मा बिन में मा मा बिन में मा बिन मा अ: श्रद्र-द्र-पात्रव : क्षेत्रायाः याद्रव : याद् वस्रभारुन्। नस्यान्यते। स्रिन्या स्राप्ति। नस्यान्यस्याने। नित्रान्ते। क्रें नशामान्व के माशा भें वर्त महित्य प्याप्य साधिव ही। देव ग्राम नेश यर ब्रेन्स हैन हैं। । ने प्याधन ब्रन्थ ब्रन्थ हैं ब्रन्स व्रेच हैं। । ने वे धेर-दे-क्रर-पर-गहरक्षेग्रास्थित है ते वितास पीत विद-द्रिया रा

ग्वित या वे से ह्या राया या हवा के या शार्य दाया धेवा वे विवास स ने न्या मी अ न श्रुन ग्रुग्य या से न प्यस्य ग्रुम या न्य के या अ से न प्या प्यस्य ग्री ग्राम् विग्रासेन् ग्राम् ने देवे ग्राप्त्र के ग्रायम् माने साधित हैं। । ने स्वाप्त के नेवे त्यव न् त्युर में । ने त्थ्र या धेव व वे से वाया श्वर वा हिन सर वशुरार्से । विदेशायाणराष्ट्रियाग्रेनायाणेवायवे भ्रियावाद्वराष्ट्रियायाग्रेवाया वेंगानी क्रेंन्य अप्पेन हैं। । वे कें अअकुर अपर पर पान्न केंग्य ही न हे व्ययानी प्रवित्त हो। यदे स्वर न सूर्य प्रयः हा य दि । यदे । स्वर न सूर्य । यदे । स्वर स्वर हो । यदे । स्वर स्वर स्वर हो । यदे । स्वर स्वर हो । स्वर स्वर हो । यदे । स्वर स्वर हो । नित्रारायितर्ते। । न्यानउदानः ध्रेतर्वे ग्येनामी या ग्राम्यमेन प्रमा न्हें न्या श्रीत के खें वा तु नित्रवाश मित्र श्रीत विस्ता के न र् वयानरावगुरार्रे । सान्हेरायासङ्स्यायापरामान्द्रकेषायाधिदार्छे। वैवा हु नहें द सामाधिव है। सर्से या में मायदे वा नव के वा मारा हु मा यने साधिवानी। सूरावसानहिंदायाधिदायदे विसानहिंदादी। विहिदायदे कें तथ्यर भूते भे ह्या महेर में या सामाधित है। विया मते भ्री स्वार्थ नु अद्धर्यायाया प्रवाहित के प्रयाश होता है। वे प्राप्ती के त्र प्राप्त हिंदा या या ये त है। देव ग्राम के मानव भी विम्य सुरद् याम है म भी भिन्य से सी देवे भ्रेत्र भ्रमामार्केन ने नमामान्य के मार्थ भ्रमें वर्ष मार्थन न्या सर्वेद दें। | थर द्वा या साथिव या वे प्रवा निर्मा विकास के स्वा के स्वा विकास के स्व विकास के स्वा विकास के स्व विकास के

सर्द्ध्रस्यायाः स्वायाः वर्षे । दे त्याचे विवा वया वर त्युराया सर्द्ध्रसाया वे प्यट्रिया या या या स्था या द्यो श्री स्ट्रेन श्री या प्रवास स्था स्ट्रेन लट्यस्य त्राचार्यात्राचार्यात्राच्यात् नशःग्राम्याद्वितः स्वर्धाते। स्रायाद्विमः स्वर्धितः स्वर्धितः स्वर्धितः स्वर्धितः स्वर्धितः स्वर्धितः स्वर्धितः <u> ५८.त्याय.य.केट.ट्र.</u>.बुश.चुश.दश.श्री । १८.यबुव.ट्.ट्र्य.क्रीश.म्.य. यर्द्ध्दर्भाराःष्यदःद्वः । हिःक्ष्र्रः वश्चवः ग्रुः सेदःसः यः यः द्रियाशः स्थाः सेदःसरः नुभेग्रामः र्वेनः मः प्यान्यामः सः प्रेनः में निवान्तः वयायायायायाद्या वियायायादी साङ्ग्रेशायाद्याह्मायास्या र्शेग्रायाम्यो । ने त्यान्याम्यो धिरास्य त्यासी यात्रे स्व हिन से ने त्याने दे धिरा ने सुन्तु त्याय न हेन्ने । होन्य पर्य हेन स्वाय देव हेना स्वाय न पर्य । वेशःह्याः प्रःहेदः धेवः हे व्येषाः हु स्रोदः ग्राहः है विश्वः श्रुश्यः वश्यो । ह्याः प्रः अर्द्धरश्रायाप्यराहे सूराविषायायाविषात् । श्री वा के विषा कु से पारा से हिंदा ब्रेव के वें वा न्दर पद न्वा संस्था पेव संप्यद ने भूर ह्वा संक्रेट पेव के नेवे भ्रिम्भूमाम् वेन इसस्य स्था भ्रित्र के वे मान्य प्यान्य प्यान्य स्थान स्थान विषयानिक्ष्यान क्ष्मामार्डेन सम्भागी सक्त हेन त्यम् । न्यायन नेया सम्बर्धिन लर्। निश्चार्यस्यारायह्यायरलर्। व्रियाय्रिर्यावदायारेवे

ते नित्र हो ने प्या नित्र निष्य नित्र निष्य के नित्र नित्र के नित्र निष्य के नित्र के नित्र

मर्ज्ञिनायम् ग्रानित देव द्वा प्राप्त स्था । विदे त्य अपि प्रिक्त प्राप्त प्रिक्त प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त

स्त्। ॥ व्य-स्थान्यस्य प्रमान्यस्य स्वानिह्ना स्वानिह्ना स्वानिहास्य स्वानिहास्य स्वानिहास्य स्वानिहास्य स्वानिहास्य स्व

ळ्ट्रायागुद्राययान्त्र्यायदे प्रयोगायाः हेंद्रायाया केदारीं विदातुः स

नदे त्रुग्रारास्त्र नः र्ह्मेन नर्से दर्शिग्रारा में मारासे रास्त्र साम्यारा से प्रा

भेगार्ते र प्राप्त कर खूना भेरि के प्रचेत्य न नावर व प्राप्त के प्रचित्र कर कि मार्थ के प्रचेत्र कर कि प्रचेत्